

साहित्यिक उर्दू गद्य संचयन

साहित्यिक उर्दू गद्य संचयन

हिन्दी अनुवाद
(रीडिंग्ज़ इन लिट्रैरी उर्दू प्रोज़)

गोपी चंद नारंग



कौमी काउन्सिल बराए फ़रोग-ए-उर्दू ज़बान, नई दिल्ली
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, भारत सरकार
पश्चिम खंड-1, विंग-6, रा.कृ.पुरम, नई दिल्ली-110066

© गोपी चंद नारंग

साहित्यिक उर्दू गद्य संचयन

गोपी चंद नारंग

प्रथम संस्करण : मई 2005 (1000 प्रतियाँ)

मूल्य : रु. 90.00

प्रकाशन क्रमांक : 1218

ISBN : 81-7587-087-7

मूल अंग्रेजी पुस्तक से अनुवाद :

जानकी प्रसाद शर्मा

खुशींद आलम

ले-आउट एवं कम्पोजिंग : मोहम्मद मृसा रज़ा

मुद्रण : नागरी प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली-32

कौमी काउन्सिल वराए फ़रोग-ए-उर्दू ज़वान

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, भारत सरकार

पश्चिम खंड-1, विंग-6, रा.कृ.पुग्म, नई दिल्ली-110066

मेरे बेटों
अरुण और तरुण के नाम
जिन्होंने इस रीडर से उर्दू सीखी

प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के माध्यमिक एवं उच्चतर शिक्षा विभाग के अधीन एक स्वायत्त संगठन के रूप में 'नेशनल काउंसिल फॉर प्रमोशन ऑफ उर्दू लैंग्वेज' (एन सी पी यू एल) का गठन उर्दू भाषा के उन्नयन, विकास एवं प्रचार के उद्देश्य से किया गया है। अपने इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए काउंसिल ने दूर-शिक्षा के माध्यम से उर्दू सीखने के डिप्लोमा कोर्स की शुरुआत की। पाठ्य- सामग्री का विशेष रूप से चयन विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थाओं के विशेषज्ञों एवं काउंसिल के अपने विशेषज्ञों के द्वारा किया गया है।

मैं प्रो. गोपीचंद नारंग के प्रति हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने अपनी प्रसिद्ध एंथॉलॉजी 'उर्दू: रीडिंग्ज़ इन लिटरेरी उर्दू प्रोज़' के भारतीय संस्करण को 'नेशनल काउंसिल फॉर प्रमोशन ऑफ उर्दू लैंग्वेज' की ओर से प्रकाशित किये जाने की अनुमति दी; मूलतः जिसका प्रकाशन यूनिवर्सिटी ऑफ विस्कॉसिन प्रेस, मेडिसन और लंदन की ओर से 1968 ई. हुआ था और बाद में जो माइक्रोफ़ीश पर उपलब्ध कराई गई। इन तकरीबन चालीस वर्षों के दौरान इस एंथॉलॉजी का दुनिया के दूर-दूर के हिस्सों जैसे अमेरिका, जापान, नार्वे और तुर्की में व्यापक उपयोग किया गया। समय की कसौटी पर परखी गई इस रीडर का भारतीय संस्करण एक स्वाध्याय सामग्री के रूप में उन विद्यार्थियों को बहुत मूल्यवान साबित होगा, जो अपने उर्दू के ज्ञान को बढ़ाना चाहते हैं।

मुझे आशा है, प्रस्तुत संस्करण उन विद्यार्थियों को बहुत रुचिकर प्रतीत होगा, जिन्हें उर्दू का प्रारंभिक ज्ञान है, और जो साहित्यिक उर्दू गद्य के कुछ बेहतरीन नमूनों को पढ़कर आनंदित होना चाहते हैं।

डॉ. एम. हमीदुल्लाह भट

निदेशक

भूमिका

इस वक्त उर्दू भाषा के शिक्षण के लिए उपलब्ध सामग्री या तो प्रारंभिक कोटि की है या अग्रवर्ती कोटि की। इस रीडर का प्राथमिक उद्देश्य इन दोनों के बीच सेतु बनाने और उन विद्यार्थियों को माध्यमिक सामग्री उपलब्ध कराने का है जो प्रारंभिक अवस्था के बाद अपने शब्दज्ञान और भाषा-सामर्थ्य को बढ़ाने के इच्छुक हैं। इसका गौण उद्देश्य भाषा-शिक्षण को संस्कृति एवं साहित्यिक परम्परा की उन विशिष्टताओं के साथ जोड़ना है जो उर्दू से खास संगति रखती हैं। इस चयन में विषयों और शैलियों का एक व्यापक रेंज है जिसमें लोककथा, उपन्यास, कहानी, साहित्यिक एवं मनोविनोदपूर्ण निबंध, जीवनी, पत्र, ऐतिहासिक एवं जीवनीपरक लेखन और इनके साथ-साथ संसदीय अभिभाषण और बहसें शामिल हैं। क्लासिकी और आधुनिक लेखक, जिनमें से अधिकांश बीसवीं शताब्दी के हैं, इसमें संकलित हैं।

चयनित पाठों को भाषा और शैली की उत्तरोत्तर बढ़ते हुए क्रम में संजोया गया है। अतएव यह हिदायत दी जाती है कि पाठों को उसी क्रम में पढ़ा जाये, जैसे वे विषय-सूची में क्रमबद्ध हैं। विद्यार्थियों को कालक्रमानुसार संयोजित एक अतिरिक्त विषय-सूची भी उपलब्ध करायी गयी है, जिससे कि वे लेखक को सही ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में रख कर देख सकें। इससे आगे, विद्यार्थी की सहायता के लिए प्रत्येक लेखक और संकलित रचना पर एक संक्षिप्त टिप्पणी दी गयी है। जहाँ ऐसा लगा है कि संकलित रचनाएं यथावत् समग्र रूप में देने पर माध्यमिक विद्यार्थियों की क्षमताओं से बाहर जा रही हैं, वहाँ कम प्रचलित शब्दों और अभिव्यक्तियों के स्थान पर अपेक्षाकृत अधिक प्रचलित शब्दों और अभिव्यक्तियों का व्यवहार किया गया है। वस्तुतः इस बात का ध्यान रखा गया है कि इन परिवर्तनों से रचनाओं का मूल अभिप्राय और लेखक की शैली न बदल जायें।

अधिकांश उर्दू शिक्षण-सामग्री के विपरीत इस रीडर में शब्दार्थों को क्रमवार दिया गया है। ये शब्दार्थ उर्दू पाठ के सामने वाले पृष्ठ पर नम्बरवार दिए गए हैं और पाठ के वाचन-क्रम में विद्यार्थी मुश्किल शब्दों के अर्थ उसी

क्रम में देख सकता है। जिस शब्द या पद का अर्थ एक बार दे दिया गया है, उसकी पुनरावृत्ति नहीं की गयी है। साधारण शब्दों और सामान्यतया प्रारंभिक पाठ्यसामग्रियों में व्यवहृत शब्दों को यहाँ शामिल नहीं किया गया है। विशिष्ट व्याकरणिक लक्षणों, भाषायी भिन्नताओं, मुहावरों, शैलीगत संरचनाओं पर व्याख्यात्मक टिप्पणियाँ दी गयी हैं और ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सूचनाएं शब्दार्थ पृष्ठों पर क्रमवार रूप से अंकित हैं और मूल पाठ में यथास्थान क्रम संख्या डाल दी गयी है। हालांकि क्रमवार शब्दार्थ देने का उद्देश्य विद्यार्थी को 'शब्दकोश' देखने की मशक्कत से राहत दिलाना है, लेकिन विद्यार्थी को इस पर अतिशय निर्भर नहीं रहना चाहिए। एक अच्छा शब्दकोश तो हर विद्यार्थी के पास रहना ही चाहिए। विस्तृत शब्दार्थ सूची इसलिए नहीं दी गई कि उम्मीद ये 'शब्दकोश' का एक दरिद्र स्थानापन्न होती।

पहली दो इकाइयों में भारतीय और मध्यपूर्व के लोकसाहित्य से रूपांतर शामिल हैं, जैसे 'पंचतंत्र', 'जातक', 'मस्नवी-ए-रूमी', 'गुलिस्तान-ए-सादी' और 'द अरेबियन नाइट्स'। ये इस रीडर के संग्रहकर्ता द्वारा स्पष्ट और सरल शैली में इस दृष्टि से लिखे गये हैं कि विद्यार्थी उर्दू के प्रारंभिक ज्ञान से माध्यमिक पाठ्य-सामग्री की ओर आसानी से बढ़ सके। सर सैयद अहमद खाँ और प्रेमचंद पर सरल शैली में निबंध विशेष रूप से इस संचयन के लिए लिखे गये हैं।

यह रीडर नियमित एक वर्षीय पाठ्यचर्या के लिए है: लेखन के लिए कुछ अतिरिक्त समय के साथ लगभग तीन कक्षा के घंटे प्रति सप्ताह। द्वितीय वर्ष की पाठ्यचर्या में भी इसका उपयोग किया जा सकता है, जहाँ विद्यार्थी उर्दू हिज्जे जानने लगते हैं और वर्तमान में उपलब्ध परिचयात्मक या प्रारंभिक सामग्री के ज़रिए उर्दू का ज्ञान प्राप्त कर चुके होते हैं। परिणामस्वरूप यह संचयन उन्हें ज्यादा परिनिष्ठित उर्दू गद्य या उन उर्दू पाठमालाओं की ओर प्रवृत्त करेगा जिनमें अर्धव्यक्त गद्य रचनाएं अपने मूल रूप में प्रस्तुत की गयी हैं।

यह नस्तालीक़ सुलेख में अमेरिका से प्रकाशित पहला उर्दू रीडर है। उर्दू की छपाई प्रायः नस्तालीक़ में ही होती है। इसकी किताबत इस कला में निपुण श्रेष्ठतम लोगों में से एक ने दिल्ली में की है। अग्रणी उर्दू विद्वानों द्वारा समर्थित और अनुशंसित वर्तनी की परम्पराओं का इसमें पालन किया गया है। आगे के पृष्ठों में उर्दू वर्तनी पर एक व्याख्यात्मक टिप्पणी भी दी गयी है।

निष्कर्षतः मैं उन सभी मित्रों और सहकर्मियों का धन्यवाद करता हूँ,

जिन्होंने इस रीडर को वर्तमान स्वरूप में लाने में मेरी किसी न किसी रूप में सहायता की। विस्कांसिन विश्वविद्यालय में प्रो. रिचर्ड एच. रॉबिंसन का सहकर्मि होना मेरे लिए सौभाग्य की बात है जिनके सुझावों से चयन करने और शब्दार्थ सूची तैयार करने में मुझे विशेष सहायता मिली। विस्कांसिन विश्वविद्यालय के भारतीय अध्ययन विभाग के अध्यक्ष प्रो. हेनरी सी. हार्ट बड़ी रुचि के साथ इस रीडर के काम को प्रेरित करते रहे। मैं विस्कांसिन विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र एवं भारतीय अध्ययन विभाग के प्रोफेसर जोसेफ डब्ल्यू. एल्डर, कार्नेल विश्वविद्यालय के आधुनिक भाषाविभाग के प्रोफेसर चेराल्ड कैली के साथ-साथ दिल्ली विश्वविद्यालय में उर्दू के प्रोफेसर ख्वाजा अहमद फारूकी का कृतज्ञ हूँ जिन्होंने मुझे विस्कांसिन के विद्यार्थियों के साथ काम करने का सुअवसर दिया, पहले दिल्ली में और फिर बाद में विस्कांसिन में, जिससे कि मैं एक विदेशी भाषा के रूप में उर्दू शिक्षण एवं पठन-पाठन की कठिनाइयों से अवगत हो सका। मेकगिल विश्वविद्यालय के इस्लामिक अध्ययन संस्थान के डॉ. एम.ए.आर. वार्कर, बर्कले कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के डॉ. ब्रूस आर. प्रे. और मिशीगन विश्वविद्यालय के डा. जोसफ ए. गेफ ने विदेशी विद्यार्थियों को पेश आने वाली कठिनाइयों का मुझ तक पहुँचाया और कई बिंदुओं पर मूल्यवान सुझाव दिये। चयन करने में मुझे कई मित्रों के सहकार और सुझावों का लाभ मिला है जिनमें डॉ. निसार अहमद फारूकी और डॉ. एच.सी. नैयर के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। मैं श्री मालिक राम के सहयोग को भी स्वीकार करना चाहूँगा जिन्होंने वर्तनी में प्रयुक्त परम्पराओं को सूत्रबद्ध करने में मेरा हाथ बँटाया। अतीक अहमद सिद्दीकी ने मूल पाठों को नक़ल करने और शब्दार्थ सूची तैयार करने में मुझे सहयोग दिया।

उन लेखकों के प्रति आभार ज्ञापन भी मेरा कर्तव्य बनता है जिनकी रचनाएं या गद्यांश यहां संकलित हैं। इनमें से विशेष हैं— भारत के राष्ट्रपति डॉ. ज़ाकिर हुसैन, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली के डॉ. आबिद हुसैन, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रो. रशीद अहमद सिद्दीकी और प्रो. आले अहमद सुरूर और इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो. एहतिशाम हुसैन।

मैं मिसेज़ डोरेता हाइलेण्डर का मूल अंग्रेज़ी पाण्डुलिपि तैयार करने व अनर्गिनत रूपों में गरिमापूर्ण सहयोग देने हेतु हृदय से ऋणी हूँ।

मैं यहाँ बड़ी प्रसन्नता और कृतज्ञता के साथ विस्कांसिन विश्वविद्यालय के अपने विद्यार्थियों के योगदान को स्वीकार करता हूँ जिन्होंने इस सामग्री में

से कुछ के कक्षा-परीक्षण कार्य में मन से भागीदारी की और कई मुआमलों में उन्होंने जितना स्वयं सीखा, शायद उससे ज्यादा मुझे सिखाया।

अंत में, डॉ. रिप्ले मूर प्रमुख आभार के पात्र हैं जिन्होंने शब्दार्थ सूची तैयार करने में अधिकांश समय मेरे साथ कार्य किया। मसूरी, उत्तरप्रदेश में एक पहाड़ी आग से जूझते हुए 25 मई, 1966 को अचानक उनकी मृत्यु हो गई। वे बहुत दयालु, कर्तव्यनिष्ठ एवं उदार व्यक्ति थे, जो उन्हें जानते हैं वे सब उनके अभाव को महसूस करते हैं। उनका देहावसान तब हुआ जब वे अपने जीवन और कृतित्व के शिखर पर थे, और अब यह है कि पर्दा गिर चुका है, हिमालय की हिमाच्छादित चोटियों को अनदेखा करते हुए, ख्यात हिंदी वैयाकरण एस.एच. केलौग से सिर्फ थोड़ी दूरी पर, जैसा कि पोप ने कहा था, 'थके होने तक, वे सोये हुए हैं।' केलौग की मृत्यु भी दुर्घटनावश मसूरी में ही हुई थी।

गोपी चंद नारंग

नई दिल्ली

20 फरवरी, 1968

भारतीय संस्करण

यह भारतीय संस्करण 'नेशनल काउंसिल फॉर प्रोमोशन ऑफ उर्दू लैंग्वेज' द्वारा अपने स्वाध्याय कार्यक्रम के लिए मुद्रित किया गया है। मैं काउंसिल के निदेशक डॉ. मुहम्मद हमीदुल्लाह भट्ट का इस रीडर में दिलचस्पी के लिए आभारी हूँ। साथ में डॉ. रूप कृष्ण भट्ट का भी शुक्रगुजार हूँ कि उनके अनुरोध पर कि हिन्दी पाठकों में इसकी बहुत मांग है, यह हिन्दी रूप तैयार हो सका। उनके और निदेशक के मशिवरों से भी इस काम में मदद मिली है। आशा है कि ये संस्करण हिन्दी विद्यार्थियों की ज़रूरत को पूरा करेगा।

गोपी चंद नारंग

नई दिल्ली

11 फरवरी 2005

विषय-सूची

	उर्दू वर्तनी-व्यवस्था		17
I	चंद पुरानी कहानियाँ چند پرانی کہانیاں	'गोपी चंद नारंग	21
II	अरेवियन नाइट्स الف لیلة	गोपी चंद नारंग	58
III	सच्ची मुहब्बत حقیقی محبت	ज़ाकिर हुसैन	84
IV	प्रेमचंद پریم چند	कमर रईस	99
V	गोदान گودان	प्रेमचंद	119
VI	उमराव जान अदा امراؤ جان ادا	मिर्जा मुहम्मद हादी रुस्वा	153
VII	सर सैयद अहमद खाँ سر سید احمد خاں	सैयद एहतिशाम हुसैन	184
VIII	मीना बाज़ार مینا بازار	मुहम्मद हुसैन आज़ाद	203

IX	लोक सभा में मौलाना आज़ाद का बयान لوک سجا میں مولانا آزاد کا بیان	अबुल कलाम आज़ाद	219
X	नामदेव माली نام دیو مالی	मौलवी अब्दुल हक़	234
XI	दो फ़र्लांग लम्बी सड़क دو فرلانگ لمبی سڑک	कृशन चंदर	246
XII	ब्रह्मचर्य برہمچریہ	महात्मा गांधी (सैयद आबिद हुसैन द्वारा अनूदित)	272
XIII	चारपाई چارپائی	रशीद अहमद सिद्दीकी	288
XIV	जवाहर लाल नेहरू جواہر لال نہرو	आले अहमद सुरूर	306
XV	मिर्जा ग़ालिब مرزا غالب	अल्लाफ़ हुसैन हाली	324
XVI	बाग़ो-बहार باغ و بہار	मीर अम्मन देहलवी	351

विषय-सूची

कालक्रमानुसार

(लेखकों के जन्म-वर्ष पर आधारित)

मीर अम्मन देहलवी	बागो-वहार	XVI
अल्लाफ़ हुसैन हाली	मिर्ज़ा ग़ालिव	XV
मुहम्मद हुसैन आज़ाद	मीना बाज़ार	VIII
मिर्ज़ा मुहम्मद हादी रुस्वा	उमराव जान अदा	VI
प्रेमचंद	गोदान	V
अबुल कलाम आज़ाद	लोकसभा में मौलाना आज़ाद का बयान	IX
मौलवी अब्दुल हक़	नामदेव माली	X
महात्मा गांधी (सैयद आबिद हुसैन द्वारा अनूदित)	ब्रह्मचर्य	XII
रशीद अहमद सिद्दीकी	चारपाई	XIII
ज़ाकिर हुसैन	सच्ची मुहब्बत	III
आले अहमद 'सुरूर'	जवाहर लाल नेहरू	XIV
सैयद एहतिशाम हुसैन	सर सैयद अहमद खाँ	VII
कृशन चंदर	दो फ़र्लांग लम्बी सड़क	XI
गोपी चंद नारंग	चंद पुरानी कहानियाँ	I
गोपी चंद नारंग	अरेबियन नाइट्स	II
कमर रईस	प्रेमचंद	IV

किताब में प्रयुक्त संक्षिप्त रूप

अ.क्रि.	अकर्मक क्रिया
आलंका.	आलंकारिक
उदा.	उदाहरण
उप. या प्रत्य.	उपसर्ग या प्रत्यय
एक.	एकवचन
का.वा.	कारण वाचक
क्रि.	क्रिया
क्रि.विशे.	क्रिया विशेषण
क्रि.सं.	क्रियार्थक संज्ञा
कृद.	कृदन्त
दो.	दोहरा
पर.	परसर्ग
पु.	पुलिंग
पुरुषो.	पुरुषोचित
पूर्व.	पूर्वसर्ग
प्रत्य.	प्रत्यक्ष
बहु.	बहुवचन
भू.	भूत
वर्त.	वर्तमान
विका.	विकारी
विशे.	विशेषण
विस्मया.	विस्मयादी बोधक
व्य.सं.	व्यक्तिवाचक संज्ञा
शा.	शाब्दिक
स.क्रि.	सकर्मक क्रिया
सं.	संज्ञा
सर्व.	सर्वनाम
सह.	सहयोजन
स्त्रियो.	स्त्रियोचित
स्त्री.	स्त्रीलिंग

उर्दू वर्तनी-व्यवस्था

0. उर्दू भाषा के लिए कुछ परिवर्तनों के साथ अरबी-फ़ारसी लिपि का व्यवहार किया जाता है। इसकी कई लेखन-शैलियाँ हैं लेकिन आमतौर पर 'नस्ख' और 'नस्तालीक़' को व्यवहार में लाया जाता है। क्योंकि 'नस्तालीक़' देखने में ज़्यादा मनोहर लगती है और कम्प्यूटर व ऑफ़सेट छपाई के अनुकूल है, इसलिए यह नस्ख की अपेक्षा ज़्यादा व्यापक रूप से व्यवहृत है। प्रस्तुत चयन की पाठ्य-सामग्री की किताबत भी नस्तालीक़ में की गयी है। जहाँ तक संभव हो सका है, किताबत को स्वच्छ बनाने का पूरा प्रयास किया है। उर्दू लिपि की स्पष्टता और सातत्य को ज़्यादा बनाये रखने के लिए यहाँ कुछ ऐसे रूपांतरों और परिवर्तनों को समाविष्ट कर लिया गया है जो उर्दू लिपि के मानकीकरण का मूल आधार रहे हैं और जिनको स्वयं मैंने 'इमला नामा' में सूचिवद्ध किया है (ये पुस्तक NCPUL से छपी हुई मौजूद है)। वर्तनी-व्यवस्था में व्यवहृत ये तथा अन्य रीतियाँ निम्न प्रकार हैं :

1. इस संचयन के लिए ध्वनिसूचक चिन्हों को अनिवार्य समझा गया है। उमूमन उर्दू लिपि में इनका प्रयोग नहीं होता क्योंकि यह एक अनुस्मारक लिपि (reminder script) है लेकिन संपादक ने अपने अनुभव के आधार पर यह महसूस किया कि प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शुद्ध उच्चारण की आधिकारिक समझ पैदा करने के लिए कुछ निश्चित चिन्हों का चुनिंदा प्रयोग करना ज़रूरी है। अतएव पाठ में पहली बार आये हुए प्रत्येक नये शब्द को, उसके उच्चारण की जटिलता को देखते हुए, विशेष ध्वनिसूचक चिन्हों के साथ लिखा गया है। जब ये शब्द बाद में आये हैं और विद्यार्थी इन्हें सीख गया है, तब इन्हें बिना किसी चिन्ह के लिखा गया है। जिन शब्दों का एक ही उच्चारण संभव है और जो आरंभिक पाठ्य-सामग्री में अक्सर प्रयुक्त होते रहे हैं, वे शब्द किसी चिन्ह के बग़ैर यहाँ दिये गए हैं।

1.1. यहाँ प्रयोग में लाये गये 'इ' के लिए 'ज़ेर', 'उ' के लिए 'पेश', द्वित्व के लिए 'तशदीद' और कुछ विशेष चिन्हों की व्याख्या आगे की जायेगी; प्रायः 'अ' की ध्वनि के लिए 'ज़बर' के चिन्ह को छोड़ दिया गया है क्योंकि

यह सब के लिए बहुत सामान्य और सुपरिचित है। इस छोड़ दिये गये चिन्ह का अनुमान विद्यार्थी स्वयं कर लेगा, जैसे- غربت، تقریر، برس। पहले शब्द में 'बे', दूसरे शब्द में 'ते' और तीसरे शब्द में 'रे' पर चिन्ह की अनुपस्थिति का आशय यह है कि इन्हें 'ज़बर' के साथ पढ़ा जाना है, जैसे गुर्वत, और 'बरस'। दूसरे शब्द को 'तक़रीर' भी पढ़ा जा सकता है, यहाँ 'क' में 'अ' की ध्वनि आ जाती है, शुद्ध उच्चारण 'तक़ीर' ही है, उच्चारण की इन वारीकियों के लिए उर्दू पाठ के सामने दी गयी शब्दार्थ सूची की सहायता ली जानी चाहिए।

1.2. 'वाव' यदि 'औ' की ध्वनि के लिए आया है तो 'ज़बर' (جُور)، 'ऊ' की ध्वनि के लिए आया है तो 'उल्टा पेश' (مُشهور، ضروری) के चिन्ह का प्रयोग किया गया है और 'ओ' के स्वर को अचिन्हित छोड़ दिया गया है। ह्रस्व 'उ' के लिए 'वाव' का प्रयोग विरल रूप से हुआ है, जैसे- سوراخ، بوع، وکان। अतः इसे भी अचिन्हित रहने दिया गया है।

1.3. शब्द के मध्य में उर्दू वर्ण 'ये' की स्थिति से उत्पन्न होने वाले भ्रम को दो नुक्तों के नीचे छोटी 'खड़ी लकीर' खींच कर दूर कर दिया गया है। ऐसा वीच में बड़ी 'ई' की ध्वनि के लिए 'ये' का प्रयोग होने पर किया गया है, जैसे- تکلیف، نزدیک; और 'ऐ' के लिए आने वाले 'ये' के ऊपर 'ज़बर' लगाया गया है, जैसे- سیر، قید (सिर, कैद)।

2. शब्द के मध्य में अर्द्ध स्वर के रूप में जहाँ 'वाव' और 'ये' वर्ण आये हैं, उन्हें अचिन्हित छोड़ दिया गया है। लेकिन ये केवल शब्द की एक उच्चारण इकाई (सिलेबल) के शुरू में ही आ सकते हैं, अतएव थोड़े अभ्यास के बाद पाठक इन्हें आसानी से पहचान सकता है।

3. 'वाव' मादूला अर्थात् फ़ारसी ढंग पर 'ख़' के बाद आने वाले अनुच्चरित 'वाव' को इसके नीचे पड़ी लकीर (डैश) डालकर दर्शाया गया है, जैसे- خور، خواب، خوش، خواہش، خواہ (ख़ुद, ख़ुश, ख़्वाहिश, ख़्वाब)।

4. 'हम्ज़ा' का प्रयोग अक्सर संयोजक स्वर के रूप में किया जाता है। जिन आज्ञामूचक धातु रूपों का अंत व्यंजन के साथ होता है, उन्हें 'ये' के साथ लिखा गया है, जैसे- دیکھیے، چاہیے، اٹھیے (उठिए, चाहिए, देखिए); लेकिन जहाँ धातु रूप का अंत स्वर के साथ होता है, उसे 'हम्ज़ा' और 'ये' दोनों के साथ लिखा गया है, जैसे- گھرائیے، فرمائیے (जाइए, फ़र्माइए, घबराइए)।

'हम्ज़ा' का इज़ाफ़त (समास) के लिए भी प्रयोग किया जाता है, जहाँ

समास के पहले शब्द के अंत में एक अल्प केंद्रीय स्वर ध्वनि के रूप 'ह' (अर्थात् विसर्ग) आता है, जैसे *خانه خدا* (जज़्ब:-ए-दिल, खान:-ए-खुदा)। लेकिन उन सामासिक पदों में जहाँ पहला शब्द 'अलिफ़' या 'वाव' पर समाप्त होता है, तब इज़ाफ़त को 'ये' द्वारा संकेतित किया गया है, जैसे *مدائے دل، اردوئے معلیٰ* (सदा-ए-दिल, उर्दू-ए-मुअल्ला)। दूसरी तमाम हालतों में इज़ाफ़त को 'ज़ेर' से दर्शाया गया है, जैसे- *رعنائی خیال، والی سیاست*, *دل درمند، ماونو، درد دل* (रानाए- खयाल, वाली-ए-रियासत, दिल-ए-दर्दमंद, माह-ए-नो, दर्द-ए-दिल)। उपर्युक्त उदाहरणों में उर्दू में इज़ाफ़त को संकेतित करने की सभी शुद्ध रीतियों का समावेश हो जाता है।

5. यहाँ 'नून' और 'नून गुन्ना' के अंतर को भी निभाया गया है, जो कि 'नस्ख' में संभव नहीं है। अंतिम 'नून गुन्ना' को बिंदु की अनुपस्थिति और मध्यवर्ती 'नून गुन्ना' को अर्द्ध चंद्र के चिन्ह द्वारा दर्शाया गया है, जैसे- *پاؤں، چاندنی، سانپ، پانچ* (पाँच, चाँदनी, सूँघना, साँप, पहुँच)।

उर्दू वर्तनी-व्यवस्था में 'पाँव' शब्द के तीन रूप मिलते हैं— *پاؤں، پاؤں* और *پاؤں*; यहाँ हमने अंतिम रूप का प्रयोग किया है, प्रायः सबके लिए यह सामान्य है। यही बात 'गाँव' *گاؤں* शब्द को लेकर भी है।

6. 'दो चश्मी हे' महाप्राण व्यंजन को संकेतित करती है। यह उन शब्दों में भी व्यवहृत होती है जहाँ 'म्ह' और 'न्ह' का उच्चारण एकल महाप्राण व्यंजन के रूप में होता है, जैसे— *تمہارا، تمہیں، انہیں، انھوں، ننھا* (तुम्हारा, तुम्हें, उन्हें, उन्होंने, नन्हा)।

7. 'ह' (अर्थात् विसर्ग से मिलती-जुलती ध्वनि) के साथ समाप्त होने वाले 'बहना', 'कहना' क्रिया-रूपों को इस प्रकार लिखा गया है — *بہنا، کہنا* (बहना, कहना), ताकि इन्हें अव्यय *ہ* (ब) और संयोजक *کہ* (कि) से क्रमशः अलगाया जा सके।

8. जब किसी शब्द के स्वायत्त अंत में 'हाए-मुख्तफी' या हाए-हवज़ आता है जिसका उच्चारण अक्सर 'आ' की भाँति होता है, और उसके बाद कोई विभक्ति सूचक शब्द जुड़ा है तो ऐसे शब्द में 'हाए-मुख्तफी' का उच्चारण 'आ' की बजाय 'ए' स्वर की भाँति किया जाता है। प्रस्तुत रीडर में इस 'हाए' के स्थान पर उर्दू वर्ण 'ये' का प्रयोग किया गया है, जैसे- *غئے میں، جذبے سے*, *معاہدے کی* (गुस्से में, जज़्बे से, मुआहिदे की)। इस प्रकार यहाँ मानक उर्दू के

बोले जाने वाले रूप का अनुसरण किया गया है।

9. 'जज़्म' (व्यंजन समूह का चिन्ह) को उर्दू में आम तौर पर दो तरह से लिखा जाता है— ~ और ~। यहाँ दूसरे रूप का व्यवहार किया गया है।

10. उर्दू में डैश (-) का प्रयोग पूर्ण विराम के रूप में किया जाता है। अर्द्ध विराम के लिए एकल उद्धरण चिन्ह ('), अपूर्ण विराम (कॉलन) के लिए अपूर्ण विराम (:) और निरंतर सामग्री में मौजूद कथन के लिए दोहरे उद्धरण चिन्हों का प्रयोग किया गया है। वाचन में विद्यार्थी की सहायता के लिए 'और' शब्द के साथ बनाये गये लम्बे वाक्यों में 'और' तथा आगे आने वाले शब्द के बीच कुछ जगह छोड़ी गयी है।

11. दो शब्दों को जोड़ने के भ्रमित तरीके जैसे— بولکر، کروٹا، جائیگے (बोलकर, कलूंगा, जायेंगे) से यहाँ पूर्णतः बचाव किया गया है।

12. उर्दू में वर्ष को 'सन:' शब्द द्वारा संकेतित किया जाता है, जो कि संख्या के नीचे इस प्रकार रखा जाता है— 1966 (1966 ईसवी)। ऐसे प्रयोगों में, व्यावहारिक रूप से 'सन:' में नून का नुक्तः नहीं लगाया जाता। 'सन:' के बाद 'ऐन' का संक्षिप्त रूप 'ईसवी' शब्द के लिए आता है।

चंद पुरानी कहानियाँ

इस इकाई में दस लघु कथाएँ हैं जो भारतीय तथा इस्लामी स्रोतों से ग्रहण की गयी हैं। इस चयन का प्रयोजन तात्त्विक निजता और उर्दू भाषी समुदाय की सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की दृष्टि से व्यापक रुचि की कुछ प्राचीन कथाओं को एक-दूसरे के समीप लाते हुए सरल भाषा में प्रस्तुत करना है।

पहली तीन बोध कथाएँ अत्यंत प्राचीन एवं भारतीय कथा-चक्रों में सर्वाधिक सुविख्यात 'पंचतंत्र' से ली गयी हैं, जिसकी रचना ईसापूर्व दूसरी शताब्दी में हुई थी। इन कथाओं ने किसी भी भारतीय ग्रंथ की तुलना में विश्वसाहित्य पर अधिक प्रभाव छोड़ा। मूल कृति नष्ट हो चुकी है। बाद के पाठों में सबसे अधिक स्पष्ट पाठ पूर्णभद्र जैन का है। इसके छंदोबद्ध रूपांतरों में सोमदेव कृत 'कथा सरित सागर' और नारायण कृत 'हितोपदेश' सम्मिलित हैं। 'पंचतंत्र' का पुरानी फ़ारसी (पहलवी) में पहला अनुवाद नौशेर्वी के आदेश से छठवीं शताब्दी में हुआ। 'कलीलः व दिमनः' के नाम से विख्यात इसका अरबी भाषांतर (नवीं शताब्दी) 'पंचतंत्र' के यूरोपीय साहित्य पर प्रभाव के लिए मुख्य रूप से जाना जाता है। इंग्लैण्ड में यह 'पिल्पेज़ फ़ेबुल्स' (विपदाई की कहानियाँ) की भाँति लोगों के मन में रच-बस गयी। 'पंचतंत्र' की अनेक कहानियाँ 'अरेबियन नाइट्स', 'एसोप्स फ़ेबुल्स', 'गुलिस्तौ' के साथ-साथ मध्य एवं पुनर्जागरण कालीन यूरोपीय कथा-चक्रों में अवतरित होती रही हैं। यहाँ संकलित 'वफ़ादार नेवला' कथा Llywelyn the Great and his faithful hound Gelert की ओर संकेत करती है।

पाँचों तंत्र स्वतंत्र रचनाएँ होते हुए भी एक आधार-कथा के द्वारा परस्पर संबद्ध हैं। इस आधार-कथा में एक राजा अपने तीन मूर्ख पुत्रों का शिक्षित करने को लेकर हताश है, और अंततः उसे एक ब्राह्मण मिल जाता है जो 'पंचतंत्र' की कथाओं के जरिए उन्हें शिक्षा प्रदान करता है। ये कथाएँ सधन, नाटकीय और मनोविनोदपूर्ण हैं। इनमें नैतिकता की बजाय विवेकपूर्ण और सार्थक कर्म पर बल दिया गया है।

बाद की दो कहानियाँ 'भाई भी और खाविंद भी' और 'मच्छर का कल्ल' जातक से ली गयी हैं। आज 'जातक' प्राचीनतम एवं अत्यंत महत्वपूर्ण लोककथा-संग्रहों में से एक है। यह पाली बौद्ध आगमों (सुत्त पिटक) के एक भाग के रूप में जाना जाता है और इसमें 547 कथाएँ संगृहीत हैं। इनमें से प्रत्येक कथा में बोधिसत्त के रूप में गौतम बुद्ध के पूर्व जीवन का वृत्तान्त प्रस्तुत किया गया है, जब उन्हें बुद्ध के रूप में तत्त्व-ज्ञान नहीं हुआ था। पशु-कथाओं के साथ-साथ इसमें परीकथाएँ, नीतिकथाएँ, सूक्तियाँ और दंतकथाएँ भी संगृहीत हैं। नैतिक शिक्षा को धर्मनिरपेक्षता का एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। इनमें से आधे से ज्यादा कहानियाँ 'पंचतंत्र' जैसे अन्य भारतीय कथा-संग्रहों में मिल जाती हैं। 'शेर की खाल में गधा' जैसी कुछ कहानियाँ पाश्चात्य साहित्य, विशेष रूप से एसोप (Aesop) से जुड़ी कथाओं में विद्यमान हैं।

क्रमसंख्या छः से आठ तक की कहानियाँ फ़ारसी के अत्यंत लोकप्रिय कवि और महान् उपदेशक सादी (शेख़ मुसलिहुद्दीन, 1184-1291 ई.) की कृति 'गुलिस्ताँ' से ली गयी हैं। रिवायत है कि सादी सौ वर्ष से ज्यादा जिये, जिसका एक चौथाई समय यायावरी में बीता। कहा जाता है कि अपनी यायावरी के दौरान उन्होंने मध्य एशिया, भारत, सीरिया, मिस्र और अरब की यात्राएँ कीं।

सादी की श्रेष्ठतम कृति 'गुलिस्ताँ' (1258 ई.) में गीति-गद्य और काव्य का मिला-जुला रूप मिलता है। इसमें व्यक्ति के सार्वजनिक एवं निजी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का अहाता करने वाली सूक्तियाँ मिलती हैं। एक नैतिकतावादी के रूप में सादी ने अपनी कठिन और संघर्षपूर्ण जीवन-यात्रा के आधार पर अनुभवसिद्ध भविष्यवाणियों की हैं। विभिन्न आस्थाओं के लोगों से उनके जीवन्त संपर्क ने उनके विचारों को एक व्यापक एवं वैविध्यपूर्ण पहचान दी, जहाँ तक कोई अन्य फ़ारसी कवि नहीं पहुँच सका। अपनी शैली के लालित्य से युक्त इस विशेषता ने उन्हें एक कालजयी और सार्वभौमिक कवि के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया। फ़ारस से बाहर भारत में सादी का गहरा प्रभाव लक्षित होता है, जहाँ पारम्परिक मदरसों में उनकी कृति 'गुलिस्ताँ' एक सामान्य पाठमाला के रूप में पढ़ाई जाती रही है। इसमें कुछ 'पंचतंत्र' से मिलती-जुलती कहानियाँ हैं, और 'पंचतंत्र' की भाँति ही यह बुद्धिमत्तापूर्ण कहावतों का एक सार-संग्रह है जिसमें हास्य-विनोद की सूक्तियों (लतीफ़ों) का पुट भी है। उनकी दूसरी उल्लेखनीय कृतियों में 'बोस्ताँ' (1257 ई.) जो एक नीतिकाव्य संग्रह है,

और एक दीवान है। पश्चिम में सादी की रचनाओं को सतत रूप से उद्धृत और व्याख्यायित किया जाता रहा है, विशेष रूप से वोल्तेयर, बेंजामिन फ्रेंकलिन, गोयते और इमर्सन के यहाँ उनके उल्लेख मिलते हैं। 'गुलिस्ताँ' के बेहतरीन अंग्रेजी अनुवाद ईस्टविक (1852 ई.) और प्लाट्स (1873 ई.) द्वारा किये गये हैं।

अंतिम दो कहानियाँ मौलाना रूमी की मस्नवी से हैं। जलालुद्दीन रूमी (1207-1273 ई.) इस्लाम के महानतम रहस्यवादी कवियों में से एक हैं। उन्होंने मौलवी या नृत्यमग्न दरवेश के सम्मानित पद की स्थापना की, जो आज भी विद्यमान है। उनकी अधिकांश संबंधनपरक रचनाएँ मौलवी दरवेशों के सम्मान में लिखी गयी हैं, और यहाँ तक कि उनकी शाहकार मस्नवी का स्रोत भी यही है। छह खंडों में विभाजित यह मस्नवी फ़ारसी की एक दीर्घ कविता है जिसमें चालीस हजार शेर हैं। सूफी सिद्धांतों की व्याख्या के लिए समर्पित किस्सों, कहानियों और प्रतीकों का यह विशाल संग्रह है। यह कहा जाता है कि रूमी चौदह वर्ष तक नाचते, चलते-फिरते, उठते-बैठते जब भी उन्हें अनुभूति होती थी, अपने एक शार्गिर्द को ये रचनाएँ बोलते रहते थे; कभी-कभी सूर्योदय से सूर्यास्त तक। यह एक असंयुक्त रचना है और क्रमविहीन रूप से एक के बाद एक कहानियाँ आती रहती हैं। तथापि समूची रचना के मूल में एक प्रगीतात्मक प्रेरणा निहित है। इस किताब की महत्ता एक आप्त-कथन की भाँति है, और प्रायः इसे 'मस्नवी-ए-मानवी' अर्थात् आध्यात्मिक मस्नवी के रूप में संदर्भित किया जाता है। पाश्चात्य विद्वानों ने इसे 'इस्लाम की डिवाइन कॉमेडी' या सूफियों का बाइबिल कहा है। इसमें प्राचीन लोक गाथाओं, कुर्आन की किंदंतियों, संतों की जीवनियों, व्यावहारिक बुद्धिमत्ता से जुड़े संदर्भों के साथ-साथ मनुष्य द्वारा अनुभूत गहन आध्यात्मिक अनुभवों का समावेश है।

आर.ए. निकॉलसन ने इस मस्नवी का अनुवाद एवं टीका सहित क्लासिक संस्करण (लंदन, 1924-40) तैयार किया। इसका संक्षिप्त संस्करण 1898 ई. में ई.एच. किनफील्ड द्वारा सामने लाया गया। इस मस्नवी पर उर्दू में प्रायः टीकाएँ की जाती रही हैं, जहाँ इसकी कहानियों के अनेक अनुवाद उपलब्ध हैं।

यहाँ प्रस्तुत दस कहानियाँ इस रीडर के संपादक द्वारा स्पष्ट और सरल भाषा में लिखी गयी हैं। इनके शीर्षक भी संपादक ने दिये हैं।

UNIT I

चंद पुरानी कहानियां

1. पंचतंत्र
अक्ल के दुश्मन

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	گہرا	गहरा	विशे. गहरा, क़रीबी
	(سے) کورا ہونا	(से) कोरा होना	बिना/साफ/शून्य
	عقل رکھنا	अक्ल रखना	म.क्रि. बुद्धिमान, सामान्य ज्ञान
	جمع ہونا	जमा होना	अ.क्रि. जमा होना, एकत्र होना
	فائدہ	फ़ायदा	पुरुषो. फ़ायदा, लाभ
	ملک	मुल्क	पुरुषो. मुल्क, देश
	دربار	दरबार	पुरुषो. दरबार
	عزت ہونا	इज्ज़त होना	अ.क्रि. इज्ज़त होना, सम्मान होना
	چناچہ	चुनांचे	क्रि.वि. अतएव, अतः
	دیس	देस	पुरुषो. देश, क्षेत्र

چند پرانی کہانیاں

(۱) بیچ تنتر

عقل کے دشمن

چار برہمنوں میں گہری دوستی تھی۔ ان میں سے تین بڑے
 ودوان تھے، مگر عقل سے کورے تھے۔ چوتھا ودوان تو
 نہیں تھا، لیکن عقل رکھتا تھا۔ ایک بار چاروں جمع ہوئے۔
 انھوں نے کہا: ”یہاں تو ہماری ودیا کا کوئی فائدہ نہیں۔
 کیوں نہ ہم کسی دوسرے ملک میں چلے جائیں؟ راجا کے
 دربار میں ہماری بڑی عزت ہوگی۔“ چنانچہ وہ چاروں
 پورب دیس کو چل پڑے۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	سب سے بڑا بغیر	सबसे बड़ा बगैर	सबसे बड़ा (उम्र में) बगैर, बिना/ ...के बगैर/ बगैर... के
	حصہ	हिस्सा	पुरुषो. हिस्सा, भाग
	گذرنا	गुज़रना	अ.क्रि. गुज़रना
	مردہ	मुर्दा	विशं. मुर्दा, मरा हुआ
	استعمال کرنا	इस्तेमाल करना	स.क्रि. इस्तेमाल करना
	زندہ	जिंदा	विशं. जिंदा, जीवित
	گوشت	गोश्त	पुरुषो. गोश्त, मांस
	خون	खून	पुरुषो. खून, रक्त
	تیار کرنا	तैयार करना	स.क्रि. तैयार करना, बनाना
	جان	जान	स्त्रियो. जान, आत्मा

تھوڑی دُور جانے کے بعد اُن میں سب سے بڑا بولا:
 ”ہم میں سے ایک تو دودان نہیں ہے۔ صرف عقل رکھتا ہے
 اور راجا کے دربار میں بغیر ودیا کے اُسے کچھ نہیں ملے گا۔ اُس
 کو گھر واپس بھیجنا چاہیے۔“ دوسرے نے کہا: ”بھائی اُن پڑھ! تم
 تو گھر واپس جاؤ۔ راجا کے دربار میں تمہارا کیا کام؟ مگر تیسرے
 نے کہا: ”نہیں بھائی، اس کو بھی آنے دو۔ بچپن کا ساتھی ہے
 ہمیں جو کچھ ملے گا، اسے بھی حصہ دیں گے۔“ چنانچہ وہ چاروں
 اکٹھے ہی چلنے لگے۔

کچھ دیر کے بعد وہ ایک جنگل سے گزرے۔ یہاں ایک
 مُردہ شیر کی ہڈیاں پڑی تھیں۔ پہلے نے کہا: ”ہمیں اپنی
 ودیا استعمال کرنی چاہیے۔ ہم اس مرے ہوئے شیر کو زندہ
 کر سکتے ہیں۔ سب سے پہلے میں ہڈیاں جوڑوں گا۔“ اور اُس
 نے پھرتی سے ہڈیاں جوڑ دیں۔ دوسرے نے گوشت، خون
 اور کھال تیار کر دی۔ تیسرا شیر میں جان ڈالنے کے لیے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	کھا جانا	खा जाना	अ.क्रि. खा जाना
5	چھوڑو بھی	छोड़ो भी	मुझे अकेले छोड़ दो
	ذرا	ज़रा	विशे. ज़रा, थोड़ा, तनिक
	ہوں ہی	जूंही	क्रि.वि. जैसे ही
	عقل مند	अक्लमंद	विशे. बुद्धिमान, ज्ञानी
	درخت	दरख़्त	पुरुषां. पेड़
	(کی) راہ لینا	(की) राह लेना	अपना रास्ता लेना

चूहे से शादी

منہ	मुंह	पुरुषां.	मुंह
چوہیا	चूहिया	स्त्रियां.	चूहिया
باز	बाज़		गिद्ध
چوخی	चोंच	स्त्रियां.	चांच

آگے بڑھا۔ اُن پڑھ نے اُسے ٹوکا اور کہا: ”ارے نابھ، یہ شیر ہے۔ اس میں تو جان ڈالے گا تو یہ سب کو کھا جائے گا۔“ اُس نے جواب دیا: ”پھوڑو بھی، مجھے اپنی وِ دیا دکھانے دو۔“ اُن پڑھ نے کہا: ”اچھا، ذرا ٹھہرو میں تو پیڑ پر چڑھ جاؤں۔“

اس کے بعد اُس نے شیر میں جان ڈال دی۔ لیکن جوں ہی وہ زندہ ہوا، سب کو کھا گیا اور عقل مند اُن پڑھ نے درخت سے اتر کر اپنے گھر کی راہ لی۔

چوہے سے شادی

گنگا ندی کے کنارے ایک رشی رہتا تھا۔ ہر روز وہ گنگا میں اِشنان کرتا تھا۔ ایک دن وہ مَٹّہ دھو رہا تھا کہ ایک چوہیا ایک باز کی چونچ سے چھوٹ کر اُس

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	آگرتا	आ गिरना	अ.क्रि. गिर पड़ना
	دوباره	दोबारा	क्रि.वि. दोबारा, दूसरी बार
	زور	ज़ोर	पुरुषो. ज़ोर, शक्ति
	تبدیل کرنا	तब्दील करना	स.क्रि. बदलना
5	اُس کے	उसके	उसके यहां, उसके परिवार में
	اولاد	औलाद	स्त्रियो. औलाद, संतान
	بیوی	बीवी	स्त्रियो. पत्नी
	(کی) دیکھ بھال	(की) देखभाल करना	स.क्रि. (की) देख भाल करना
	محبت	मुहब्बत	स्त्रियो. प्रेम
	(کی) پرورش کرنا	(की) परवरिश करना	स.क्रि. (का)पालन पोषण करना
	برہمنی	ब्रह्मनी	स्त्रियो. ब्रह्मणी
	(پر) راضی ہونا	(पर) राज़ी होना	अ.क्रि. (पर) राज़ी होना
	(کو) پسند کرنا	(को) पसंद करना	स.क्रि. (को) पसंद करना

کے منہ پر آگری۔ رشی نے دوبارہ منہ دھویا اور اشان
 کیا۔ پھر اُس نے اپنی ودیا کے زور سے اُس چوہیا کو ایک
 لڑکی میں تبدیل کر دیا۔ اُس کے کوئی⁵ اولاد نہیں تھی۔ وہ
 لڑکی کو اپنے گھر لے گیا اور بیوی سے بولا: "آج سے
 یہ لڑکی ہماری بیٹی ہے۔ اِس کی دیکھ بھال کریں گے۔"
 برہمن کی بیوی نے بڑی محنت سے اُس کی پرورش
 کی۔ جب وہ بارہ سال¹² کی ہو گئی تو برہمنی نے اپنے بتی
 سے کہا: "اب ہمیں اِس کی شادی کرنی چاہیے۔"
 برہمن بولا: "اچھی بات ہے۔ اگر یہ راضی ہے تو
 میں سورج دیوتا کو بلاتا ہوں اور اُس سے اِس کی
 شادی کر دیتا ہوں۔"
 چنانچہ رشی نے اپنی ودیا کے زور سے سورج کو
 بلایا اور کہا: "یہ میری بیٹی ہے۔ اگر یہ تم کو پسند کرے
 تو تم اسے اپنی بیوی بنا لو۔"

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	دُنیا	दुनिया	स्त्रियो. दुनिया, संसार
	روشنی	रौशनी	स्त्रियों. रौशनी, प्रकाश
	کیرن	किरण	स्त्रियो. किरण
	جلا ڈالنا	जला डालना	स.क्रि. जला देना
	طاقت ور	ताक़तवर	विशे. शक्तिशाली

پھر اُس نے اپنی بیٹی سے پوچھا: ”بیٹی! سورج رات کو دن بناتا ہے۔ ساری دنیا کو روشنی دیتا ہے۔ کیا تو اس سے شادی کرے گی؟“

اُس نے کہا: ”نہیں۔ اس کی کرنیں مجھے جلا ڈالیں گی۔“

تب رشی نے سورج سے پوچھا: ”کیا اور کوئی تم سے بھی زیادہ طاقت ور ہے؟“

سورج نے جواب دیا: ”ہاں، بادل مجھ سے بھی زیادہ طاقت ور ہے۔ وہ میرا مُنہ بھی ڈھانپ دیتا ہے اور مجھے کوئی نہیں دیکھ سکتا۔“

تب رشی نے بادل کو بلایا اور اپنی بیٹی سے پوچھا: ”کیوں بیٹی؟ تو بادل سے شادی کرے گی؟“

اُس نے کہا: ”نہیں۔ یہ بہت کالا اور ٹھنڈا ہے۔“

پھر رشی نے بادل سے پوچھا: ”کیا اور کوئی تم سے بھی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	ہوا	हवा	स्त्रियो. हवा, वायु
2	جب وہ... جاتی ہے /	जब वह... जाती है /	जब हवा बहती है
	ناپائیدار	नापाइदार	विशे. अस्थिर
	سخت	सख्त	विशे. कठोर

زیادہ طاقت ور ہے؟“

بادل نے جواب دیا: ”ہاں، ہوا مجھ سے بھی زیادہ طاقت ور ہے۔ جب وہ چلتی ہے تو مجھے بھی اُڑالے جاتی ہے۔“
 چُنانچہ رشی نے ہوا کو بلایا اور اپنی بیٹی سے پوچھا:
 ”کیوں بیٹی! تو ہوا سے شادی کرے گی؟“

اُس نے کہا: ”نہیں۔ یہ ناپائدار ہے۔“
 پھر رشی نے ہوا سے پوچھا: ”کیا اور کوئی تجھ سے بھی زیادہ طاقت ور ہے؟“

ہوا نے جواب دیا: ”ہاں، پہاڑ مجھ سے بھی زیادہ طاقت ور ہے۔ وہ مجھ سے بھی نہیں ہلتا۔“
 چُنانچہ رشی نے پہاڑ کو بلایا اور اپنی بیٹی سے پوچھا:
 ”کیوں بیٹی! تو پہاڑ سے شادی کرے گی؟“
 اُس نے کہا: ”نہیں۔ یہ بہت سخت ہے۔ میں کسی اور سے شادی کروں گی۔“

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	(میں) سوراخ کرتا	(में) सूरख करना	स.क्रि. (में) छेद करना
	نسل	नस्ल	स्त्रियो. पीढ़ी
	آخر کار	आखिरकार	क्रि.वि. अन्ततः

پھر رشی نے پہاڑ سے پوچھا: ”کیا اور کوئی تم سے بھی زیادہ طاقت ور ہے؟“

پہاڑ نے جواب دیا: ”ہاں، چوہے مجھ سے بھی زیادہ طاقت ور ہیں۔ وہ مجھ میں بھی سوراخ کر دیتے ہیں۔“

پُچھناچہ رشی نے چوہے کو بلایا اور اپنی بیٹی سے پوچھا: ”کیوں بیٹی! تو چوہے سے شادی کرے گی؟“

بیٹی نے سوچا کہ اُس کی اور چوہے کی نسل ایک ہی ہے اور بولی: ”جی ہاں۔ میں اس سے شادی کروں گی۔ مجھ کو پھر چوہیا بنا دیجیے۔“

آخر کار رشی نے اُسے پھر چوہیا بنا دیا۔

وفا دار نیولا

کسی گاؤں میں ایک برہمن رہتا تھا۔ اُس کا ایک بچہ تھا۔

वफ़ादार नेवला

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	(پر) بھروسہ کرنا	(पर) भरोसा करना	स.क्रि. (पर) भरोसा करना, विश्वास करना
	مار ڈالنا	मार डालना	स.क्रि. मार डालना
	پانی بھرنا	पानी भरना	स.क्रि. पानी भरना
	(کا) خیال رکھنا	(का) ख्याल रखना	स.क्रि. ध्यान देना
	اتفاقا	इत्तिफ़ाक़न	क्रि.वि. संयोग से
	بیل	बिल	पुरुषो. छेद (विशेषतः सांप/ चूहे का)
	خطرہ	ख़तरा	पुरुषो. संकट, आशंका
	(سے) گھٹنا	(से) गुथना	अ.क्रि. (से) लड़ना
16	ٹکڑے ... دیا /	“टुकड़े ... दिया”	
	بہادری	बहादुरी	स्त्रियो. बहादुरी, वीरता
	جوش	जोश	पुरुषो. जोश, उत्तेजना
	پنجہ	पंजा	पुरुषो. पंजा
	غصہ	.गुस्सा	पुरुषो. .गुस्सा, क्रोध

اُس کے گھر میں ایک نیولا بھی تھا۔ برہن کی بیوی اُن دونوں سے بہت پیار کرتی تھی۔ وہ نیولے کو بھی اپنے بچے کی طرح دودھ پلاتی اور نہلاتی تھی، مگر اُس پر بھروسہ نہیں کرتی تھی کہ کہیں بچے کو مار نہ ڈالے۔

ایک دن اُس نے اپنے پتی سے کہا: ”میں پانی بھرنے جا رہی ہوں۔ بچہ سو رہا ہے، اس کا خیال رکھنا“ تھوڑی دیر کے بعد برہن بھی کھانا مانگنے کے لیے چلا گیا۔

اتفاقاً کسی بل سے ایک کالا سانپ نکلا اور بچے کی طرف چلا۔ نیولے نے دیکھا کہ بچہ خطرے میں ہے۔ وہ اُچھل کر سانپ سے گتھ گیا۔ آخر اُس نے سانپ کو مار کر ٹکڑے ٹکڑے کر دیا۔¹⁶ بہادری کے جوش میں وہ باہر بھاگا۔ اُس کے منہ اور پیچوں سے خون ٹپک رہا تھا۔ برہن کی بیوی نے اُس کو دُور سے دیکھا تو سمجھی کہ اُس نے بچے کو مار ڈالا ہے۔ غصے میں اُس نے پانی کا گھڑا نیولے پر پٹک دیا، جس سے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	فوراً	फौरन	क्रि.वि. तुरन्त
	مر جانا	मर जाना	अ.क्रि. मर जाना
	آرام سے	आराम से	क्रि.वि. आराम से
	روتے ہوئے	रोते हुए	क्रि.वि. रोते हुए
	لالچ	लालच	पुरुषो. लालच, लोभ
	کے مارے	के मारे	पर. के कारण
	ناحق	नाहक	विशे. अकारण, ग़लती से, एवं निराधार क्रि.वि.

2. जातक

भाई भी और खाविंद भी

12	ابھی...بھی / آ نکلتا	“दोनों... ओर” आ निकलना	अ.क्रि. आ जाना
----	-------------------------	---------------------------	----------------

وہ فوراً مر گیا۔ جب وہ اندر آئی، تو دیکھا کہ بچہ آرام سے سویا ہوا ہے اور اُس کے پاس ایک سانپ مرا ہوا پڑا ہے۔ اُس کو بہت دکھ ہوا۔

برہمن کھانا لے کر واپس آیا تو بیوی نے روتے ہوئے کہا: ”تو تو لالچ کے مارے باہر چلا گیا اور وفادار نیولا ناحق میرے ہاتھوں مارا گیا۔“

(ب) جاتک

12

بھائی بھی اور خاوند بھی

ایک بارتین آدمی ہل چلا رہے تھے۔ پاس ہی ایک جنگل تھا۔ وہاں ڈاکوؤں نے کچھ لوگوں کو لوٹ لیا تھا۔ راجا کے آدمی ڈاکوؤں کو ڈھونڈتے ڈھونڈتے کھیت پر آ بکھے اور

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	قید کرنا	कैद करना	स.क्रि. कैद करना, बंदी बनाना
6	تینوں... گیا	“तीनों को गिरफ्तार कर कैद कर दिया गया”	
	شہر	शहर	पुरुषो. शहर, नगर
	عورت	औरत	स्त्रियो. औरत, नारी
	زور زور سے	जोर जोर से	क्रि.वि. जोर जोर से
	فریاد کرنا	फरियाद करना	स.क्रि. याचना करना
	(کو) خبر کرنا	(को) खबर करना	स.क्रि. खबर करना, सूचित करना
	حکم	हुक्म	पुरुषो. हुक्म, आदेश
	معاملہ	मुआमला	पुरुषो. बात
	خاوند	खाविंद	पुरुषो. पति, शौहर
	اصل	अस्ल	स्त्रियो. असल, वास्तविक एवं विश.
	لباس	लिवास	पुरुषो. परिधान, वस्त्र
	قیمتی	कीमती	विशो. कीमती, बहुमूल्य
22	چاہے وہ کتنا ہی قیمتی لباس پہن لے	“चाहे वह कितना ही बहुमूल्य कपड़े पहन ले”	
	سونا	सूना	विशो. सूना, सुनसान
	بے کار	बेकार	विशो. बेकार, अनुपयुक्त
	قیدی	कैदी	पुरुषो. कैदी, बन्दी

بولے: ”یہی ڈاکو ہیں۔ کسان بن کر ٹھپنا چاہتے ہیں۔“ تینوں کو پکڑ کر قید کر دیا گیا۔⁶

کچھ دنوں کے بعد اُس شہر میں ایک عورت زور زور سے فریاد کرنے لگی: ”مجھے تن ڈھانپنے کو کچھ دو۔ مجھے تن ڈھانپنے کو کچھ دو۔“

راجا کو خبر کی گئی۔ اُس نے حکم دیا: ”اس عورت کو کپڑے دیے جائیں۔“ عورت نے کہا: ”مجھے کپڑے نہیں چاہیے۔“ تب راجا نے عورت کو بلا کر پوچھا: ”کیا معاملہ ہے؟ تمہیں کپڑے کیوں نہیں چاہیے؟“ عورت نے کہا: ”خاوند ہی عورت کا افضل لباس ہے۔ جس عورت کا خاوند نہیں، چاہے وہ کتنا ہی قیمتی لباس پہن لے،²² ننگی ہی رہے گی۔ راجا کے بغیر راج سونا ہے اور پانی کے بنا ندی بیکار۔“ راجا عورت کی اس بات سے خوش ہوا۔ اُس نے پوچھا: ”کیا ان تینوں قیدیوں میں تمہارا خاوند بھی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	صرف	सिर्फ	विशे. केवल
	چونکہ	चूँकि	सह. चूँकि
	مہربانی	मेहरबानी	स्त्रियो. कृपा

मच्छर का कत्ल

زمانہ	जमाना	पुरुषो.	जमाना, युग
بڑھی	बढ़ई	पुरुषो.	बढ़ई

ہے؟“ عورت بولی: جی ہاں، ان میں ایک میرا خاوند ہے، دوسرا بھائی اور تیسرا بیٹا۔“

راجا نے کہا: ”میں ان تینوں میں سے صرف ایک کو چھوڑ سکتا ہوں۔ بولو تم سب سے زیادہ کسے چاہتی ہو؟“

”ہمارا ج“ عورت نے جواب دیا: ”اگر میں زندہ رہی تو خاوند دوسرا بھی مل سکتا ہے اور بیٹا بھی۔ چونکہ میرے ماں باپ مر چکے ہیں، دوسرا بھائی اب نہیں مل سکتا۔ اگر آپ میرے بھائی کو چھوڑ دیں تو بڑی مہربانی ہوگی۔“

راجا اس جواب سے بہت خوش ہوا اور اُس نے تینوں کو چھوڑ دیا۔

پچھڑ کا قتل

پُرانے زمانے میں بنارس میں کچھ بڑھئی ہتے تھے۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	گنجا	गंजा	पुरुषो. गंजा
	سر	सर	पुरुषो. सिर
	پریشان ہونا	परेशान होना	अ.क्रि. परेशान होना
	پیچھا چھڑانا	पीछा छुड़ाना	स.क्रि. पीछा छुड़ाना
	(کا) کام تمام کرنا	(का) काम तमाम करना	मार देना, समाप्त कर देना
	تیز	तेज़	विश. तेज़, धारदार
	کھینچنا	खींचना	स.क्रि. खींचना
	دے مارنا	दे मारना	स.क्रि. दे मारना
	بودھی سنا	बोधि सत्ता	पुरुषो. बोद्धि सत्ता, बुद्ध के पूर्व जन्मों में से एक ('जातक कथा' के नाम का औचित्य सिद्ध करने के लिए, कथा में बोधिसत्व का किसी न किसी भूमिका में अवतरण होता है।)
	دکان	दुकान	स्त्रियो. दुकान
	نادان	नादान	विश. एवं पुरुषो. नादान, मूर्ख
	دانا	दाना	विश. एवं पुरुषो. बुद्धिमान

ایک دن ایک بڑھی لکڑی چھیل رہا تھا۔ اُس کا گنجا سر تانبے کی طرح چمک رہا تھا۔ ایک مجتھر اُس کے سر پر آ بیٹھا اور بار بار کاٹنے لگا۔ بوڑھے نے پریشان ہو کر اپنے بیٹے سے کہا: ”میرے سر پر ایک مجتھر بار بار کاٹ رہا ہے۔ اس سے میرا پیچھا پھڑا دو۔“

بیٹا باپ کے پیچھے بیٹھا ہوا تھا، بولا: ”ابھی اس کا کام تمام کرتا ہوں۔“

اُس نے ایک تیز گلہاڑی اٹھائی اور پلورے زور سے کھینچ کر باپ کے سر پر دے ماری۔ بوڑھے کا سر دو ٹکڑے ہو گیا اور وہ فوراً مر گیا۔

بودھی ستہ اُس وقت بڑھی کی دکان میں بیٹھا ہوا

تھا۔ اُس نے کہا: ”سچ ہے نادان دوست سے دانا دشمن اچھا ہوتا ہے۔“

3. गुलिस्ताने सा'दी मुबारकबाद

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	نوشیرواں	नौशेरवां	व्य.सं. एक पारसी राजा का नाम जो अपने न्याय के लिए प्रसिद्ध था (531-572)
	بادشاہ	बादशाह	पुरुषो. बादशाह
	عرض کرنا	अर्ज करना	स.क्रि. सम्मान के साथ कहना
	مبارک	मुबारक	स्त्रियो. मुबारक, बधाई
	خدا	खुदा	पुरुषो. खुदा, ईश्वर
	فلاں	फुलां	विशे. अमुक एवं पुरुषो.
	دشمن	दुश्मन	पुरुषो. दुश्मन, शत्रु
8	خدا... لیا	खुदा ने आपके अमुक शत्रु को	इस संसार से उठा लिया
	خبر	खबर	स्त्रियो. खबर, सूचना
	خوش ہونا	खुश होना	अ.क्रि. खुश होना
	موقع	मौका	पुरुषो. मौका, अवसर
13	کیا موقع ہے	“क्या मौका है?” अर्थात् यह कोई अवसर नहीं है।	
	خود	खुद	सर्व. स्वयं

पांव जूते में

قسمت	किस्मत	स्त्रियो.	भाग्य
شکایت	शिकायत	स्त्रियो.	शिकायत

گلستانِ سعدی (ج)

مبارک باد

کسی نے نوشیرواں بادشاہ کے دربار میں آ کر
 عرض کیا: ”مبارک ہو! خدا نے آپ کے فلاں دشمن کو
 اس دنیا سے اٹھایا۔“⁸

بادشاہ نے کہا: ”کیا تجھے یہ خبر ملی ہے کہ خدا مجھے¹³
 چھوڑ دے گا؟ دشمن کی موت پر خوش ہونے کا کیا موقع ہے،
 جب ہمیں خود ایک دن مرنا ہے۔“

پاؤں جوتے میں

میں نے کبھی قسمت کی شکایت نہیں کی۔ مگر ایک بار

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	رنج	रंज	पुरुषो. दुःख
	کوفہ	कूफा	व्य.सं. ईराक का एक शहर
	مسجد	मस्जिद	स्त्रियो. मसजिद
	داخل ہونا	दाखिल होना	अ.क्रि. प्रवेश करना
	حالت	हालत	स्त्रियो. दशा
	(کا) شکر بجالانا	(का) शुक्र बजा लाना	धन्यवाद (ईश्वर का)
	مرغ	मुर्ग	पुरुषो. मुर्ग
	(کے) برابر	(के) बराबर	पर. (के) बराबर
	شلغم	शलगम	पुरुषो. शलजम

... घर की खबर नहीं

	نجوی	नजूमी	पुरुषो. ज्योतिष
	لوثا	लौटना	अ.क्रि. लौटना
	غیر	गैर	विशे. एवं अजनबी, अपरिचित पुरुषो.
	بیوی	बीवी	स्त्रियो. पत्नी
	حیران	हैरान	विशे. हैरान
21	غصے میں /	गुस्से में, क्रोध से	
	غصے میں آنا	गुस्से में आना	अ.क्रि. गुस्से में आना
	گالی دینا	गाली देना	स.क्रि. गाली देना
	شروع ہونا	शुरु होना	अ.क्रि. शुरु होना, आरम्भ होना

میں ننگے پاؤں تھا اور میرے پاس جوتا نہیں تھا۔ اسی رنج کے ساتھ میں کونے کی مسجد میں داخل ہوا۔ وہاں میں نے ایک آدمی کو دیکھا، جس کے پاؤں ہی نہیں تھے۔ اُسے دیکھ کر میں اپنی حالت پر خوش ہوا اور خدا کا شکر بجا لایا۔ سچ ہے پیٹ بھرے آدمی کے لیے بھنا ہوا مرغ بھی گھاس کے برابر ہے اور بھوکے آدمی کے لیے جلا ہوا شلغم بھی بھنے ہوئے مرغ سے کم نہیں۔

... گھر کی خبر نہیں

ایک نجوی جب اپنے گھر لوٹا، تو اُس نے وہاں ایک غیر آدمی کو اپنی بیوی کے ساتھ دیکھا۔ بہت حیران ہوا۔ غصے میں آکر اُسے گالیاں دیں اور جھگڑا شروع ہو گیا۔ ایک عقل مند آدمی جو یہ سب کچھ دیکھ رہا تھا،

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	میاں	मियां	पुरुषो. अनौपचारिक सम्मान सूचक संबोधन
	آسمان	आसमान	पुरुषो. आकाश
3	/ کیسے کرتے ہو / : “तुम कैसे करते हो...?”		

4. मस्नवी-ए-रूमी

आधी ज़िंदगी और पूरी ज़िंदगी

نحوی	नह्वी	विशे.	व्याकरणी
سوار ہونا	सवार होना	अ.क्रि.	सवार होना
علم	इल्म	पुरुषो.	ज्ञान
ناز	नाज़	पुरुषो.	गर्व
کشتی والا	किश्ती वाला	पुरुषो.	नाव वाला
نحو	नह्व	स्त्रियों.	व्याकरण
افسوس	अफ़सोस	पुरुषो.	अफ़सोस, दुर्भाग्य
ضائع کرنا	ज़ाए करना	स.क्रि.	नष्ट करना
خاموشی	ख़ामोशी	स्त्रियों.	ख़ामोशी, शान्ति

بولا: ”میاں! تم آسمان کی باتیں کیسے کرتے ہو،³ جب تمہیں
اپنے ہی گھر کی خبر نہیں۔“

(د) مثنویِ رومی

آدھی زندگی اور پوری زندگی

ایک بار ایک نحوی کشتی میں سوار ہوا۔ اُس کو اپنے
علم پر بڑا ناز تھا۔ اُس نے کشتی والے سے پوچھا: ”کیا تم
نے کبھی کچھ نحو پڑھی ہے؟“

کشتی والے نے جواب دیا: ”نہیں۔“

نحوی بولا: ”افسوس تم نے اپنی آدھی عمر ضائع
کر دی۔“

کشتی والے کو بُرا لگا مگر وہ خاموشی سے کشتی چلاتا رہا۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	بھنور	भंवर	पुरुषो. भंवर
	پھنسا	फंसना	अ.क्रि. फंसना

बीवी कि बिल्ली ?

مکار	मक्कार	विशे.	चालबाज़, धोकेबाज़
مہمان	मेहमान	पुरुषो. एवं स्त्री.	मेहमान, अतिथि
نہایت	निहायत	विशे.	अति, बहुत
عمدہ	उम्दा	विशे.	श्रेष्ठ
چپکے سے	चुपके से	क्रि.वि.	चुपके से
کباب	कबाब	पुरुषो.	कबाब

اتفاقاً کشتی بھنور میں پھنس گئی۔ اب کشتی والے نے
 نحوی سے پوچھا: ”کیا آپ نے تیرنا سیکھا ہے؟“
 ”نہیں بھائی!“ اُس نے جواب دیا۔
 کشتی والے نے کہا: ”تو افسوس آپ نے اپنی پوری
 زندگی ضائع کر دی، کیونکہ کشتی بھنور میں ڈوبنے والی ہے۔“

بیوی کہ بلی؟

ایک آدمی کی بیوی بڑی مٹکار اور چور تھی۔ وہ کھانے
 کے لیے جو کچھ گھر لاتا تھا، اُس کی بیوی کھا جاتی تھی۔
 ایک دن اُن کے گھر ایک مہان آنے والا تھا۔ وہ
 آدمی مہان کے لیے نہایت عمدہ گوشت لایا۔ اُس کی بیوی
 نے پُچکے سے کباب بنا کر کھالیے۔ جب مہان آیا تو آدمی
 نے کہا: ”گوشت کہاں ہے؟ مہان کو اچھا کھانا دینا چاہیے۔“

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	ترازو	तराजू	स्त्रियो. तराजू
	وزن	वज़न	पुरुषो. भार, वज़न
	سیر	सेर	पुरुषो. सेर, लगभग 900 ग्राम
	میری جان	मेरी जान	मेरी जान, प्रिय
	چھٹانک	छटांक	स्त्रियो. सेर का सोलहवां हिस्सा

عورت نے جواب دیا: ”گوشت تو بلی کھا گئی۔ بازار سے اور لے آؤ۔“

آدمی کو بہت غصہ آیا۔ اُس نے ترازو اٹھائی اور کہا: ”میں بلی کو تولتا ہوں۔ بلی کا وزن ایک سیر نکلا۔ آدمی نے کہا: ”میری جان! گوشت کا وزن ایک سیر ایک چھٹانک تھا۔ بلی کا وزن صرف ایک سیر ہے۔ اگر یہ بلی ہے تو گوشت کہاں ہے اور اگر یہ گوشت ہے تو بلی کہاں ہے؟ فوراً ڈھونڈو!“

(گوپی چند نارنگ)

अरेबियन नाइट्स

(अल्फ़ लैला)

‘अरेबियन नाइट्स’, जिसे ‘एक हजार एक रातें’ नाम से भी जाना जाता है, अरबी में प्राचीन कहानियों का संग्रह है। मध्य युग में लोकप्रिय हुआ यह संग्रह एक चिरंतन आनंद का स्रोत है। शायद ‘बाइबिल’ के अलावा एशियाई वाङ्मय के किसी अन्य ग्रंथ की पाठकीयता इतनी ज़्यादा नहीं है। कुछ भारतीय और अरबी लोकसाहित्य के साथ-साथ साझा तौर पर जीवित रहते हुए अधिकांश कहानियों के मूल स्रोत अज्ञात हैं। दसवीं शताब्दी आते-आते 264 में से इसकी कुछ कहानियाँ किस्सागो लोगों द्वारा श्रुति परम्परा से मुस्लिम जगत में फैल चुकी थीं। लगभग पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य तक इस कृति का वर्तमान स्वरूप सामने आ चुका था। विभिन्न कहानियाँ इनकी तुलना में प्राचीन ‘पंचतंत्र’, बोकासिओ (Boccaccio) के प्रसिद्ध कथा-चक्र या चौसर की ‘केंटरवरी टेल्स’ के ढंग पर एक आधार-कथा के भीतर संगठित की गयी हैं।

आधार-कथा में बताया गया है कि किस तरह एक ईर्ष्यालु सुल्तान शहरवार स्त्री की ग़ैर वफ़ादारी का कायल है कि वह हर शाम एक नई स्त्री से विवाह करता है और सुबह होते होते उसे मौत के घाट उतार देता है। यह क्रम चलता रहता है, हत्ताकि एक नई दुल्हन शहरज़ाद शादी की रात ऐसी कहानी छेड़ देती है जिसके चर्मोत्कर्ष तक पहुँचते पहुँचते सुल्तान की व्यग्रता इतनी बढ़ जाती है कि वह उसे अगली रात तक के लिए माफ़ कर देता है। यों कहानी-वाचक श्रोता की जिज्ञासा एवं रुचि को बराबर बनाये रखता है और इस प्रकार वह स्त्री एक हजार रातों तक अपने प्राणदंड को रोके रहती है। इस दौरान वह तीन पुत्रों को जन्म देती है और एक स्त्री की वफ़ादारी का पर्याप्त सबूत पेश करती है। अंततः सुल्तान द्रवित हो जाता है और एक हजार एकवीं रात को उसे क्षमादान दे देता है।

यूरोप में ‘अरेबियन नाइट्स’ का परिचय 18वीं शताब्दी में संपन्न फ्रेंच अनुवाद के माध्यम से हुआ। तब से नाविक सिनबाद, अलादीन और उसका

जादुई चिराग और अलीबाबा और चालीस चोर जाने-पहचाने संदर्भ बन गये। इस किताब के बेहतरीन अंग्रेजी अनुवाद एडवर्ड डब्ल्यू लेन ;1840ख और सर रिचर्ड बर्टन (1885-86) द्वारा किये गये हैं। इन कहानियों से प्रेरित होकर रूसी संगीतकार निकोलाई रिम्ज़की-कोर्साकोफ़ ने 'शेहराज़ादे' (Scheherazade) शीर्षक से सिम्फ़नी के रूप में एक वाद्यसंगीत रचना तैयार की।

आधारभूत मानवीय वृत्तियों के चित्रण के कारण इन कहानियों की अपील बहुत व्यापक है, और इनमें पौरात्य और मुस्लिम जीवन की आत्मा, उसके विलक्षण सौंदर्य, आचार-विचार और ऐंद्रियता को रूपायित किया गया है। एक पर्यवेक्षक के अनुसार, 'इन कहानियों में विस्मयकारी एवं रहस्यात्मक पूर्व को उसके चमत्कार, काले जादू, सम्मोहक इत्रों, उल्लसित प्रेमियों, हँसती हुई कलियों, बाँके शहज़ादों के साथ रंगारंग रूप में चित्रित किया गया है। इससे इन कहानियों में विलक्षण और अविस्मरणीय प्रभाव पैदा हो गया है।'

'अरेवियन नाइट्स' उर्दू में बहुत लोकप्रिय है और 'पंचतंत्र' के साथ मिलकर यह लोकसाहित्य के एक बीजकोष को आकार देती है। यहाँ संकलित 'एक शमः पाँच परवाने' एक ऐसी कहानी है जिसके स्रोत भारतीय लोक कथाओं में भी मिलते हैं। डेकेमरोन (Decameron) के पाठक इसे आठवें दिन की पहली कहानी के रूप में समान रूप से याद कर सकते हैं। यहाँ पुनर्प्रस्तुत यह कहानी इस चयन के संपादक द्वारा उर्दू में रूपांतरित की गयी है। यह और पहली इकाई की अन्य कहानियाँ विशेष रूप से सरल और सुबोध शैली में इस आशय से लिखी गयी हैं कि विद्यार्थीगण उर्दू के प्रारंभिक ज्ञान से माध्यमिक ज्ञान की दिशा में सुगमता से आगे बढ़ सकें, अर्थात् इस माध्यमिक पाठमाला को समझ सकने में समर्थ हों।

UNIT II

अल्फ़ लैला

एक शमा पांच परवाने

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	सुदागर	सौदागर	पुरुषो. सौदागर
	اکثر	अकसर	क्रि.वि. अक्सर, प्रायः
	سفر	सफ़र	पुरुषो. सफ़र, यात्रा
	تنہائی	तन्हाई	स्त्रियो. एकांत
	(سے) تنگ آنا	(से) तंग आना	अ.क्रि. (से) परेशान होना
	نوجوان	नौजवान	पुरुषो. नौजवान
	(سے) جھگڑا	(से) झगड़ा	पुरुषो. (से) झगड़ा
	کوٹوال	कोतवाल	पुरुषो. कोतवाल
	قید خانہ	कैदखाना	पुरुषो. बन्दीगृह, जेल
	بناؤ سنگار کرنا	बनाव सिंगार करना	स.क्रि. श्रंगार करना
	سلام	सलाम	पुरुषो. अभिवादन
	مطلب	मतलब	पुरुषो. उद्देश्य, तात्पर्य
	عرضی	अर्ज़ी	स्त्रियो. दरख्वास्त, आवेदन
	پیش کرنا	पेश करना	स.क्रि. पेश करना, प्रस्तुत करना
	فلاں	फुलां	विशं. एवं अमुक पुरुषो.

الف لیلے

ایک شمع پانچ پروانے

کسی عورت کی شادی ایک سوداگر کے بیٹے سے ہوئی تھی۔ اکثر وہ سفر پر جایا کرتا تھا۔ ایک بار کسی دور ملک کو گیا۔ کئی سال گزر گئے، واپس نہیں آیا۔ عورت تنہائی سے تنگ آکر ایک نوجوان سے محبت کرنے لگی۔ ایک دن اُس نوجوان کا کسی سے جھگڑا ہو گیا اور کوتوال نے اُسے قید خانے میں بند کر دیا۔ عورت کو بہت دکھ ہوا۔ وہ بناؤ سنگار کر کے کوتوال کے پاس پہنچی۔ بھک کر سلام کیا اور اس مطلب کی عرض پیش کی: ”فلاں آدمی میرا بھائی ہے۔ اُس نے

क्र.	اردू	देवनागरी	अर्थ
	گواہی	गवाही	स्त्रियो. गवाही
	براہ کرم	बराहे करम	क्रि.वि. कृपा करके
	رہا کرنا	रिहा करना	स.क्रि. रिहा करना
5	"उसे छोड़ दिया जाये" : /اس کو رہا کیا جائے/		
	کے سوا	के सिवा	पर. के अतिरिक्त
	نظر	नज़र	स्त्रियो. नज़र, दृष्टि
	دل و جان سے	दिलो जान से	दिल व जान से
	(پر) عاشق ہونا	(पर) आशिक होना	अ.क्रि. (पर) आशिक होना
	بُلوانا	बुलवाना	स.क्रि. बुलवाना
	جناب	जनाब	मान्यवर
	اللہ	अल्लाह	पुरुषां. अल्लाह
	حفاظت	हिफाज़त	स्त्रियां. रक्षा
	اجنبی	अजनबी	पुरुषां. अजनबी
18	"अगर ऐसा ही है..." : /اگر یہی بات ہے/		
	تشریف لانا	तशरीफ़ लाना	अ.क्रि. तशरीफ़ लाना
	وقت گزارنا	वक़्त गुज़ारना	स.क्रि. वक़्त गुज़ारना, समय बिताना

کسی کے ساتھ بھگڑا نہیں کیا۔ لوگوں نے جھوٹی گواہی دی ہے۔ براہ کرم اُس کو رہا کر دیا جائے، کیوں کہ اُس کے سوا میرا کوئی سہارا نہیں ہے۔“

کوئوال نے عرضی پہن کر عورت پر نظر ڈالی اور دل و جان سے اُس پر عاشق ہو گیا۔ بولا: ”تم میرے گھر چلو۔ میں تھوڑی دیر میں تمہارے بھائی کو بلواتا ہوں۔“ عورت نے کہا: ”جناب! اللہ کے سوا میری حفاظت کرنے والا کوئی نہیں۔ میں اجنبی ہوں۔ پرانے گھر کیسے جاسکتی ہوں؟“

”مگر جب تک تم میری بات نہیں مانو گی، میں تمہارے بھائی کو نہیں چھوڑوں گا۔“

عورت نے جواب دیا: ”اگر یہی بات ہے تو آپ¹⁸ میرے گھر تشریف لائیں اور کچھ وقت میرے ساتھ گزاریں۔“

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	پتا	पता	पुरुषो. पता
	طے کرنا	तय करना	स.क्रि. तय करना, निर्धारित करना
	فریاد	फरियाद	स्त्रियों. याचना, शिकायत
	قاضی	काज़ी	पुरुषो. काज़ी
	جناب عالی	जनाबे आली	मान्यवर
	کے خلاف	के खिलाफ	पर. के विरुद्ध
	رہائی	रिहाई	स्त्रिया. रिहाई
	جرمانہ	जुर्माना	पुरुषो. जुर्माना, दंड
	جیب	जेब	पुरुषो. जेब
	ادا کرنا	अदा करना	स.क्रि. भुगतान करना

12 /عالی جناب/ : /मान्यवर/ जनाबे आली

”تمہارا گھر کہاں ہے؟ کو تو ال نے پوچھا۔

عورت نے اپنے مکان کا پتا بتایا۔ وقت طے کیا اور واپس آ گئی۔

اس کے بعد وہ اپنی فریاد لے کر قاضی کے پاس پہنچی اور بولی: ”جناب عالی! میرا صرف ایک بھائی ہے۔ اُسے کو تو ال نے قید کر دیا ہے۔ لوگوں نے اُس کے خلاف جھوٹی گواہی دی ہے۔ آپ معاملے کو اپنے ہاتھ میں لیں اور اُس کی رہائی کا حکم دیں، ہربانی ہوگی۔“ قاضی بھی عورت کو دیکھ کر اُس پر عاشق ہو گیا تھا۔ بولا: ”میرے گھر چلو۔ میں کو تو ال کو بلوا کر تمہارے بھائی کو رہا کرائے دیتا ہوں۔ اگر اُس پر کوئی جُرمانہ ہے تو وہ بھی اپنی جیب سے ادا کر دوں گا۔ مجھے تمہاری باتیں بہت ہی پیاری لگتی ہیں۔“

عورت نے جواب دیا: ”عالی¹² جناب! آپ بھی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	تصور	कसूर	पुरुषो. दोष
2	/آپ... تصور/	आप भी ऐसा कहते हैं तो दूसरों का क्या दोष।	
	لینا (سے) کام لینا	स.क्रि. (से) काम लेना	
4	/مجھ... پڑے گی/	“अगर मुझसे कोई मदद चाहिए तो मेरी बात माननी पड़ेगी”	
	بہتر	बेहतर	विशे. श्रेष्ठ
	قسم	किस्म	स्त्रियां. प्रकार
	مجبور	मजबूर	विशे. मजबूर, निराश
	وزیر	वज़ीर	पुरुषो. मंत्री
	خواہش	ख्वाहिश	स्त्रियां. इच्छा
	یقیناً	यकीनन	क्रि.वि. निश्चित
	(کی) مدد کرنا	(की) मदद करना	स.क्रि. (की) मदद करना, सहायता करना

ایسا کہتے ہیں ، تو پھر دوسروں کا کیا قصور؟²
 قاضی نے کہا: ”مجھ سے کام لینا ہے تو میری بات
 بھی ماننی پڑے گی۔“⁴

عورت بولی: ”اچھا اگر ایسا ہے تو پھر میرا گھر ہی
 بہتر رہے گا۔ میں اس قسم کی عورت تو نہیں ہوں ، مگر
 اس وقت مجبور ہوں ، کیا کروں؟“

”تمہارا گھر کہاں ہے؟“ قاضی نے پوچھا۔

عورت نے اپنے گھر کا پتا بتایا اور وہی دن
 مقرر کیا جو وہ کو توال سے طے کر چکی تھی۔

اس کے بعد وہ اپنی فریاد لے کر وزیر کے پاس پہنچی
 اور اپنے بھائی کا معاملہ اس کے سامنے پیش کیا مگر وزیر نے
 بھی یہی کہا: ”اگر تم میری خواہش پوری کر دو تو میں یقیناً
 تمہاری مدد کروں گا۔“

عورت نے جواب دیا: ”لیکن آپ کو میرے گھر پر

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	آنے جانے والا	आने जाने वाला	आने जाने वाला (व्यक्ति)
	شریف	शरीफ़	विशे. शरीफ़, सभ्रांत
	زخمی	ज़ख्मी	विशं. घायल
	محل	महल	पुरुषो. महल
	بادشاہ سلامت	बादशाह सलामत	बादशाह सलामत
	خوش نصیبی	ख़ुश नसीबी	स्त्रियो. सौभाग्य
	گزارش	गुज़ारिश	स्त्रियो. निवेदन

آنا ہوگا۔ میرے گھر میں دوسرا کوئی نہیں ہے۔ آپ کے گھر میں بہت سے آنے جانے والے ہیں۔ آپ جانتے ہیں کہ میں شریف عورت ہوں۔“

”تمہارا گھر کہاں ہے؟“ وزیر نے پوچھا۔

عورت نے اپنے گھر کا پتا بتایا اور وہی دن مقرر کیا جو اُس نے کو توال اور قاضی سے طے کیا تھا اور واپس چلی آئی۔

اس کے بعد وہ اپنی فریاد لے کر بادشاہ کے پاس پہنچی۔ بادشاہ نے جب عورت کی باتیں سُنیں تو اُس کا دل بھی محنت کے تپ سے زخمی ہو گیا۔ بولا: ”تم محل کے اندر چلو۔ ہم تمہارے بھائی کو رہا کروا دیں گے۔“

عورت نے جواب دیا: ”بادشاہ سلامت! آپ کے لیے یہ آسان ہے، میرے لیے بہت مشکل۔ پھر بھی میں اسے اپنی خوش نصیبی سمجھتی ہوں۔ میری گزارش ہے کہ آپ میرے گھر

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	عزت بڑھانا	इज्जत बढ़ाना	स.क्रि. सम्मान बढ़ाना
	خیال ہونا	खयाल होना	अ.क्रि. खयाल, ध्यान
	فرمانا	फरमाना	स.क्रि. सम्मान पूर्वक कहना
	باقی	बाकी	विशे. बाकी, शेष
	خانہ	खाना	पुरुषो. खाना
	الماری	अलमारी	स्त्रियो. अलमारी
7	/ چار بڑے... الماری / : “चार बड़े खानों वाली अलमारी”		
	دینار	दीनार	पुरुषो. दीनार (सोने का सिक्का)
	مفت	मुफ्त	विशे. मुफ्त एवं क्रि.वि.
	چغہ	चुगा	पुरुषो. चुगा, गाउन
	رنگریز	रंगरेज़	पुरुषो. रंगसाज़, कपड़े रंगने वाला

تشریف لائیں اور میری عزت بڑھائیں “
 ”ہمیں تمہاری خوشی کا خیال ہے۔“ بادشاہ نے فرمایا۔
 اُس عورت نے بادشاہ سے بھی وہی وقت مقرر کیا، جو
 باقی تینوں سے طے کیا تھا اور واپس چلی آئی۔
 اِس کے بعد وہ ایک بڑھئی کے پاس پہنچی۔ اُس
 سے کہا: ”مجھے چار بڑے بڑے خانوں والی ایک الماری
 چاہیے۔ جس کے ہر خانے میں تالا لگ سکے۔ اُس کا تم کیا
 لو گے؟“

”چار دینار۔“ بڑھئی بولا: ”لیکن اے شریف عورت!
 اگر تو مجھ پر مہربانی کرے تو میں الماری مفت ہی بنادوں گا۔“
 ”اچھا“ ایسا ہے تو پھر پانچ خانوں کی الماری تیار کرنا۔“
 عورت نے کہا۔

اب وہ عورت چار پٹھے لے کر ایک رنگریز کی دکان
 پر گئی اور اُس سے کہا: ”اِن سب کو الگ الگ رنگوں

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	مقررہ	मुकर्ररह	विशे. निर्धारित
	غالیچہ	गालीचा	पुरुषो. गलीचा
	عطر	इत्र	पुरुषो. इत्र
	شراب	शराब	स्त्रियो. शराब
	انتظام کرنا (کا)	(का) इन्तिज़ाम	स.क्रि. (का) इन्तिज़ाम करना,
		करना	(का) प्रबंध करना
	قدم	क़दम	पुरुषो. क़दम
	زمین	ज़मीन	स्त्रियो. ज़मीन, धरती
	دیوان	दीवान	पुरुषो. दीवान
	بیٹھنا	बिठाना	स.क्रि. बिठाना
	ہنسی پیار	हंसी प्यार	हंसी प्यार
	شروع ہونا	शुरू होना	अ.क्रि. शुरू होना
	لباس	लिबास	पुरुषो. कपड़ा, वस्त्र
	دستار	दस्तार	स्त्रियो. पगड़ी
	حاضر کرنا	हाजिर करना	स.क्रि. प्रस्तुत करना
	تبدیل	तब्दील	स्त्रियो. बदलना
	دستک	दस्तक	स्त्रियो. खटखटाना (दरवाज़ा)
	خاوند	खाविन्द	पुरुषो. पति

میں رنگ دو۔“

جب منقرہ دن آیا، اُس عورت نے اپنے گھر میں غاچیے
 بچھائے۔ اچھی طرح بناؤ سنگار کیا۔ نہایت عمدہ کپڑے پہنے۔ عطر
 لگایا۔ اچھے کھانے پکائے اور شراب اور پھولوں کا انتظام
 کیا۔ آنے والوں میں سب سے پہلے قاضی پہنچا۔ عورت نے
 جھک کر اُسے سلام کیا۔ قاضی کے قدموں کی زمین چومی۔ اُس
 کا ہاتھ پکڑ کر لائی اور دیوان پر بٹھایا۔ ہنسی پیار کی باتیں
 شروع ہوئیں۔ جب قاضی نے چاہا کہ اپنی خواہش پوری
 کرے، عورت بولی: جناب عالی! پہلے آپ لباس اور دستار
 اتاریے، یہ چغہ پیئیے، میں کھانا اور شراب حاضر کرتی ہوں۔
 قاضی نے لباس تبدیل ہی کیا تھا کہ دروازے پر دستک
 ہوئی۔ قاضی نے گھبرا کر پوچھا: ”کون ہے؟“

عورت نے جواب دیا: ”کوئی نہیں، میرا خاوند ہوگا۔“

قاضی نے کہا: ”تو میں کہاں جاؤں؟“

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	استقبال کرنا	इस्तिकबाल करना	स.क्रि. स्वागत करना
	خادمہ	खादिमा	स्त्रियो. सेविका, नौकरानी
	آرام کرنا	आराम करना	स.क्रि. आराम करना
	بوجھ	बोझ	पुरुषो. बोझ
10	سر آنکھوں پر / : "खुशी से"... इस विचार से कि सर और आंख शरीर के अत्यन्त सम्मानित अंग हैं।		
	حکم نامہ	हुक्मनामा	पुरुषो. लिखित आदेश

عورت بولی : ”گھرایئے نہیں ، میں آپ کو اس الماری میں پھپھائے دیتی ہوں۔“ چنانچہ اُس عورت نے قاضی کو الماری کے پہلے خانے میں بند کر کے تالا لگا دیا۔

عورت نے باہر جا کر دروازہ کھولا۔ کوتوال کا استقبال کیا اور اُسے اندر لے آئی۔ ”جناب ! اسے اپنا ہی گھر سمجھیے۔ میں آپ کی خادمہ ہوں۔ لباس تبدیل کیجیے اور آرام فرمائیے۔“

تھوڑی دیر ہنسی پیار کی باتیں ہوتی رہیں۔ پھر عورت نے کہا : ”براہ کرم پہلے میرے بھائی کے لیے حکم لکھ دیجیے تاکہ میرے دل کا بوجھ ہلکا ہو۔“

”ہاں ہاں سرآنکھوں پر“¹⁰ کوتوال بولا۔ اُس نے فوراً حکم نامہ لکھ دیا۔ اب پھر دروازے پر دستک ہوئی۔ کوتوال نے پوچھا : ”کون ہے؟“ عورت نے جواب دیا : ”کوئی نہیں ، میرا خاوند ہوگا۔“ کوتوال نے کہا : ”تو

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	حضور	हुजूर	विशे. हु.जूर
	آرام	आराम	पुरुषो. आराम
	مزه	मज़ा	पुरुषो. मज़ा
	غرض	ग़रज़	क्रि.वि. सारांश यह कि

میں کہاں جاؤں؟“ عورت بولی : ”گھبرائیے نہیں۔ میں آپ کو اس الماری میں پھپھائے دیتی ہوں۔ یہ ابھی چلا جائے گا تو میں آپ کے پاس آ جاؤں گی۔“

چُخانچہ اُس عورت نے کوتوال کو الماری کے دوسرے خانے میں بند کر کے تالا لگا دیا۔

اب وزیر صاحب تشریف لائے۔ عورت نے اُن کا بھی استقبال کیا۔ زمین چوسی، اور اُنھیں ادب سے بٹھایا۔ ”حضور! یہ آرام کا وقت ہے۔ اپنا بھاری لباس اتار دیجیے اور رات بھر مزے سے یہاں رہیے۔“ تھوڑی ہی دیر ہنسی پیار کی باتیں ہوئی تھیں کہ اتنے میں پھر دستک ہوئی۔ وزیر نے گھبرا کر پوچھا: ”کون ہے؟“ عورت نے وہی جواب دیا: ”کوئی نہیں، میرا خاوند ہوگا۔“ وزیر نے کہا: ”تو میں کہاں جاؤں؟“ عورت بولی: ”گھبرائیے نہیں۔ میں آپ کو اس الماری میں پھپھائے دیتی ہوں۔“ غرض اُس عورت نے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	عالی جاہ	आलीजाह	विशे. सम्मान सूचक शब्द, महामहिम
	شکر گزار	शुक्रगुज़ार	विशे. आभारी
	رونق	रौनक	स्त्रियो. शोभा, सौन्दर्य
	عرض کرتا	अर्ज करना	स.क्रि. निवेदन करना
	اجازت	इजाज़त	स्त्रियो. इजाज़त, आज्ञा
	قیمتی	कीमती	विशे. कीमती, बहुमूल्य
	سنجھال کر	संभाल कर	ध्यानपूर्वक

وزیر کو الماری کے تیسرے خانے میں بند کر کے تالا لگا دیا۔
اب باہر آکر عورت نے بادشاہ سلامت کا استقبال کیا۔
زمین چوڑی۔ نہایت عزت کے ساتھ انھیں اندر لے آئی اور
دپوان پر بٹھا کر بولی: ”عالی جاہ! میں شکر گزار ہوں کہ آپ
نے میرے گھر کی رونق بڑھائی۔ ایک بات عرض کرنے کی
اجازت چاہتی ہوں۔ اپنا قیمتی لباس تبدیل کر لیجیے اور آرام
فرمائیے۔“ بادشاہ نے اپنا لباس اتارا اور عورت نے اُس
کے قیمتی کپڑے سنبھال کر الگ رکھ دیے۔ تھوڑی دیر ہنسی
پیار کی باتیں ہوتی رہیں۔ اتنے میں دروازے پر پھر دستک
ہوئی۔ بادشاہ نے گھبرا کر پوچھا: ”کون ہے؟“ عورت نے جواب
دیا: ”کوئی نہیں، میرا خاوند ہوگا۔“ بادشاہ نے کہا: ”تو میں
کہاں جاؤں؟“ عورت بولی: ”گھبرائیے نہیں۔ میں آپ کو
الماری میں چھپائے دیتی ہوں۔“

غرض اُس عورت نے بادشاہ کو الماری کے چوتھے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	جوں ہی	जूं ही	क्रि.वि. जैसे ही
	عاشق	आशिक	पुरुषो. प्रेमी
	خطرہ	खतरा	पुरुषो. खतरा
	خالی	खाली	विशे. खाली
	اونٹ	ऊंट	पुरुषो. ऊंट
	سامان	सामान	पुरुषो. सामान

خانے میں بند کر کے تالا لگا دیا۔

عورت نے باہر آکر دروازہ کھولا تو بڑھئی نے بھک کر سلام کیا۔ وہ اُسے بھی اندر لے آئی اور بولی: "تم نے یہ کیسی الماری بنائی ہے، اس کا پانچواں خانہ تو بہت ہی چھوٹا ہے۔"

بڑھئی نے کہا: "یہ نہیں ہو سکتا۔"

"ذرا تم اندر جا کر تو دیکھو، عورت نے کہا۔

جوں ہی بڑھئی الماری کے اندر گیا، عورت نے باہر سے تالا لگا دیا۔ اس کے بعد وہ کو تو ال کا حکم نامہ لے کر قید خانے پہنچی اور اپنے عاشق کو رہا کرایا۔ پھر اُسے ساری کہانی سنائی۔ اُس نے حیران ہو کر پوچھا: "اب ہم کیا کریں؟"

عورت بولی: "اُدُ کسی دوسرے شہر بھاگ چلیں۔

یہاں رہنا خطرے سے خالی نہیں ہے۔ دونوں نے اڈنٹوں

پر اپنا سامان لادا اور وہاں سے چل پڑے۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	زبان کھولنا	ज़बान खोलना	स.क्रि. बोलना
	سبھوں	सभी	सर्व. सभी
	شور	शोर	पुरुषो. शोर
	جن	जिन	पुरुषो. जिन्न-भूत
5	/ فیصلہ کیا گیا / : “निर्णय किया गया”		
	چیخنا	चीखना	अ.क्रि. चीखना, चिल्लाना
	قصہ	किस्सा	पुरुषा. किस्सा, कहानी
	شروع	शुरू	पुरुषो. आरंभ
	آخر	आखिर	पुरुषो. अन्त
	رنگ برنگ کا	रंग बिरंग का	रंग बिरंगी
	عجیب	अजीब	विशं. अजीब, आश्चर्यजनक
	حال	हाल	पुरुषा. दशा
15	/ وہ ہنستے... گیا / : “वह हंसते हंसते दोहरा हो गया”		

وہ پانچوں بھوکے پیاسے تین دن تک الماری میں
 بند پڑے رہے۔ آخر بڑھئی نے زبان کھولی۔ اس کے بعد
 سبھوں نے چلانا شروع کیا۔ اُن سب کا شور مٹ کر لوگ اندر
 آئے اور سمجھے کہ اس الماری میں جن ہے۔ فیصلہ کیا گیا کہ⁵
 اسے آگ لگا دینی چاہیے۔ قاضی یہ سن کر چیخ اٹھا اور
 لوگوں کو سارا قصہ شروع سے آخر تک سنایا۔ چنانچہ کوتوال
 قاضی، وزیر، بادشاہ اور بڑھئی کو باہر نکالا گیا۔ رنگ برنگ
 کے پٹھے پہنے ہوئے وہ عجیب نظر آتے تھے۔ جس نے بھی انہیں
 دیکھا اور اُن کا حال سنا¹⁵ وہ ہنستے ہنستے لوٹ گیا۔

(گوپی چند نارنگ)

डॉ. जाकिर हुसैन

चयनित रचना 'सच्ची मुहब्बत' भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन की रोचक कहानियों के संग्रह 'अब्बू खाँ की बकरी' से ली गयी है। शांत एवं सौम्य व्यक्तित्व के धनी डॉ. जाकिर हुसैन पिछले वक्तों की मोहकता और गरिमा की याद ताज़ा करते हैं। उनके लेखन का अधिकांश भाग जैसे कि 'कैपिटलिज़्म: एन एस्से इन अडरस्टैंडिंग' और प्लेटो के 'रिपब्लिक', फ्रेडरिक लिस्ट के 'नेशनल सिस्टम ऑफ़ इकॉनामिक्स' और एडविन केनन के 'एलिमेंट्स ऑफ़ इकॉनामिक्स' के उनके द्वारा संपन्न उर्दू अनुवाद एक अर्थशास्त्री के रूप में उनके प्रशिक्षण को दर्शाते हैं और यह विशेष अभिरुचि की अध्ययन-सामग्री है। लेकिन उनकी 'हाली, मुहिब्बे-वतन' और 'तालीमी खुत्बात' जैसी सामान्य अभिरुचि की किताबें उर्दू साहित्य की अमूल्य निधि हैं।

डॉ. जाकिर हुसैन के पूर्वज कई शताब्दियों पहले अफ़ग़ानिस्तान से आये और फरुखाबाद ज़िले (उ.प्र.) के एक छोटे-से गाँव पिटौरा में बस गये। उनका जन्म हैदराबाद (आंध्र) में 1897 ई. में हुआ, जहाँ उनके पिता वकालत करते थे। उनकी आरंभिक शिक्षा इटावा में हुई। तत्पश्चात्, उन्होंने एम.ए.ओ. कॉलेज, अलीगढ़ में दाखिला लिया। 1920 ई. में जब वे स्नातक के विद्यार्थी थे, असहयोग आंदोलन अपने चरम पर था। उस समय अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय ब्रिटिश संरक्षण की धूप में तप रहा था, और इसका मुख्य उद्देश्य अंग्रेज़ सरकार की सेवा के लिए मुसलमान छात्रों को तैयार करना था। मुहम्मद अली और अबुल कलाम आज़ाद जैसे मुस्लिम राष्ट्रवादी नेताओं ने विश्वविद्यालय परिसर का दौरा किया और विद्यार्थियों को जागृत किया। जामिया मिल्लिया इस्लामिया के नाम से एक समानांतर शिक्षण संस्था स्थापित की गयी। जाकिर हुसैन उन पहले व्यक्तियों में से थे जिन्होंने इस चुनौती को स्वीकार किया और अलीगढ़ छोड़कर जामिया का रास्ता लिया। उन्होंने वहाँ दो वर्ष तक पढ़ाया। 1923 ई. वे अपनी शिक्षा पूरी करने जर्मनी चले गये, जहाँ बर्लिन विश्वविद्यालय से उन्होंने पी एच डी की उपाधि प्राप्त की। भारत वापस लौटने पर, यद्यपि वे गांधी जी के प्रभाव में थे, लेकिन उन्होंने राजनीतिक

आंदोलन में भागीदारी के बजाय शिक्षा के कार्य में अपना समय लगाने का निर्णय लिया। अतएव उन्होंने 1926 ई. में जामिया का प्रभार सम्हाल लिया और इसके कुलपति के रूप में 1948 ई. तक कार्य किया। अपने इस कार्यकाल के दौरान वे सेवाग्राम में गांधी जी के हिंदुस्तानी तालीमी संघ की गतिविधियों से जुड़े और राष्ट्रीय शिक्षा-पद्धति का स्वरूप निर्धारित करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान किया। 1937 ई. में गांधी जी ने जब बेसिक शिक्षा सिद्धांत का प्रतिपादन किया, डॉ. जाकिर हुसैन ने कार्यकेंद्रित शिक्षा की अवधारणा के प्रचार-प्रसार में नेतृत्वकारी भूमिका अदा की।

भारत की स्वतंत्रता के बाद उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कुलपति (1948-57), राज्यसभा सदस्य (1952-57), बिहार के राज्यपाल (1957-62) और भारत के उपराष्ट्रपति (1962-67) के महनीय दायित्वों का गरिमापूर्वक निर्वहन किया। 'द डायनमिक यूनिवर्सिटी' और 'एजुकेशनल रीकंस्ट्रक्शन इन इंडिया' किताबें इसी दौरान लिखी गयीं। राष्ट्र के लिए विशिष्ट सेवाओं के लिए उन्हें 1963 ई. में 'भारत रत्न' के सर्वोच्च सम्मान से विभूषित किया गया। मई, 1967 में वे भारत के राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। 1969 में उनका देहांत हो गया।

गांधीजी के तीव्र अनुयायी होने के कारण उनके गद्य में गांधीजी का प्रभाव लक्षित होता है। उनकी उर्दू हिंदुस्तानी के निकट है और हिंदी व उर्दू की सामान्य भूमि तैयार करती है। यहाँ संकलित गद्य-रचना में शब्दों की मितव्ययिता और एकाग्रता है। इसकी भाषा-शैली में लेखक की निजी छाप और बोली-बानी का संस्पर्श स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। आम बोलचाल के शब्दों को संपूर्णता के साथ भाषा में स्वायत्त करने की इस विशेषता ने डॉ. जाकिर हुसैन की एक लोकप्रिय गद्यकार के रूप में पहचान बनायी।

अग्रलिखित कहानी एक सामी लोककथा का उर्दू रूपांतर है और इसमें सच्चे प्रेम की भावना का निदर्शन किया गया है, जैसा कि इसके शीर्षक से ही स्पष्ट है।

UNIT III

सच्ची मुहब्बत

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
1	جنگل ہی جنگل / : “जंगल के सिवा कुछ भी नहीं”		
	مچھیرا	मछेरा	पुरुषो. मछेरा
	جوان	जवान	विशे. जवान, युवक
	گڈریا	गड़रिया	पुरुषो. गड़रिया, स्त्रि. गड़रनी
	چرانا	चराना	म.क्रि. चराना
	بھولا بھالا	भोला भाला	विशे. भोला भाला, मासूम
	شہزادہ	शहज़ादा	पुरुषो. शहज़ादा, राजकुमार स्त्रि. शहज़ादी, राजकुमारी
	(کے) نزدیک	(के) नज़दीक	(की) राय में
	برابری کرنا	बराबरी करना	म.क्रि. बराबरी करना
14	اس غریبی میں شادی کیا ہوگی / : “जब हम इतने ग़रीब हैं तो हमारी शादी कैसे हो सकती है।		
	گزارا ہونا	गुज़ारा होना	अ.क्रि. गुज़ारा होना

سچی محبت

جنگل ہی جنگل^۱ تھے اور پھر پہاڑیاں ہی پہاڑیاں۔
 ساتویں جنگل کے پیچھے اور ساتویں پہاڑی کے پرے ایک
 پھیرا رہتا تھا۔ جوان اور خوب صورت۔ وہیں ایک گڈریا رہتا
 تھا۔ اُس کی ایک بیٹی تھی، جیسے چاند کا ٹکڑا۔ یہ بیٹی بھیریں
 چرایا کرتی تھی۔ غریب اور بھولی بھالی تھی، جیسی اُس کی بھیریں۔
 دونوں کو ایک دوسرے سے محبت ہو گئی۔ لڑکی کی نظر میں
 پھیرا کسی شہزادے سے کم نہ تھا اور پھیرے کے نزدیک
 کوئی شہزادی اُس غریب لڑکی کی برابری نہ کرتی تھی، مگر
 تھے دونوں بہت غریب۔ پھیرا یہی سوچا کرتا کہ اس غریبی
 میں شادی کیا ہوگی^{۱۶}، ہو بھی گئی تو گزارا کیسے ہوگا۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	ایک مرتبہ	एक मर्तबा	क्रि.वि. एक बार
	آنکھ جھپکنا	आंख झपकना	स.क्रि. आंख झपकना
4	करोٹ بدل بدل کر رات کاٹنا	बेचैनी में नींद न आना/ बेचैनी से रात बिताना	
	آنسو بہانا	आंसू बहाना	स.क्रि. आंसू बहाना, रोना
6	رَب	रब	ईश्वर
	دھیان باندھنا	ध्यान बांधना	स.क्रि. अन्तर्ध्यान
10	دکھی کی	दुखी की	दुखी की बात
	دریا	दरिया	पुरुषो. नदी, समुन्द्र
13	دل ہی دل میں	हिल ही दिल में	मन ही मन में
	دُعا مانگنا	दुआ मांगना	स.क्रि. प्रार्थना करना
	مولا	मौला	पुरुषो. ईश्वर
	سُنہری	सुनहरी	विशे. सुनहरी
18	سُنہری... ہوں سُنہری/	“मछलियां सुनहरी हों, केवल सुनहरी”	
24	کوئی تین گھنٹے	कोई तीन घंटे	लगभग तीन घंटे
	زور لگانا	जोर लगाना	स.क्रि. जोर लगाना

اسی سوچ میں ایک مرتبہ رات بھر آنکھ نہ جھپکی۔
 کروٹیں بدل بدل کر اور آنسو بہا بہا کر ساری رات کاٹی۔
 اُس ربؑ کا دھیان باندھا جو پیتا میں یاد آتا ہے اور¹⁰
 دُکھی کی ضرور سنتا ہے۔ صبح مچھلیاں پکڑنے دریا پر پہونچا۔
 دریا میں جال پھینکا تو دل ہی دل میں دُعا مانگی: ”اے
 میرے مولا، آج تو جال بھر کے مچھلیاں دلوادے اور ہاں
 سنہری مچھلیاں ہوں سنہری، آنکھیں میرے کی ہوں، اور اُن
 کی ننھی ننھی ہڈیاں موتیوں کی ہوں۔ یہ سوچا اور جال
 پھینکا اور وہیں زمین پر لیٹ گیا۔ کوئی تین گھنٹے یوں²⁴
 ہی بڑا انتظار کرتا رہا۔ آنسو تھے کہ تھمتے نہ تھے۔ ساری
 زمین اُس کے گرم گرم آنسوؤں سے گیلی ہو گئی تھی۔ آخر کار
 اُٹھا اور بھاری جال کو زور لگا کر کھینچا تو جال بھرا
 ہوا تھا، مگر پتھروں سے۔

اُس نے پھر دُعا مانگی: ”میرے پیارے خدا،

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	دفعہ	दफ़ा	स्त्रिया. बार
2	کچھ... ہوں /	“कम से कम मोती की हों।”	
	تر	तर	विशे. भीगा
	اب کے	अब के	इस बार
5	کھینچنے نہ کھینچتا تھا /	“खींचने से नहीं खिंचता था।”	
	سڑا	सड़ा	विशे. सड़ा-गला
	گلا	गला	विशे. गला
	چڑی	चिड़ी	स्त्रिया. चिड़िया
	خاموش ہونا	ख़ामोश होना	अ.क्रि. शान्त होना
	(سے) رخصت ہونا	(से) रुख़सत होना	अ.क्रि. विदा होना
14	پانی... پھیلائے /	“पानी में जाल फैलाये”	

اس دفعہ تو جال بھر دے سنہری پھیلوں کا، جن کی آنکھیں
 ہیرے کی ہوں اور جن کی ننھی ننھی بڈیاں کچھ نہیں تو
 موتی کی تو ہوں؟ یہ کہہ کر پھر دوسری مرتبہ جال دریا
 میں پھینکا اور زمین پر لیٹ گیا۔ کوئی نو گھنٹے وہیں
 بیٹا رہا۔ ساری زمین اُس کے آنسوؤں سے تر ہو گئی۔
 پھر اٹھا۔ اب کے جال اتنا بھاری تھا کہ کھینچنے نہ کھینچتا
 تھا۔ مگر اُس میں نکلا کیا؟ سڑی گلی لکڑی کا ایک
 بہت بڑا ٹکڑا۔

اندھیرا ہونے لگا۔ چڑیاں اپنا شام کا گیت گا کر
 خاموش ہو چکی تھیں۔ سورج بھی زمین سے رخصت ہو چکا
 تھا۔ پھیرے کی آنکھوں میں پسند تھی مگر دریا کے کنارے
 پھیرا اپنی جگہ کھڑا تھا، پانی میں اپنا جال پھیلائے¹⁴۔ تیسری
 دفعہ جو جال کھینچا تو معلوم ہوا کہ جال ایسا ہلکا ہو گیا ہے جیسے
 مکڑی کا جالا۔ اوپر چاند چمک رہا تھا۔ اُس کی روشنی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	دریائی گھاس	दरयाई घास	स्त्रियो. नदी की घास
	سونا	सोना	पुरुषो. सोना, स्वर्ण
	فرشته	फ़रिश्ता	पुरुषो. देवदूत
	پے	पर	पुरुषो. पंख
	تہہ	तह	स्त्रियो. अंदर
	قصور	कुसूर	पुरुषो. दोष
	سزا	सज़ा	स्त्रियो. सज़ा
9	اللہ میاں	अल्लाह मियां	मियां; सम्मान या दया सूचक सम्बोधन
	آدم اور حوا	आदम और हव्वा	आदम और हव्वा
	چوک	चूक	स्त्रियो. चूक, ग़लती
	باغ عدن	बागे अदन	अदन का बाग़
	ہم دم	हमदम	विश. दोस्त
	منع کرنا	मना करना	स.क्रि. मना करना
	نام کو بجا لگانا	नाम को बड़ा लगाना	नाम को बड़ा लगाना, अपमानित करना

میں پچھیرے نے دیکھا کہ سارا جال چاندی کا ہو گیا ہے اور اُس کے اندر جو دریاؤں گھاس ہے وہ ساری سونے کی ہے۔

اُس سنہری گھاس پر ایک ننھا سا فرشتہ لیٹا تھا۔ اُس کے پر موتی کی طرح چمک رہے تھے۔ فرشتے نے پچھیرے سے کہا: "میں اس دریا کی تہ میں لاکھوں سال سے پڑا تھا۔ لاکھوں سال سے، جب سے دُنیا بنی تھی اُس وقت سے۔ میں نے کوئی قصور نہیں کیا تھا، جس کی سزا میں اللہ میاں نے مجھے یہاں بھیجا ہو۔ مجھے تو دیس نکالا ملا تھا، آدم اور حوا کی چوک پر کیونکہ اُنھوں نے باغِ عدن میں مجھے تو ہم دم بنایا نہیں، سانپ کو بنایا۔ پھر اُس پیڑ کا پھل کھا کر جس سے اُنھیں منع کیا گیا تھا، میرے نام کو بھی بٹا لگایا۔ اسی وجہ سے وہ بھی نکالے گئے اور میں بھی نکالا گیا کیونکہ میں اُن کی بچی محبت کا فرشتہ تھا۔ یہی بات

- | क्र. | उर्दू | देवनागरी | अर्थ |
|------|-----------------------|--|---------------------------|
| 1 | ساڻپ کی سی محبت / | “सांप जैसी मोहब्बत”, सांप जैसा प्रेम | |
| | بگاڑنا | बिगाड़ना | स.क्रि. बिगाड़ना |
| | پاک | पाक | विशे. पाक, शुद्ध, पवित्र |
| 4 | بہن / | शाब्दिक अर्थ “बस, बहुत ज़्यादा” यहां तात्पर्य “संक्षेप में” से है | |
| | حرص | हिर्स | स्त्रियों. लालच |
| | ہوس | हवस | स्त्रियों. डच्छ |
| | بخشنا | बख़्शना | स.क्रि. देना |
| | (کو) نصیب ہونا | (को) नसीब होना | अ.क्रि. (को) प्राप्त होना |
| | شیش محل | शीश महल | पुरुषों. शीशों का महल |
| | تا کہ | ताकि | सह. ताकि |
| | تکلیف اٹھانا | तकलीफ़ उठाना | स.क्रि. कष्ट उठाना |
| 15 | تا کہ ... نہ اٹھائے / | ताकि में उसे हमेशा खुश रख सकूँ और ऐसा कर दूँ कि वह फिर किसी चीज़ को न तरसे और भूख-प्यास का कष्ट उठाये। | |
| 16 | دھن / | संस्कृत और | |
| | دولت / | फ़ारसी शब्द हैं, दोनों के अर्थ धन सौभाग्य हैं। उर्दू में ये एक साथ इस्तेमाल होते हैं | |

تو ہے کہ آدمی اب سانپ کی سی محبت کرتے ہیں، وہ محبت جو سب کو بگاڑ دیتی ہے۔ وہ جو پہلی محبت تھی، سچی، پاک محبت، اُسے سب نے چھوڑ دیا ہے۔ بس حرص ہے اور ہوس۔ پیارے بچھیرے! اب پھر کہیں مجھے اس گدے پانی میں نہ ڈال دینا۔ مجھے اپنے ساتھ لے چل، اپنی پیاری گڈرنی کے پاس لے چل۔ میں تجھے وہ خوشی بخشوں گا جو کسی کو نصیب نہ ہوئی ہوگی۔
 بچھیرا بولا: "ایک شپیش محل بنادو گے، میری پیاری گڈرنی کے لیے۔ کیا مجھے بہت سا سونا چاندی دے دو گے، تاکہ میں اُسے ہمیشہ خوش رکھ سکوں اور ایسا کر دوں کہ وہ پھر کسی چیز کو نہ ترسے اور بھوک پیاس کی تکلیف نہ اٹھائے۔"¹⁵
 فرشتہ بولا: "محبت اور خوشی کے لیے محلوں کی ضرورت نہیں۔ محبت نہ بھوک کو جانتی ہے، نہ دھن دولت کو پہچانتی ہے۔ بھوک بھی خدا کی طرف سے سزا ہے اور سونے چاندی کا لالچ بھی اور یہ سزا اُس نے آدمیوں کو اس لیے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	بھولا	भोला	विशे. भोला-भाला
	انداز	अंदाज़	पुरुषो. ढंग
	آنا	(की) समझ में आना	(की) समझ में आना
	سچائی	सच्चाई	स्त्रियों. सच्चाई
	جوش	जोश	पुरुषो. जोश, उत्तेजना
	سینے سے لگانا	सीने से लगाना	छाती से लगाना
7	ہمیشہ کو /	हमेशा को / हमेशा के लिए	
	دل میں اترنا	दिल में उतरना	दिल में उतरना
9	ناچاندی... گھاس کا /	“उसने न चांदी के जाल का न सोने की घास	
	का ध्यान दिया”		
10	ساتھ لیے /	अपने साथ लेकर	

دی ہے کہ پہلے محبت کرنے والوں نے محبت کے نام کو بتا
لگایا تھا۔

فرشتے نے یہ بات کچھ ایسے بھولے انداز سے کہی کہ
مجھیرے کی سمجھ میں آگئی۔ اُس نے اُس فرشتے کو ایسی سچائی
اور ایسے جوش کے ساتھ پینے سے لگایا کہ وہ ہمیشہ کو اُس
کے دل میں اُتر گیا۔ نہ چاندی کے جال کا خیال کیا اور نہ
سونے کی گھاس کا⁹۔ سب دریا میں ڈال دیا اور اپنی گڈرنی
کا دھیان ساتھ لیے گھر کو لوٹا۔¹⁰

(ڈاکٹر ذاکر حسین)

प्रेमचंद

उर्दू एवं हिंदी के शीर्षस्थ कथाकार मुंशी प्रेमचंद (1880-1936 ई.) पर यहाँ संकलित आलेख उर्दू के जाने माने आलोचक डॉ. कमर रईस (मुसाहिब अली ख़ाँ) द्वारा लिखा गया है। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग में अध्यापन कार्य किया। 1932 ई में शाहजहाँपुर (उ.प्र.) में जन्मे मुसाहिब अली की शिक्षा आगरा और लखनऊ में हुई। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में उन्होंने प्रेमचंद पर अपना शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया, जहाँ से 1958 ई. में उन्हें पी एच डी की उपाधि प्रदान की गयी। उन्होंने प्रेमचंद के साहित्यिक निबंधों और प्रेमचंद पर विद्वत्तापूर्ण लेखों का संपादन भी किया। उन्होंने सोवियत संघ के ताशकंद विश्वविद्यालय में पहले 1962 तथा फिर 1965 में उर्दू भाषा एवं साहित्य का शिक्षण कार्य किया।

अग्रलिखित आलेख में, जो कि मुख्यतः जीवनीपरक है, प्रेमचंद की प्रमुख कथा-कृतियों की पृष्ठभूमि पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है। यह आलेख विशेष रूप से इस चयन के लिए लिखा गया है। इसकी भाषा अनलंकृत, सरल एवं प्रांजल है, और इसका गद्य तीव्रता एवं तार्किकता के साथ आगे बढ़ता है।

UNIT IV
प्रेमचन्द

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
2	لمہی منشی	लम्ही मुंशी	गांव का नाम विशे. सम्मान सूचक शब्द, लेखक
4	عجائب لال ادب	अजाइव लाल अदब	पुरुषो. साहित्य, अच्छे स्वभाव
7	پہلے... نام سے / مشہور	“पहले नवाव राय नाम से फिर प्रेमचन्द नाम से” मशहूर	विशे. मशहूर, प्रसिद्ध, लोकप्रिय
	تعلیم	तालीम	स्त्रियो. शिक्षा
	مولوی	मौलवी	विशे. मौलवी
	فارسی	फारसी	स्त्रियो. फारसी
	حاصل کرنا	हासिल करना	स.क्रि. प्राप्त करना
	سبق	सबक	पुरुषो. पाठ
	مخت	मेहनत	स्त्रियो. मेहनत, कठिन परिश्रम
	دور (سے)	दूर भागना	बचना, भाग जाना
	بھاگنا		

پریم چند

بنارس سے چار پانچ میل دور لمہی نام کا ایک چھوٹا سا گاؤں ہے۔ اسی گاؤں میں ۳۱ جولائی ۱۸۷۶ء کو منشی عجائب لال کے گھر میں ایک بچہ پیدا ہوا جس کا نام دھنپت رائے رکھا گیا اور جو بڑا ہو کر ہندوستانی ادب کی دنیا میں پہلے نواب رائے اور پھر پریم چند کے نام سے مشہور ہوا۔

آٹھ سال کی عمر تک دھنپت رائے کی تعلیم اسی گاؤں میں ہوئی۔ انھوں نے سب سے پہلے ایک مسلمان مولوی سے اردو اور فارسی کی تعلیم حاصل کی۔ وہ اکثر سبق رٹنے کی محنت سے دور بھاگتے تھے۔ کھیتوں اور جنگلوں

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	(کی) سیر کرنا	(की) सैर करना	स.क्रि. (की) सैर करना
	چرانا	चुराना	स.क्रि. चुराना
	گنا	गन्ना	पुरुषां. गन्ना
	ریل گاڑی	रेलगाड़ी	स्त्रियां. रेलगाड़ी
	تماشا	तमाशा	पुरुषां. तमाशा
	پری	परी	स्त्रियों. परी
	شوق سے	शौक से	क्रि.वि. शौक से
	والد	वालिद	पुरुषां. पिता
	ڈاک خانہ	डाक खाना	पुरुषां. डाक खाना, डाक घर
	کلرک	क्लर्क	पुरुषां. क्लर्क
	تبادلہ	तबादिला	पुरुषां. स्थानान्तरण
12	ان کا... ہوا / مشن اسکول	“उनका स्थानान्तरण गोरखपूर हुआ था” मिशन स्कूल	मिशन स्कूल
	جماعت	जमाअत	स्त्रियां. कक्षा
15	چھٹی لکھی گئی / تاریخ	“उनका नाम छठी कक्षा में लिखा गया” तारीख	स्त्रियां. इतिहास, दिनांक
	دیکھی	दिलचस्पी	स्त्रियां. रुचि
	حساب	हिसाब	पुरुषां. गणित
	کمزور	कमजोर	विशे. कमजोर
	مضمون	मज़मून	पुरुषां. विषय
	ناکام ہونا	नाकाम होना	अ.क्रि. असफल होना
	ناول	नाविल	पुरुषां. उपन्यास
	داستان	दास्तान	स्त्रियां. कथा
	بعض	वाज़	विशे. कुछ
25	/ڈکٹر / طویل	“चार्ल्स डिकेंज, उन्नीसवीं शताब्दी के अंग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यासकार (1812-70)” तवील	विशे. लम्बा, दीर्घ
	قصہ	किस्सा	पुरुषां. कहानी
	خوبی سے	खूबी से	क्रि.वि. खूबी से
	بیان کرنا	बयान करना	स.क्रि. वर्णन करना
	مرضی	मर्ज़ी	स्त्रियां. इच्छा, स्वीकृति

کی سیر کرتے، چُرا کر گئے یا پھل کھاتے، یا پھر ریل گاڑی کا تماشا دیکھتے۔ اُن کی بوڑھی دادی رات میں پریوں اور شہزادوں کی کہانیاں سناتیں، جنہیں وہ شوق سے سنتے تھے۔

دھنیت رائے کے والد ڈاک خانے میں کلرک تھے۔ جب اُن کا گورکھ پور تبادلہ ہوا تو وہاں ایک مشن اسکول کی چھٹی جماعت میں اُن کا نام لکھا دیا گیا۔ فارسی، انگریزی اور تاریخ سے پریم چند کو دلچسپی تھی۔ لیکن حساب میں کمزور تھے اور ہمیشہ اسی مضمون میں ناکام ہوتے تھے۔ انگریزی ناول اور اردو کی داستانیں بہت شوق سے پڑھتے تھے۔ اُن کے بعض دوستوں نے لکھا ہے کہ ڈکنز کے بعض طویل ناولوں کے قسطے وہ بڑی خوبی سے بیان کرتے تھے۔

۱۸۹۶ء میں جب دھنیت رائے کی عمر پندرہ

سال تھی، اُن کے والد نے اُن کی مرضی کے بغیر اُن کی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	زمیندار	ज़मींदार	पुरुषो. ज़मींदार
	جاہل	जाहिल	विशे. अनपढ़, निरक्षर, गंवार
	بد صورت	बदसूरत	विशे. कुरूप
	چند	चंद	विशे. कुछ
	چل بسا	चल बसना	अ.क्रि. मृत्यु होना
	ذمّے داری	ज़िम्मेदारी	स्त्रियों. ज़िम्मेदारी
9	گھر کی... آڑی /	“परिवार की ज़िम्मेदारी	धनपत राय पर आ गयी”
	غربت	.गुर्वत	स्त्रियों. दीनता
	میٹرک	मैट्रिक	पुरुषो. मैट्रिक
	امتحان	इम्तेहान	पुरुषो. परीक्षा
13	درجہ	दर्जा	पुरुषो. “श्रेणी, ग्रेड, पोज़ीशन”
	پاس کرنا	पास करना	स.क्रि. उत्तीर्ण होना
	ماہانہ	माहाना	क्रि.वि. मासिक
	مدرس	मुदरिस	पुरुषो. अध्यापक
	ٹریننگ	ट्रेनिंग	स्त्रियों. ट्रेनिंग
18	الہ آباد	इलाहाबाद	
	داخل ہونا	दाखिल होना	अ.क्रि. प्रवेश करना
	شوق ہونا	शौक होना	अ.क्रि. रुचि होना
	اسرارِ معابد	असरारे मआबिद	गुफाओं के रहस्य
	رسالہ	रिसाला	पुरुषो. पत्रिका
	شائع ہونا	शाएं होना	अ.क्रि. प्रकाशित होना

شادی کر دی۔ بیوی ایک زمیندار کی بیٹی تھی لیکن جاہل، بد صورت اور موٹی۔ دھنپت رائے کو اُس سے کبھی محبت نہ ہو سکی اور چند سال کے بعد وہ ہمیشہ کے لیے اُس سے الگ ہو گئے۔ ۱۸۹۷ء میں اُن کے والد چل بے اور گھر کی ذمہ داری دھنپت رائے کے سر پر آپڑی^۹۔ اس زمانے میں وہ پڑھاتے بھی تھے اور پڑھتے بھی۔ کبھی کبھی غربت اتنی بڑھتی کہ انھیں اپنے کپڑے اور کتابیں بیچنی پڑتیں۔ آخر کار ۱۸۹۹ء میں انھوں نے میٹرک کا امتحان دوسرے درجے میں پاس کر لیا۔ اس کے بعد وہ پندرہ روپے ماہانہ پر ایک اسکول میں مدرس ہو گئے۔ ۱۹۰۲ء میں وہ ٹریننگ کے لیے ^{۱۸}الہ آباد کے ایک کالج میں داخل ہو گئے۔ یہاں پہنچ کر انھیں کتابیں لکھنے کا شوق ہوا اور اُن کا پہلا ناول "اسرارِ معابد" بنارس کے ایک رسالے میں شائع ہونا شروع ہوا۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	تنخواہ	तन्ख्वाह	स्त्रियां. वेतन, पारिश्रमिक
2	اردو کے ... ہو گئی /	उर्दू की मशहूर पत्रिका 'ज़माना' के संपादक	
		दयानारायन निगम से उनकी दोस्ती हो गई।	
	پابندی کے ساتھ	पाबंदी के साथ	क्रि.वि. नियमित रूप से
	جوانی	जवानी	स्त्रियां. जवानी
	تندرست	तंदरुस्त	विशं. स्वस्थ
	عشق کرنا	इश्क़ करना	स.क्रि. इश्क़ करना, प्रेम करना
	بیوہ	बेवा	विशं. विधवा
	زندہ	ज़िन्दा	विशं. जीवित
9	سب ڈپٹی انسپکٹر آف اسکولس /	सब-डिप्टी इन्स्पेक्टर्स ऑफ स्कूल्स	

مئی ۱۹۰۵ء میں دھپت رائے کا تبادلہ کانپور ہو گیا۔
 اُن کی تنخواہ اب پچیس روپے ہو گئی تھی۔ کانپور میں اُردو
 کے مشہور رسالے ”زمانہ“ کے ایڈیٹر دیا نرائن نگم سے اُن کی
 دوستی ہو گئی اور وہ پابندی کے ساتھ ”زمانہ“ میں لکھنے
 لگے۔

یہ دھپت رائے کی جوانی کا زمانہ تھا۔ وہ تندرست
 اور خوبصورت تھے۔ اسی زمانے میں کئی سال تک ایک
 لڑکی سے اُنھوں نے عشق بھی کیا۔ لیکن کسی وجہ سے اُس
 سے شادی نہیں ہو سکی۔ تب اُنھوں نے سولہ برس کی
 ایک بیوہ سے دوسری شادی کر لی جس سے اُن کے تین
 بچے پیدا ہوئے جو آج بھی زندہ ہیں۔

فروری ۱۹۲۱ء تک دھپت رائے، جو اب پریم چند
 کے نام سے مشہور ہو گئے تھے، ہمپور، بستی اور گورکھپور
 میں مدرس اور سب ڈپٹی انسپکٹر آف اسکولز رہے۔ ۱۹۰۹ء

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	مجموعہ	मजमूआ	पुरुषो. संग्रह
	سوز وطن	सोजे-वतन	पुरुषो. देशभक्ति/सोजे/: “जलने का जज़्बा”: /वतन/ अपना देश, राष्ट्र
	ضبط کرنا	जब्त करना	स.क्रि. जब्त करना
	وطن پرستی	वतन परस्ती	स्त्रियों. देशभक्ति
	قومی بیداری	कौमी वेदारी	स्त्रियों. राष्ट्रीय जागृति
	پیغام	पैगाम	पुरुषो. संदेश, उद्देश्य
	فرضی نام	फर्ज़ी नाम	पुरुषो. फर्ज़ी नाम
	ادیب	अदीब	पुरुषो. साहित्यकार, लेखक
	حیثیت	हैसियत	स्त्रियों. हैसियत
	افسانہ	अफ़साना	पुरुषो. लघुकथा
	شمالی	शिमाली	विशे. उत्तरी
	آزادی	आज़ादी	स्त्रियों. आज़ादी, स्वतंत्रता
	تحریک	तहरीक	स्त्रियों. आन्दोलन
	رہنمائی	रहनुमाई	स्त्रियों. नेतृत्व
	عدم تعاون	अदम तआवुन	पुरुषो. असहयोग
	کامیاب	कामयाब	विशे. सफल
	ملازمت	मुलाज़मत	स्त्रियों. नौकरी
	استغفار دینا	इस्तिफ़ा देना	स.क्रि. त्याग पत्र देना
	بے باکی	वेबाकी	स्त्रियों. निर्भीकता

میں جب اُن کی کہانیوں کا پہلا مجموعہ "سوزِ وطن" شائع ہوا تو سرکار نے اُسے ضبط کر کے جلا دیا۔ اس لیے کہ اُس میں وطن پرستی اور قومی بیداری کا کھلا پیغام تھا۔ اس کے بعد دسمبر ۱۹۱۱ء سے وہ پریم چند کے فرضی نام سے لکھنے لگے۔

۱۹۲۱ء تک پریم چند ہندی اور اُردو کے ادیب کی حیثیت سے سارے ملک میں مشہور ہو چکے تھے۔ اُن کے ناول اور افسانے شمالی ہندستان میں بہت پسند کیے جاتے تھے۔ یہ وہ زمانہ تھا جب ملک میں آزادی کی تحریک بڑھ رہی تھی۔ مہاتما گاندھی کی رہنمائی میں عدم تعاون اور ستیہ گرہ کی تحریک کامیاب ہو رہی تھی۔ ہزاروں ہندوستانی سرکاری ملازمتوں سے استعفا دے رہے تھے۔ پریم چند نے بھی ۱۶ فروری ۱۹۲۱ء کو استعفا دے دیا۔

اس کے بعد پریم چند زیادہ آزادی اور بے باکی کے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	ماڻھوري	माधुरी	स्त्रियो. माधुरी
	هنس	हंस	पुरुषो. हंस
	جاري کرنا	जारी करना	स.क्रि. जारी करना
	خدمت	खिदमत	स्त्रियो. सेवा
	سادہ	सादा	विशे. सादा, साधारण
	مذہب	मज़हब	पुरुषो. धर्म
	ذات پات	जात पात	स्त्रियां. जाति-पात
	رسم و رواج	रस्मो रिवाज	पुरुषो. रिति रिवाज
			बहु.
	ادا کرنا	अदा करना	स.क्रि. अदा करना
	انکار کرنا	इनकार करना	स.क्रि. इनकार करना
14	بچہ بن کر / : बच्चा बन कर		
	رشتے دار	रिश्तेदार	पुरुषो. सम्बन्धी
	(سے) باز آنا	(से) बाज़ आना	अ.क्रि. (से) त्याग देना, छोड़ देना
	کبھی کبھار	कभी कभार	क्रि.वि. कभी-कभार
	محفل	महफ़िल	स्त्रियो. सभा, गोष्ठी

ساتھ لکھنے لگے۔ اب وہ اردو کے علاوہ ہندی میں بھی لکھنے لگے۔ کئی سال تک لکھنؤ کے ایک ہندی رسالے مادھوری کے ایڈیٹر رہے۔ پھر ۱۹۳۰ء میں اپنا ایک ہندی رسالہ ہنس جاری کیا۔ اس رسالے نے ہندوستانی ادب کی بہت خدمت کی۔ پریم چند کی گھریلو زندگی بڑی سادہ تھی۔ وہ مذہب، ذات، پات اور رسم و رواج کو زیادہ نہیں مانتے تھے۔ جب اُن کی لڑکی کملا کی شادی ہوئی تو انھوں نے ایک ہندو رسم ”کنیادان“ ادا کرنے سے انکار کر دیا۔ اس پر بہت جھگڑا ہوا، مگر وہ نہ مانے۔ اپنے بچوں کو وہ اپنا دوست سمجھتے تھے اور اکثر بچہ بن کر اُن کے کھیلوں میں حصہ لیتے تھے۔ اُن کے دوست اور رشتے دار اکثر اُن سے روپیہ یا اُن کے کپڑے وغیرہ لے جاتے اور کبھی واپس نہ کرتے۔ اس پر اُن کی بیوی اُن سے لڑتیں جھگڑتیں، لیکن وہ باز نہ آتے۔ کبھی کبھار دوستوں کی محفل میں شراب بھی پی لیتے۔ اُن کا

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
2	شیورانی اُکسانا	शिवरानी उकसाना	स.क्रि. उकसाना
4	شری پت رائے مصور اجنٹا سینی ٹون فلم کمپنی	श्रीपत राय मुसव्विर अजन्ता सिनीटोन फिल्म कम्पनी	विशे. कलाकार अजनता सिनेटोन फिल्म कम्पनी
	سالانہ	सालाना	विशे. वार्षिक
8	فلمی/ : /فلمی/	वि. फिल्म से सम्बन्धित	
	راس آنا	रास आना	अ.क्रि. स्वीकार करना
	ڈائریکٹر	डायरेक्टर	डायरेक्टर, निर्देशक
	پروڈیوسر	प्रोड्यूसर	प्रोड्यूसर, निर्माता
	عشقیہ	ईशक्या	विशं. प्रेमपूर्ण, रूमानी
	شہرت	शुहरत	स्त्रियां. शोहरत, प्रसिद्धि
	فائدہ اٹھانا	(से) (سے) فایدا उठाना	स.क्रि. (से) फ़ायदा उठाना
	کثرت	कसरत	स्त्रियां. बाहुल्य, अधिकता
	بے احتیاطی	बे इहतियाती	स्त्रियां. असावधानी
	صحت	सिहहत	स्त्रियां. स्वास्थ्य
	جگر	जिगर	पुरुषों. जिगर, यकृत
	تکلیف	तकलीफ़	स्त्रियां. कष्ट

رہن سہن اور لباس بہت سادہ تھا۔ اُنھوں نے اپنی بیوی شہورانی^۲ کو بھی لکھنے پڑھنے پر اُکسایا، جن کی کہانیوں کے کئی مجموعے شائع ہو چکے ہیں۔ اُن کے بڑے لڑکے شری پت رائے^۴ ایک مصوّر ہیں۔ اُنھوں نے ایک مسلمان لڑکی زہرہ سے شادی کی۔ چھوٹا لڑکا امرت رائے ہندی کا مشہور ادیب ہے۔

۱۹۳۴ء میں پریم چند کو اجنتا سینی ٹون فلم کمپنی نے نو ہزار روپے سالانہ تنخواہ پر بمبئی بلایا۔ بمبئی پہنچ کر اُنھوں نے کئی فلمی کہانیاں لکھیں۔ لیکن وہاں کی زندگی اُنھیں راس نہ آئی۔ ڈائریکٹر اور پروڈیوسر سستی عشقیہ کہانیاں چاہتے تھے اور پریم چند کی شہرت سے فائدہ اٹھانا چاہتے تھے۔ اس کے لیے وہ تیار نہ ہوئے اور ایک سال بعد بنارس واپس آ گئے۔

کام کی کثرت اور کھانے پینے میں بے احتیاطی کی وجہ سے اُن کی صحت حراب ہو گئی۔ پیٹ اور جگر کی تکلیف

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	صدی	सदी	स्त्रियों. शताब्दी
	ممتاز	मुम्ताज़	विशे. मशहूर, प्रसिद्ध
	مغربی	मग़िबी	विशे. पाश्चात्य
	معیار	मे'यार	पुरुषों. स्तर
	عوام	अवाम	पुरुषों. जनता
	مزدور	मज़दूर	बहु. पुरुषों. मज़दूर
	متوسط طبقہ	मुतवस्सित तब्क़ा	मध्यम वर्ग
	موضوع	मौजूअ	पुरुषों. विषय
10	/ اس سلسلے میں / : "इस संदर्भ में"		
	خیالات	ख्यालात	पुरुषों. खयाल (विचार) का बहुवचन
12	/ ترقی پسند تحریک / : प्रगतिशील आंदोलन, एक मार्क्सवादी साहित्यिक आंदोलन जिसने भारतीय साहित्य को प्रभावित किया ।		
	متاثر ہونا	मुतास्सिर होना	अ.क्रि. प्रभावित होना
	ترقی	तरक्की	स्त्रियों. उन्नति, प्रगति
	خوش حالی	खुशहाली	स्त्रियों. सम्पन्नता, जिसका हाल अच्छा हो
	گوشہ عافیت	गोशए आफ़ियत	"सुरक्षित स्थान"
	ہیرو	हीरो	पुरुषों. हीरो, नायक
	منصوبہ	मंसूबा	पुरुषों. युक्ति, योजना

بڑھ گئی۔ آخر کار ۸ اکتوبر ۱۹۳۶ء کو وہ ہمیشہ کے لیے خاموش ہو گئے۔

پریم چند اس صدی کے چند ممتاز ہندوستانی ادیبوں میں سے ایک ہیں۔ انھوں نے اُردو اور ہندی زبان میں مغربی معیاروں کو سامنے رکھ کر کئی اچھے ناول اور افسانے لکھے۔ ہندوستانی عوام کے دکھ درد کو انھوں نے اپنا دکھ درد سمجھا اور پہلی بار اُردو اور ہندی میں کسانوں، مزدوروں اور متوسط طبقے کی زندگی کو ادب کا موضوع بنایا۔ اس سلسلے میں جہاتما گاندھی اور جواہر لال نہرو کے خیالات نے ہمیشہ ¹⁰ اُن کی رہنمائی کی۔ آخر عمر میں وہ ترقی پسند تحریک سے بھی متاثر ہوئے۔ وہ امریکی زندگی کی ترقی اور وہاں کی خوش حالی سے بھی متاثر تھے۔ اُن کے ایک ناول ”گوشہ عافیت“ کا ہیرو پریم شنکر کئی سال تک امریکہ میں رہ کر ہندوستان آتا ہے اور کسانوں کی خوش حالی کے نئے منصوبے بناتا ہے۔ وہ کسانوں کو اُن

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	مالک	मालिक	पुरुषो. मालिक
	کوشش کرنا	कोशिश करना	स.क्रि. कोशिश करना, प्रयत्न करना
	ڈراما	ड्रामा	पुरुषो. ड्रामा, नाटक
	انشائیہ	इंशाईया	पुरुषो. आलेख, निबंध
	شاہکار	शाहकार	विशे. कृति
	ترجمہ	तर्जुमा	पुरुषो. अनुवाद
	کامیابی	कामयाबी	स्त्रिया. सफलता
	پریم پچیسی	प्रेम पचीसी	पचीस प्रेम कहानियां
	پریم چالیسی	प्रेम चालीसी	चालीस प्रेम कहानियां
	زادِ راہ	ज़ादे राह	रास्ते की व्यवस्था
	واردات	वारदात	घटनाएं
	نمائندہ	नुमाइंदा	विशे. प्रतिनिधि
	گنودان	गऊदान	गाय का दान
	میدانِ عمل	मैदाने अमल	कर्म भूमि
	بہترین	बेहतरीन	विशे. उत्कृष्ट, सबसे अच्छा

کی زمین کا مالک بنادیتا ہے اور گاؤں والوں کی زندگی کو بہتر بنانے کی کوشش کرتا ہے۔

پریم چند نے ناول اور افسانوں کے علاوہ ڈرامے اور انشائیے بھی لکھے۔ کئی مغربی شاہکاروں کے ترجمے بھی کیے لیکن افسانہ اور ناول میں انھیں سب سے زیادہ کامیابی حاصل ہوئی۔ پریم پتھپی ، پریم چالپسی ، زادِ راہ اور واردات اُن کے افسانوں کے نمائندہ مجموعے ہیں۔ گنودان ، میدانِ عمل اور گوشہٴ عافیت اُن کے بہترین ناول کہے جاسکتے ہیں۔

(قمر رئیس)

प्रेमचंद : गोदान

प्रेमचंद को सार्वभौमिक रूप से आधुनिक भारत के महान् लेखक के रूप में स्वीकार किया जाता है। उन्होंने उर्दू एवं हिंदी दोनों भाषाओं में लिखा और वे समान रूप से दोनों भाषाओं के अग्रणी कथाकार माने जाते हैं।

प्रेमचंद से पहले उर्दू में कहानी विधा न होने के बराबर थी। हालाँकि उपन्यास मौजूद था लेकिन वह भी मध्यकालीन सामंतों के रोमांस एवं चमत्कारों पर आधारित था। प्रेमचंद उर्दू कथा-साहित्य को स्वप्नलोक और फैंटेसी से बाहर लेकर आये और उसे समकालीन जीवन की वास्तविकताओं से जोड़ा। शाहजादों और परियों की जगह अस्तित्व के लिए जूझते हुए आम स्त्रियों एवं पुरुषों ने ले ली। प्रेमचंद ने उर्दू और हिन्दी कथा-साहित्य को एक मौलिकता, सहानुभूतिपूर्ण ट्रीटमेंट और सामाजिक एवं राजनीतिक जागृति से संपन्न किया। उन्होंने अपनी तीक्ष्ण यथार्थदृष्टि से ग्रामीण भारत की त्रासदी और करुणा का चित्रांकन किया। उन्होंने दुःख और गरीबी में घिरे हुए आम लोगों के प्रति सहानुभूति व्यक्त की। कारण यह है कि उन्होंने अवाम की गंदगी के आवरण में छुपी हुई गरिमा और मानवता के प्रति निष्ठा एवं सम्मान को खुली आंखों से देखा था। तुर्गनेव की भांति वे सच्चे अर्थों में एक यथार्थद्रष्टा थे और मानव जाति के जीवित सत्य को उद्घाटित करने में उनकी विशेष रुचि थी। प्रेमचंद के आने के साथ उर्दू और हिन्दी कथा-साहित्य अपनी धरती से जुड़ गया।

प्रेमचंद के तीन आकलन अंग्रेजी में मौजूद हैं— मदन गोपाल की 'मुंशी प्रेमचंद: ए लिट्रैरी बायोग्राफी (बम्बई, 1964), हंसराज रहबर की 'प्रेमचंद : हिज़ लाइफ़ एंड वर्क' (दिल्ली, 1957) और इंद्रनाथ मदान की 'प्रेमचंद' (लाहौर, 1946) किताबें। 'गोदान' का जय रतन और पी लाल द्वारा किया गया अंग्रेजी अनुवाद (बम्बई, 1957) उपलब्ध है। एक अन्य अंग्रेजी अनुवाद केलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले के नियर ईस्टर्न लैंग्वेज्ज़ के गोर्डन रोडरमेल (Gordon Roadarmel) द्वारा यूनेस्को के लिए तैयार किया गया है। अंग्रेजी में

प्रेमचंद की कहानियों के तीन संग्रह अनुवाद के रूप में उपलब्ध हैं, यथा— गुर दयाल मलिक द्वारा अनूदित 'शॉर्ट स्टोरीज़ ऑफ़ प्रेमचंद' (बम्बई, 1946), 'ए हेंडफुल ऑफ़ व्हीट एंड अदर स्टोरीज़' (नई दिल्ली, 1955) और मदन गुप्ता द्वारा अनूदित 'द सीक्रेट ऑफ़ कल्चर एंड अदर स्टोरीज़' (बम्बई, 1960)। प्रेमचंद की अनेक कहानियाँ समय-समय पर अंग्रेज़ी अनुवाद के रूप में भारतीय तथा विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। इनके संदर्भ के लिए 'महफ़िल', वाल्यूम 1, नम्बर 2, में प्रकाशित कार्लो कोपोला की 'ए बिब्लियोग्राफी ऑफ़ प्रेमचंद' और 'महफ़िल' में ही प्रकाशित गोपीचंद नारंग की 'ए बिब्लियोग्राफी ऑफ़ उर्दू शार्ट स्टोरीज़ इन इंग्लिश ट्रांसलेशन' देखे जा सकते हैं।

सामान्यतया 'गोदान' को प्रेमचंद के शाहकार के रूप में स्वीकार किया जाता है। यह किसान जीवन की करुण कथा है। इसमें किसान और भूस्वामियों, जिन्हें अनेक शक्तियों का समर्थन प्राप्त है, के बीच के संघर्ष को उभारा गया है। यह उपन्यास खेती के काम से जुड़े लोगों को उनके कठिन परिश्रम, सहज उल्लास, शोषण एवं वेदना, कुंठाओं एवं आशाओं के साथ सजीव रूप में चित्रित करता है। प्रेमचंद की यथार्थवादी कलाचेतना का सर्वोत्कृष्ट रूप कुछ केंद्रीय पात्रों, विशेषतः होरी के चरित्रांकन में प्रकट होता है। होरी को प्रेमचंद के निजी जीवन के प्रतीक के रूप में लिया जा सकता है। हालांकि प्रेमचंद की प्रवृत्ति आदर्शोक्ति के ओर रही है लेकिन अपने रूप के स्तर पर नियंत्रित एवं अंतर्वस्तु के स्तर पर भ्रममुक्त यह उपन्यास एक यथार्थवादी कृति है।

इस रीडर के लिए चयनित गद्यांश होरी के बेटे गोबर और भोला की बेटी झुनिया के प्रच्छन्न प्रेम-संबंध को लेकर है। गर्भवती झुनिया, इस बात से डर कर कि अगर उसके बाप को इस रहस्य का पता चल गया तो वह उसे मार डालेगा, मदद के लिए गोबर के पास आती है। लेकिन इसके नतीजों से भयभीत गोबर छिपते-छिपाते गाँव से भाग जाता है। देर रात झुनिया होरी की झोंपड़ी तक जाती है लेकिन वह खेत पर गया होता है। झुनिया, होरी की पत्नी धनिया के सामने अपनी दशा-दुर्दशा का बखान कर देती है। वह होरी के पास भागती है। खिन्न और नाराज़ वे झुनिया को शरण देने के लिए तैयार नहीं होते। बहरहाल, धीरे-धीरे जैसे वे अपनी झोंपड़ी की ओर वापस लौटने को होते हैं, उनका इरादा बदलता है और उनकी घृणा, प्रेम का रूप ले लेती है। वे

झुनिया को उनके साथ रहने की अनुमति दे देते हैं, हालाँकि वे जानते हैं कि ऐसा करने पर वे पूरे गाँव से अलग-थलग पड़ जायेंगे।

प्रेमचंद ने एक अनलंकृत, सहज और तथ्यपरक गद्य लिखा। न उन्होंने फ़ारसीनिष्ठ संभ्रांत किस्म की उर्दू का व्यवहार किया, न ही पंडिताऊ हिंदी का। इसके बजाय उन्होंने उपन्यास की कथावस्तु के लिए उपयुक्त उत्तर भारत के करोड़ों लोगों के बीच बरती जाने वाली आम हिंदुस्तानी ज़बान को अपनाया जो उनके पात्रों के यथार्थ का साथ दे सके।

UNIT V
गोदान (गउदान)

क्र.	उर्दू ماگھ	देवनागरी माघ	पुरुषो.	अर्थ हिन्दी कलेण्डर का दसवां महीना (जनवरी-फरवरी)
	مہاوٹ	महावट	स्त्रियो.	महावट माघ महीने में जो वर्षा होती है।
	اندھیرا چھانا	अंधेरा छाना	अ.क्रि.	अंधेरा छाना
	جاڑا	जाड़ा	पुरुषो.	जाड़ा, सर्दी का मौसम
	برکھا	बरखा	स्त्रियो.	वर्षा ऋतु
6	/ایک تو جاڑوں کی رات دوسرے ماگھ کی برکھا/			/एक तो जाड़ों की रात दूसरे माघ की बरखा/
	موت کا	मौत का		मृत्यु जैसा
	سناٹا	सन्नाटा	पुरुषो.	सन्नाटा
	مینڈ	मेंड	स्त्रियो.	मेंड
	بھول جانا	भूल जाना	अ.क्रि.	भूल जाना
	کمبل	कम्बल	पुरुषो.	कम्बल
	تار تار	तार तार	विशे.	टुकड़े टुकड़े, फटा हुआ
	مرزئی	मिर्ज़ई	स्त्रियो.	जैकेट नुमा वस्त्र
	پیال	पियाल	पुरुषो.	पुआल
	دل بہلانا	दिल बहलाना	स.क्रि.	दिल बहलाना
	اُپلا	उपला	पुरुषो.	उपला
	سُلگانا	सुलगाना	स.क्रि.	सुलगाना
	پر	पर	सह.	किंतु
26	/ایک طرح سے/ : “एक प्रकार से”			
	جبراً	जबरन	क्रि.वि.	ज़बरदस्ती

گُودان

ماگھ کے دن تھے۔ تہاؤٹ لگ رہی تھی۔ اندھیرا
 چھایا ہوا تھا۔ ایک تو جاڑوں کی رات دوسرے ماگھ
 کی برکھا، موت کا سناٹا تھا۔ ہوری کھانا کھا کر مٹر کے
 کھیت کی مینڈ پر اپنی جھونپڑی میں لیٹا ہوا تھا۔ چاہتا
 تھا کہ ٹھنڈ کو بھول جائے اور سو رہے۔ مگر کبسل
 تار تار تھا۔ مرزئی پھٹی ہوئی تھی۔ پیال ٹھنڈ سے
 گیلا تھا۔ پسند نہیں آرہی تھی۔ تمباکو بھی نہ ملا کہ
 اس سے دل بہلاتا۔ اُپلا سلگایا تھا پر وہ بھی ٹھنڈ
 سے ٹھنڈا ہو گیا تھا۔ پانچ سال ہوئے یہ مرزئی
 بنوائی تھی۔ دھنیا نے ایک طرح سے جبراً بنوا

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	جوانی	जवानी	स्त्रियो. जवानी, यौवन
	کٹنا	कटना	अ.क्रि. व्यतीत करना
	اتنے میں	इतने में	क्रि.वि. इतने में
	یکایک	यकायक	क्रि.वि. अचानक
	سنائی دینا	सुनाई देना	अ.क्रि. सुनाई देना
	کان لگانا	कान लगाना	स.क्रि. चुपके से सुनना
	پٹواری	पटवारी	पुरुषो. पटवारी
	گھر والی	घर वाली	स्त्रियो. पत्नी, घर वाली
15	/ نہ جانے / : न जाने, कौन जाने, क्या जाने		
	نیت	नियत	स्त्रियो. इच्छा, इरादा, उद्देश्य
	ہزاروں	हज़ारों	विशे. हज़ारों
	لین دین کرنا	लेन देन करना	स.क्रि. लेन देन करना
	رشوت	रिश्वत	म्त्रियो. रिश्वत, घूस
21	/ پھر بھی نیت کا یہ حال / : फिर भी नीयत का ये हाल		
23	/ آپ / : सामान्यतः यह सर्वनाम “स्वयं” के लिए प्रयुक्त होता है। वर्तमान संदर्भ में इसका अर्थ है .. वे स्वयं”		

دمی تھی اور یہ کبل تو اُس کے جنم سے بھی پہلے کا ہے۔
 بچپن میں اپنے باپ کے ساتھ وہ اِس میں سوتا تھا۔
 جوانی میں گوبر کو لے کر اِس کبل میں اُس کے جاڑے
 کٹتے تھے۔ اور بڑھاپے میں آج وہی بوڑھا کبل اُس کا
 ساتھی ہے۔

اتنے میں یکایک اُسے بھونپڑی کے سامنے چڑیوں
 کی جھنکار سنائی دمی۔ اُس نے کان لگا کر سنا۔ ہاں
 کوئی ہے۔ پٹواری کی لڑکی ہوگی یا پنڈت کی گھر والی۔
 مٹر اکھاڑنے آئی ہوگی۔ نہ جانے کیوں ان لوگوں¹⁵
 کی نیت اتنی کھوٹی ہے۔ سارے گاؤں سے اچھا
 پہنتے ہیں۔ گھر میں ہزاروں روپے ہیں۔ لین دین کرتے
 ہیں۔ رشوت لیتے ہیں۔ پھر بھی نیت کا یہ حال! باپ²¹
 جیسا ہوگا، ویسی ہی سنتاں بھی تو ہوگی۔ آپ²³
 نہیں آتے، عورتوں کو بھیجتے ہیں۔ ابھی اُٹھ کر ہاتھ

- | क्र. | उर्दू | देवनागरी | अर्थ |
|------|----------------------|--|---------------------------|
| 1 | / کیا پانی رہ جائے / | : क्या इज़्ज़त रह जाये। | / पानी / शा. "पानी" आलंका |
| | | "सम्मान, मान, इज़्ज़त।" | |
| 2 | عورت ذات | औरत ज़ात | स्त्रियो. औरत ज़ाति |
| 3 | / نہیں پکڑتے بنا / | : कोई औरत का हाथ पकड़ने की हिम्मत कैसे क | |
| | | सकता है?" | |
| 4 | / جتنا... چاہے / | : जितनी तेरी इच्छा हो। | |
| | لاج رکھنا | लाज रखना | स.क्रि. लाज रखना |
| 7 | / کہ / | : यहां अर्थ 'या' के हैं | |
| 9 | / اتنی رات گئے / | : इतनी रात में | |
| | اندیشہ | अदेशा | पुरुषो. संदेह |
| | کوئی نہ کوئی | कोई न कोई | कोई न कोई |

پکڑ لوں تو کیا پانی رہ جائے¹۔ عورت ذات کا تو ہاتھ بھی⁴
 نہیں پکڑتے بنتا³! اکھاڑ لے بھائی، جتنا تیرا جی چاہے۔
 سمجھ لے کہ میں نہیں ہوں۔ بڑے لوگ اپنی لاج نہ
 رکھیں، پھوٹوں کو تو اُن کی لاج رکھنی ہی پڑتی
 ہے۔

مگر نہیں، یہ تو دھنیا ہے، پکار رہی ہے:
 "سو گئے کہ جاگتے ہو؟"

ہوری جھپٹ کر اٹھا اور جھونپڑی کے باہر آیا۔
 اِس جاڑے میں اتنی رات گئے اُس کا آنا اندیشے
 کی بات تھی۔ ضرور کوئی نہ کوئی بات ہوئی ہے۔
 ہوری بولا: "تم اِس جاڑے میں کیسے آئیں؟ سب
 کُشل تو ہے؟"

"ہاں سب کُشل ہے۔"

"گوہر کو بھیج کر مجھے کیوں نہیں بلوا لیا؟"

- क्र. उर्दू देवनागरी अर्थ
- 1 /منہ پر کالکھ لگا دی/ : “मुंह पर कालिख लगादी”, अपमानित कर दिया।
 کرنی करनी स्त्रियों. कर्म
- 3 /کرنی کا ... پوچھتے ہو؟/ : उसकी करनी का क्या हाल/वर्णन पूछते हो।”
- 4 /اس کی کرنی کا کیا پوچھتے ہو؟/ : “यह मत पूछो कि उसने क्या किया.....”
- 5 /جس بات کو/ : “साधारणतः जिस बात/से/ प्रयुक्त होता है, किन्तु यहां जिस बात/को/प्रयोग हुआ है।
- 6 /ہو کر رہی/ : “हो गई।”
 مار پیٹ کرنا मार पीट करना म.क्रि. मार पीट करना
- 8 /کر بیٹھا/ : “संयोग से किसी की मार पीट कर ली।”
- 9 /کیا کہوں/ : “कैसे कहूं?” /क्या/ साधारणतः सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त नहीं होता वल्कि क्रिया विशेषण के रूप में प्रयोग होता है।
 رائے रांड स्त्रियों. शाब्दिक विधवा, किन्तु किसी महिला को गाली के रूप में भी प्रयोग किया जाता है
- بورا جانا बौरा जाना अ.क्रि. पागल हो जाना
 دوڑنی दूनी विश. दोगुनी
- 14 /چھاتی دوئی ہو جائے/ : “छाती (गर्व से) दोगुनी चौड़ी हो जाये।”
 صاف صاف साफ़ साफ़ क्रि.वि. साफ़ साफ़, स्पष्ट
- 16 /اُس رائے کو/ : यहां /को/से/ के रूप में प्रयोग हुआ है, उपरोक्त सं. 5 को देखें

دھنیا نے کوئی جواب نہ دیا۔ جھونپڑی میں آکر
 پیال پر بیٹھتی ہوئی بولی: "گوبر نے تو منہ پر کالکھ لگا
 دی۔ اُس کی کرنی کا کیا پوچھتے ہو؟ جس بات کو⁵ میں
 ڈرتی تھی، وہی ہو کر رہی۔"

"کیا ہوا؟ کیا کسی سے مار پیٹ کر بیٹھا؟"⁸
 "اب میں کیا کہوں کیا کر بیٹھا۔ چل کر پوچھو اُسی
 رائنڈ سے۔"

"کیا کہتی ہے تو؟ کس رائنڈ سے؟ بورا تو نہیں
 گئی ہے؟"

"ہاں بورا کیوں نہ جاؤں گی۔ بات ہی ایسی ہوئی
 ہے کہ پھاتی دُونی ہو جائے۔"

"صاف صاف کیوں نہیں کہتی؟ کس رائنڈ کو کہہ رہی¹⁶

ہے؟"

"اُسی بھنیا کو اور کس کو؟"

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
1	/پوچھتا کون؟/	“उसकी चिन्ता किसे है?”	
2	/اُسے پانچ مہینے کا پیٹ ہے/	“वह पाँच माह के गर्भ से है।”	
	اھیرن ٹولہ	अहिरन टोला	व्य.सं. होरी के गांव के पास एक गांव का नाम
	کھٹک جانا	खटक जाना	अ.क्रि. चौंक जाना
	کھلاڑی	खिलाड़ी	पुरुषो. खिलाड़ी
	نوجوان	नौजवान	विशे. नौजवा (पुरुष/ महिला) पुरुषो. स्त्रियो.
	لگاوٹ	लगावट	स्त्रियो. लगाव, आकर्षण
	رُؤی	रुई	स्त्रियो. रुई
	جھونکا	झोंका	पुरुषो. झोंका
	تاریک	तारीक	विशे. अंधेरा
	بدچلن	वदचलन	विशे. चरित्रहीन
	سیدھا سادھا	सीधा साधा	विशे. सीधा साधा
	گنوار	गंवार	विशे. गंवार, मूर्ख
	خوف	खौफ	पुरुषो. भय, डर

”تو جھنیا کیا یہاں آئی ہے؟“

”اور کہاں جاتی؟ پوچھتا کون؟“¹

”گوبر کیا گھر میں نہیں ہے؟“

”گوبر کا کہیں پتا نہیں۔ نہ جانے کہاں بھاگ گیا؟

اُسے پانچ مہینے کا پیٹ ہے۔“²

ہوری سب کچھ سمجھ گیا۔ گوبر کو بار بار اہرن ٹولہ

جاتے دیکھ کر وہ کھٹک گیا تھا۔ مگر اُسے کھلاڑی نہ سمجھتا

تھا۔ نوجوانوں میں کچھ لگاوٹ ہوتی ہی ہے۔ اس میں

کوئی نئی بات نہیں۔ مگر جس روئی کے گالے کو نیلے

آسمان میں ہوا کے جھونکوں سے اڑتا دیکھ کر وہ صرف

مُسکرا دیا تھا، وہی سارے آسمان میں پھیل کر اُس کے

راستے کو اتنا تاریک بنا دے گا، یہ وہ نہ جان سکتا تھا۔

گوبر ایسا بد چلن! وہ سپدھا سادھا اور گنوار، جسے وہ ابھی

بچہ سمجھتا تھا! ہوری کو پنچایت کا خوف نہ تھا۔ جھنیا کیسے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	शर्मिला	शर्मिला	विशे. शर्मिला, संकोची
	नादानी	नादानी	स्त्रियो. नासमझी, मूर्खता
4	“संभवतः कोई नादानी न करे।” /कहیں کوئی نادانی نہ کر بیٹھے/		
	झुंझलाना	झुंझलाना	अ.क्रि. झुंझलाना
7	“तुम बुद्धिहीन हो गये हो।” /تمہاری... گئی ہے/		
	चहेती	चहेती	स्त्रियो. चहेती, प्रिय
9	“वह बच्चा नहीं है।” /थोड़ा/ या /थोड़े ही/ /دودھ تھوڑے ہی پیتا ہے/		
	नाकारात्मक रूप में प्रयोग होता है।		
	खो जाना	खो जाना	अ.क्रि. खो जाना
	कलमुंही	कलमुंही	विशे. काले मुंह वाली, कुरुप
	चिन्ता	चिन्ता	स्त्रियो. चिन्ता
	छन	छन	पुरुषो. क्षण
	पेट रहना	पेट रहना	अ.क्रि. गर्भ रहना
15	“रहस्य बना रहता।” /ابھی بات نہ کھلتی/		
16	“के समान है/ घबराने लगी।” /لگی گھبرانے/		
	सूझना	सूझना	अ.क्रि. दिखाई देना, समझ में आना
	सर होना	सर होना	अ.क्रि. हठ पकड़ना, ज़िद पकड़ना

گھر میں رہے گی، اس کی فکر اُسے نہ تھی۔ فکر تھی تو گوبر کی۔
لڑکا شرمیلا ہے۔ اناڑی ہے۔ کہیں کوئی نادانی نہ کر بیٹھے۔
گہرا کر بولا:

”جھنیا نے کچھ کہا نہیں کہ گوبر کہاں گیا؟ اُس سے
تو کہہ کر ہی گیا ہو گا۔“

دھنیا جھنجلا کر بولی: ”تمھاری عقل تو گھاس کھا گئی
ہے۔ اُس کی چہیتی تو یہاں بیٹھی ہے۔ وہ بھاگ کر جائے
گا کہاں؟ یہیں کہیں چھپا بیٹھا ہو گا۔ دودھ تھوڑے ہی پیتا
ہے کہ کھو جائے گا۔ مجھے تو اُس کل مٹھی جھنیا کی چنتا ہے
کہ اُسے کیا کروں۔ اپنے گھر میں تو چھن بھر نہ رہنے
دوں گی۔ پیٹ نہ رہتا تو ابھی بات نہ کھلتی۔¹⁵ مگر پیٹ رہ
گیا تو جھنیا لگی گہرا¹⁶ نے۔ کہنے لگی کہ کہیں بھاگ چلو۔ گوبر
نالتا رہا۔ ایک عورت کو ساتھ لے کے کہاں جائے۔ کچھ نہ
سوجھا۔ پر جب آج وہ سر ہو گئی کہ مجھے یہاں سے لے چلو،

क्र.	اردو	देवनागरी	अर्थ
	جان دینا	जान देना	स.क्रि. जान देना, आत्म हत्या करना
3	“चल पड़ी” آگے آگے	आगे आगे	क्रि.वि. आगे आगे
	سرکنا	सरकना	अ.क्रि. सरकना
7	“जब रात ठंडी हो गयी।” لوٹنا	लौटना	अ.क्रि. लौटना, वापस होना
	پھل	फल	पुरुषो. शाब्दिक; फल, आलंका; परिणाम
	بھوگنا	भोगना	स.क्रि. भोगना
	ابھاگنی	अभागनी	विशे. अभागिनी
	چو پٹ کرنا	चौपट करना	स.क्रि. चौपट करना
13	“अर्थात् कौन से मुंह से जाऊँ।” بھگوان	भगवान	पुरुषो. भगवान
	بانجھ	बांझ	विशे. बांझ, वह औरत जिसके बच्चा न हो
	سویرا	सवेरा	पुरुषो. सवेरा, प्रातः
17	“अलस्सुवह, बहुत सवेरे” .../ کاؤں کاؤں جج جائے گی/		
18	“शोर मच जायेगा” ایسا جی ہوتا ہے/		
19	“ऐसा मन करता है।” دس	बिस	पुरुषो. विष, जहर
21	“कहे देना/ कह देना, चेतावनीपूर्ण सम्बोधन اپنے سر پر رکھے/		
22	“अपना ध्यान खुद रखे।”		

نہیں تو میں جان دے دوں گی ، تو بولا : ' تو چل کر میسے
 گھر میں رہ ۔ کوئی کچھ نہ بولے گا ۔ میں اماں کو مناؤں
 گا : تب یہ کل منہی اُس کے ساتھ چل پڑی ۔³ کچھ دُور تو
 وہ آگے آگے آتا رہا ۔ پھر نہ جانے کدھر سرک گیا ۔ یہ
 کھڑی کھڑی اُسے پکارتی رہی ۔ جب رات بھیگ گئی⁷
 اور وہ نہ لوٹا ، تو یہ بھاگی ہوئی یہاں چلی آئی ۔ میں
 نے تو کہہ دیا ہے کہ جو کیا ہے ، اُس کا پھل بھوگ ۔
 ابھاگنی نے میرے لڑکے کو چوٹ کر دیا ۔ بیٹھی رو رہی
 ہے ۔ اٹھتی ہی نہیں ۔ کہتی ہے ' اپنے گھر کون منہ سے
 جاؤں ؟ ' ¹³ بھگوان ایسی سنتان سے تو بانجھ ہی رکھتے تو
 اچھا ۔ سویرا ہوتے ہوتے سارے گاؤں میں کاؤں کاؤں¹⁷
 مچ جائے گی ۔ ایسا جی ہوتا ہے کہ بس کھا لوں ۔ میں تم¹⁹
 سے کہے دیتی ہوں کہ میں اپنے گھر نہ رکھوں گی ۔ گوبر کو رکھنا²¹
 ہے تو اپنے سر پر رکھے ۔²² میرے گھر میں آیوں کے لیے جگہ

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	ہنچ میں بولنا	बीच में बोलना	अ.क्रि. बीच में बोलना, टोकना
	ہار جانا	हार जाना	अ.क्रि. हार जाना, असफल होना
	دھرنا دینا	धरना देना	स.क्रि. धरना देना
	چپ سادھنا	चुप साधना	स.क्रि. चुप साधना
	بے حیا	बे हया	विश. वेशर्म
	کھجڑی پکنا	खिचड़ी पकना	अ.क्रि. पडयंत्र रचना
	آنکھیں پھوٹنا	आंखें फूटना	अ.क्रि. अंधा होना
	/دوڑ دوڑ آتا ہے/ : दौड़ दौड़ कर आता है।		
	/چل میں...؟/ : “चल मैं झुनिया से पूछता हूं, ठीक है?”		

نہیں ہے اور اگر تم بیچ میں بولے تو پھر یا تو تم رہو گے یا
میں رہوں گی :

ہوری بولا: ”اُسے گھر میں آنے ہی نہ دینا چاہیے تھا۔“
”سب کچھ کہہ کے ہار گئی، ملتی ہی نہیں، دھرنا دیے
بیٹھی ہے“

”اچھا چل دیکھوں، کیسے نہیں اٹھتی۔ گھپٹ کر باہر
نکال دوں گا۔“

”بھولا سب کچھ دیکھ رہا تھا، پر چپ ہی سادھے بیٹھا
رہا۔ باپ بھی ایسے بے حیا ہوتے ہیں!“

”وہ کیا جانتا تھا کہ ان میں کیا کچھری پک رہی ہے۔“
”جانتا کیوں نہیں تھا؟ گوہر رات دن گھیرے رہتا تھا تو
کیا اس کی آنکھیں پھوٹ گئی تھیں؟ سوچنا چاہیے تھا کہ یہاں
کیوں دوڑ دوڑ آتا ہے“¹¹

”چل میں جھنیا سے پوچھتا ہوں نا“¹²

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	شور مچانا	शोर मचाना	स.क्रि. शोर मचाना
	نہیں تو	नहीं तो	नहीं तो
	سخت	सख्त	विशे. कठोर
	لہجہ	लहजा	पुरुषो. मुद्रा, आवाज़
	باہر کرنا	बाहर करना	स.क्रि. बाहर करना
6	/ بات ... کھلنی ہے / : "रहस्य खुलना है।"		
	کرم	कुर्म	पुरुषो. कुकर्म
	آہستہ	आहिस्ता	विशे. धीरे
	چلانا	चिल्लाना	अ.क्रि. चिल्लाना
10	/ تو چلایا کرے / : "उसके जो जी में आये करे"		

دونوں جھوٹیری سے نکل کر گاؤں کی طرف چلے۔ دھنیا نے ذرا رُک کر ہوری کا ہاتھ پکڑ لیا اور بولی: "دیکھو شور نہ مچانا۔ نہیں تو سارا گاؤں جاگ اُٹھے گا اور بات پھیل جائے گی۔"

ہوری نے سخت بلجے میں کہا: "میں کچھ نہیں جانتا۔ ہاتھ پکڑ کر گھیٹ لاؤں گا اور گاؤں کے باہر کر دوں گا۔ بات تو ایک دن کھلنی ہے پھر آج ہی کیوں نہ کھل جائے۔ وہ میرے گھر آئی کیوں۔ جائے جہاں گوبر ہو۔ اُس کے ساتھ مکرم کیا، تو کیا ہم سے پوچھ کر کیا تھا۔"

دھنیا نے پھر اُس کا ہاتھ پکڑا اور آہستہ سے کہا: "تم اُس کا ہاتھ پکڑو گے، تو چلائے گی۔"

"تو چلایا کرے" ¹⁰

"مگر اتنی رات گئے اِس اندھیرے میں، اِس سناٹے میں جائے گی کہاں، یہ تو سوچو۔"

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
2	اپاؤں بھاری ہے /	“वह गर्भवती है”	
	آفت	आफ़त	स्त्रियों. आफ़त, कठिनाई
4	کہیں ڈر... آفت ہو /	“अगर वह डर गयी तो और कठिनाई होगी”	
5	ایسی حالت... نہیں بنتا /	“ऐसी हालत में कुछ नहीं किया जा सकता”	
	متفکر	मुतफ़क्किर	विशे. चिन्तित
	جیتے جی	जीते जी	जीते जी, जीवित रहते
	ناؤ	नाव	स्त्रियों. नाव
	پنجہ	पंजा	पुरुषों. पंजा

”جائے گی جہاں اُس کے سگے ہوں۔ ہمارے گھر میں اُس کا

کیا رکھا ہے؟“

”ہاں۔ پر اتنی رات گئے گھر سے نکالنا ٹھیک نہیں۔

پاؤں بھاری² ہے۔ کہیں ڈر جائے تو اور آفت⁴ ہو۔ ایسی حالت میں کچھ کرتے بھی تو نہیں⁵ بتا۔“

”ہمیں کیا کرنا ہے۔ مرے یا بیجے۔ جہاں چاہے جائے۔

کیوں اپنے منہ میں کالکھ لگاؤں؟ میں تو گوبر کو بھی نکال باہر کروں گا۔“

دھنیا نے بہت متفکر ہو کر کہا: ”کالکھ جو لگنی تھی، وہ

تو لگ گئی۔ وہ تو اب بچتے جی نہیں پھوٹ سکتی۔ گوبر نے ناؤ ڈبا دی۔“

”گوبر نے نہیں ڈبائی۔ ڈبائی اُسی نے۔ وہ تو بچہ تھا،

اُس کے پنجے میں آگیا۔“

”کسی نے ڈبائی ہو، اب تو ڈوب ہی گئی۔“

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	دفعۂ	दफअतन	क्रि.वि. अचानक
2	ہواری کے گلے میں ہاتھ ڈال کر /	“होरी के गले में हाथ डाल कर।”	
3	تمہیں میری سونگند /	“तुम्हें सौगंध है।”	
	ہاتھ اٹھانا	हाथ उठाना	स.क्रि. हाथ उठाना, मारना
	پہلے ہی	पहले ही	पहले ही
	بھاگ کی ٹھوٹی	भाग की छोटी	दुर्भाग्यशाली
8	یہ دن ہی کیوں آتا /	“यह दिन ही क्यों आता।”	
	نم	नम	विशं. नम, भीगना
	نسوانی	निस्वानी	विशे. ज़नानी
	گو یا	गोया	क्रि.वि. अर्थात्
	چراغ	चिराग	पुरुषो. चिराग, दीपक
	شباب	शबाब	पुरुषो. यौवन
	ڈھلی ہوئی	ढली हुई	ढली हुई
	نرم	नर्म	विशे. नर्म, कोमल
	نازک	नाज़ुक	विशे. नाज़ुक
17	نرم و نازک دل والی لڑکی /	नर्म व ना.जुक दिल वाली लड़की /	
	شامل ہونا	शामिल होना	अ.क्रि. सम्मिलित होना
19	جو پچیس... شامل ہوئی تھی /	जो पच्चीस... शामिल हुई थी /	“जो पच्चीस साल पहले उसकी ज़िंदगी में सम्मिलित हुई थी।”
	گلے لگنا	गले लगना	अ.क्रि. गले लगना
	رواجی	रवाजी	विशे. पारंपरिक
	بندش	बन्दिश	स्त्रियो. बंदिश, बंधन
27	اس گلے... لیتا تھا /	“इस आलिंगन में कितना प्रेम था जो सारे कलंक और पारंपरिक बंधनों को अपने अंदर समेट लेता था।”	
	دراز	दराज़	स्त्रियो. झिरी
	جھانکنا	झांकना	स.क्रि. झांकना
	دینا	कुप्पी	स्त्रियो. दीया
35	گھنے پر سر رکھے /	“घुटने पर सर रखे (शर्म या दुख से)”	

دونوں دروازے کے سامنے پہنچ گئے۔ دفعۃً دھنیا نے
 ہوری کے گلے میں ہاتھ ڈال کر کہا : " دیکھو تمہیں میری سوگند³
 اُس پر ہاتھ نہ اٹھانا۔ وہ تو پہلے ہی رو رہی ہے۔ بھاگ کی
 کھوٹی نہ ہوتی تو یہ دن ہی کیوں آتا۔⁸

ہواری کی آنکھیں نم ہو گئیں۔ دھنیا کی یہ نسوانی محبت
 اِس تارِ پکی میں بھی گویا چراغ کی طرح تھی۔ دونوں کے دلوں
 میں گویا گزرا ہوا شباب جاگ اُٹھا تھا۔ ہواری کو اِس ڈھلی¹⁷
 ہوئی عورت میں بھی وہی نرم دناؤک دل والی لڑکی نظر
 آئی جو پچیس سال پہلے اُس کی زندگی میں شامل ہوئی تھی۔¹⁹
 اِس گلے لگنے میں کتنا پریم تھا، جو سارے کلنک اور رواجی
 بندشوں کو اپنے اندر سمیٹ لیتا تھا۔²⁷

دونوں نے دروازے پر آکر کواڑ کی درازوں
 سے اندر جھانکا۔ تیل کی کپٹی جل رہی تھی اور اُس کی
 دھندلی روشنی میں بھنیا گھٹنے پر سر رکھے،³⁵ دروازے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	منہ کرنا	मुंह करना	स.क्रि. मुंह करना
3	/ کی ماری / : “दुख की मारी”		
8	/ الہ دین ... غائب ہو گیا تھا / : “अलादीन के शाही महल की तरह गायब हो गया था।”		
	مستقبل	मुस्तकबिल	पुरुषो. भविष्य
	خوفناک	खौफनाक	विशे. भयानक, डरावना
	دیو	देव	पुरुषो. देव
	نگل جانا	निगल जाना	अ.क्रि. खा जाना
	خوف	खौफ	पुरुषो. भय, डर
	قدم	कदम	पुरुषो. कदम
	کے سوا	के सिवा	पर. के अलावा
	ٹھور	ठोर	पुरुषो. ठिकाना
18	/ چاہے / : चाहे		
20	/ اپنے گھر سے نکالو مت / : “अपने घर से मत निकालो।”		
23	/ ہوरी نے جھک کر ... کہا / : “होरी ने झुक कर पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा।”		

کی طرف منہ کیے اُداس بیٹھی تھی۔ وہ آفت کی ماری کسی
 پیڑ کی چھاؤں کھوجتی پھرتی تھی، اور اُسے ایک مکان
 بھی مل گیا تھا، مگر آج وہ مکان اپنے سارے سکھ کے
 ساتھ الہ دین کے شاہی محل کی طرح غائب ہو گیا تھا۔⁸
 اور مستقبل ایک خوفناک دیو کی طرح اُسے بگل جانے کو
 کھڑا تھا۔

دفعۃً دروازہ کھلتے اور ہوری کو آتے دیکھ کر وہ
 خوف سے کانپتی ہوئی اُٹھی اور ہوری کے قدموں پر گر کر
 روتی ہوئی بولی :

"دادا ! اب تمہارے سوا مجھے دوسرا ٹھور نہیں
 ہے۔ چاہے مارو، چاہے کاٹو۔ پر اپنے گھر سے نکالو
 مت۔"¹⁸²⁰

²³
 ہوری نے بھک کر پیٹھ پر ہاتھ پھیرتے ہوئے کہا:
 "ڈر مت بیٹی، ڈر مت۔ تیرا گھر ہے۔ تیرے ہم ہیں۔"

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	کھٹکا کرنا	खटका करना	स.क्रि. चिन्ता करना
	دلاسا	दिलासा	पुरुषो. दिलासा, सांत्वना
	لپٹنا	लिपटना	अ.क्रि. लिपटना
	سرن	सरन	स्त्रियो. शरण
	کچا کھانا	कच्चा खाना	स.क्रि. मार डालना
	رقت	रिक्कत	स्त्रियों. दिल भर आना, रोना धोना
	جوش	जोश	पुरुषो. उत्तेजना
11	/ میں دیکھ... بھیا کو / : “میں بابا اور بھیا کو سنبھال لूںگی।”		
14	/ بہت کریں گے اپنے گہنے لے لیں گے / : “बहुत बुरा करेंगे अपने गहने ले लेंगे।”		
	ککتن	कलंकन	विशं. कलंकिनी

آرام سے رہ - جیسی تو بھولا کی بیٹی ہے ، ویسی ہی میری بیٹی ہے - جب تک ہم جیتے ہیں ، کسی بات کا کھٹکامت کرتے -
 جھنیا یہ دلاسا پا کر ہو رہی کے قدموں سے پٹ گئی
 اور بولی :

”دادا ! اب تم ہی میرے باپ ہو ؛ اور اماں !
 تم ہی میری اماں ہو - میں انا تھ ہوں - مجھے سرن دو -
 نہیں تو میرے بابا اور بھائی مجھے کچا کھا جائیں گے “
 دھنیا رقت کے جوش کو اب نہ روک سکی - بولی :
 ”تو چل گھر میں بیٹھ - میں دیکھ لوں گی بابا اور بھتی¹¹ کو !
 سنار میں انہیں کا راج نہیں ہے - بہت کریں گے اپنے
 گھنے لے لیں گے - پھینک دینا اُتار کر “

ابھی ذرا دیر پہلے دھنیا نے غصے کے جوش میں جھنیا کو ابھاگنی ، کلنن اور کل ٹنہی ، نہ جانے کیا کیا کہہ ڈالا تھا -
 بھاڑو مار کر گھر سے نکالنے جا رہی تھی - اب جو جھنیا نے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	पाकबाज़	पाकबाज़	विशे. सच्चरित्र
	आंसू पोछना	आंसू पोछना	स.क्रि. आंसू पोछना
4	/ اوہ پاکباز ... رہی تھی / : “वह सच्चरित्र औरत उस पापी झुनिया को गले से लगाए उसके आंसू पोछ रही थी।”		
	چڑیا	चिड़िया	स्त्रियो. चिड़िया
	پر	पर	पुरुषो. पंख
7	/ جیسے کوئی ... بیٹھی ہو / : “जैसे कोई चिड़िया अपने बच्चों को अपने पंखों में छुपाए बैठी हो”		
	اشارہ	इशारा	पुरुषो. इशारा, संकेत
	کارن	कारन	पुरुषो. कारण
12	/ میرے کارن تمہارے اوپر ... / : “झुनिया ने इस प्रकार कहना शुरू किया, “मेरी वजह से तुम पर यह मुसीबत आयी”		
	بے چینی	बेचैनी	स्त्रियो. बेचैनी

مجت سے بھرے ہوئے لفظ سنے تو ہوری کے پاؤں چھوڑ
 کر دھنیا کے پاؤں سے پٹ گئی۔ اور وہ پاک باز عورت
 پاپی بھنیا کو گلے سے لگائے اُس کے آنسو بونچھ رہی تھی،
 جیسے کوئی چڑیا اپنے بچوں کو پروں میں بچھائے بیٹھی ہو؛
 ہوری نے دھنیا کو اشارہ کیا کہ اُسے کچھ کھلا پلا
 دے اور بھنیا سے پوچھا: ”کیوں بیٹی، تجھے کچھ معلوم ہے کہ
 گوبر کدھر گیا؟“

بھنیا نے سسکتے ہوئے کہا: ”مجھ سے تو کچھ نہیں کہا۔
 میرے کارن تمہارے اوپر¹²۔۔۔“ یہ کہتے کہتے اُس کی آواز
 آنسوؤں سے رُک گئی۔

ہوری اپنی بے چینی نہ چھپا سکا: ”جب تُو نے آج اُسے
 دیکھا، وہ کچھ دکھی تھا؟“

”باتیں تو ہنس ہنس کے کر رہے تھے، من کا حال

رام جانے۔“

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
1	/تیرا من کیا کہتا ہے؟/	“तुम क्या सोचती हो?”	
2	/جب/ अगर /चाहे/		
	نہا	निबाहना	स.क्रि. निभाना
	منہ چور	मुंह चोर	विशे. मुंह चोर
7	/منہ چور کہیں کا/	“कायर कहीं का” : शा. “कहीं का मुंह चोर”	
	بانہ	बांह	स्त्रियो. बांह, भुजा
	نہا کرنا	निबाह करना	स.क्रि. निभाना
	منہ میں کالکھ پوتنا	मुंह में कालख पोतना	स.क्रि. अपमानित करना
11	/آوے/ खड़ी बोली है /आवना/ से। मानक हिन्दी /आना/ से /आए/ लिखा जाएगा।		
	پرند	परिंद	पुरुषो. चिड़िया, पक्षी
	منڈلانا	मंडलाना	अ.क्रि. मंडराना

”تیرا من کیا کہتا ہے؟¹ ہے گاؤں ہی میں کہ کہیں باہر

چلا گیا؟“

”مجھے تو شک ہوتا ہے کہ کہیں باہر چلے گئے ہیں۔“

”یہی میرا من بھی کہتا ہے۔ کیسی نادانی کی۔ ہم اُس کے

بیری تھوڑے ہی تھے۔ جب² بھلی یا بُری ایک بات ہو گئی

تو اُسے نباہنا پڑتا ہے۔ اِس طرح بھاگ کر تو اُس نے

ہماری جان سنکٹ میں ڈال دی۔“

دھنیا نے بھنیا کا ہاتھ پکڑ کر اندر لے جاتے ہوئے

کہا: ”منہ چور کہیں؟ کا! جس کی ہاتھ پکڑی، اُس کا نباہ

کرنا چاہیے نہ کہ منہ میں کا لکھ پوت کر بھاگ جانا چاہیے۔

اب آوے¹¹ تو گھر میں گھسنے نہ دوں۔“

ہوری گھر ہی میں پیال پر لیٹ گیا: ”گو بر کہاں

گیا؟“ یہ سوال اُس کے دل کے آسمان میں کسی پرند کی

طرح منڈلا لے لگا۔
(ہریم چند)

मिर्जा रूस्वा : उमराव जान अदा

‘उमराव जान अदा’ (प्रथम प्रकाशन, 1905 ई.) की गणना सामान्यतया उर्दू के शाहकार उपन्यासों में की जाती है। यह बचपन में अगवा कर ली गयी एक लड़की की कहानी है जिसे पेशा कराने वाली एक औरत के हाथों बेच दिया जाता है जो कि उसे वेश्यावृत्ति का प्रशिक्षण देती है। उपन्यास की कथावस्तु में परिवेशगत तीव्र बदलाव और यथार्थ पर आधारित ब्योरे मिलते हैं। उमराव जान इसका एक केंद्रीय अखंडित चरित्र है जो अपनी ढलती हुई उम्र में जाकर अपने अतीत की व्यथा-कथा का गहरी वेदना के साथ अनुस्मरण करती है।

‘उमराव जान अदा’ के लेखक मिर्जा मुहम्मद हादी वातखल्लुस ‘रूस्वा’ का जन्म 1858 ई. में हुआ। युवावस्था में ही, जब वे अपनी मेहनत से विद्यार्जन कर रहे थे, उनके माता-पिता का निधन हो गया। उन्होंने साइंस और इंजीनियरिंग में उपाधियाँ प्राप्त कीं, लेकिन वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे और अपने अध्ययन के क्षेत्र को छोड़कर उन्होंने लखनऊ के एक कॉलेज में फ़ारसी का अध्यापक बनना स्वीकार किया।

‘रूस्वा’ एक मनमौजी, हाज़िरजवाब और विनोदप्रिय व्यक्ति थे। दुर्लभ क्षमताओं से संपन्न ‘रूस्वा’ ने रचनात्मक लेखन से लेकर नुजूम (सितारा-शनासी), कीमियागिरी और फिर दर्शन तक आजीविका के कई साधन बदले। उन्होंने दार्शनिक एवं धार्मिक विमर्शों, छंदोबद्ध रूमानी कथाओं, अनुवादों और रूपांतरों के रूप में 50 के आसपास किताबें लिखीं। उनके तीन मौलिक उपन्यासों में से एक ‘उमराव जान अदा’ है, जिस पर उनकी ख्याति टिकी हुई है। उनके अन्य दो उपन्यास असमान कोटि के हैं और विस्मृत हो गये हैं। ‘रूस्वा’ की मृत्यु 1931 ई. में हुई।

‘उमराव जान अदा’ एक खलाख्यान नहीं है लेकिन इसमें खलाख्यान के अनेक तत्त्व मौजूद हैं। कहानी एक आत्मकथा के रूप में प्रथम पुरुष में कही जाती है। कथावस्तु एपिसोडों में आगे बढ़ती है, एक के बाद एक रोमांचकारी

घटनाओं की शृंखला आती है और नायिका पूरे समाज एवं परिवेश के भ्रष्टाचार एवं पाखंड पर तीखा व्यंग्य करती हुई एक जगह से दूसरी जगह की आपबीती सुनाती रहती है। 'रुस्वा' ने असाधारण कलाकौशल के साथ पेशा करने वाली औरत के कोठे को एक सामाजिक केंद्र और युगीन मनोवृत्ति के रूप में प्रस्तुत करते हुए इस कोठे के परिवेश के भीतर ही प्रत्येक पात्र के चारित्रिक वैशिष्ट्य को उभारा है। अपने समग्र प्रभाव के रूप में यह उपन्यास 1856 में अंग्रेजों के आधिपत्य से पूर्व, आरंभिक उन्नीसवीं शताब्दी के अवध की जीवन-झांकी प्रस्तुत करता है। लूटमार, कत्लो-गारत, अपहरण और वेश्यावृत्ति, कामासक्त नौकरानियाँ, प्रणयातुर गायिकाएँ और नृत्यांगनाएँ, उनकी शिक्षा-दीक्षा, आदतें, शिष्टाचार; उनके ग्राहक, लम्पट नवाब, गँवार अपराधी, बेकाबू जुआरी, मँजे हुए अमीरज़ादे और अपने रसूख से सामाजिक प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाले लोग; रंगारंग संगीत की महफ़िलें और चांदनी रात के मुशायरे—ये सब स्थितियाँ कथावस्तु के ताने-बाने में लयान्वित के साथ गुँथी हुई हैं और उर्दू में अब तक अलभ्य हैं।

इस उपन्यास में हम समूचे लखनऊ यानी उसके लोग, उसकी ज़बान, उसकी शाइरी, उसके संगीत, उसकी परिमार्जित संस्कृति और उसके सामाजिक शिष्टाचार का संस्पर्श महसूस कर सकते हैं। मुख्य कथानक में आद्यंत असमंजस का तत्त्व समाहित है और यह घटनाबहुलता एवं अनेक उपकथानकों से घिरा रहता है। 'उमराव जान अदा' सिर्फ गणिकाओं का अध्ययन ही नहीं है बल्कि इससे ज़्यादा यह एक विकृत रूप से विलासप्रिय और पतनशील समाज का ऐतिहासिक दस्तावेज़ है।

लेखक की उपस्थिति उपन्यास में आद्यंत मेहसूस की जा सकती है और उसके चुभते हुए एवं तीखे प्रत्युत्तरों से बयानिया और ज़्यादा जीवंत हो उठा है। इसमें कुछ सतही विवरण भी मिलते हैं और कहानी के अंत में अविश्वसनीय व उपदेशात्मक दृष्टिकोण की झलक भी मिलती है। शायद ऐसा करते हुए 'रुस्वा' ने अपने युग के अतिनैतिकतावाद की ओर झुकाव दिखाया है।

'रुस्वा' लखनऊ की परिमार्जित, संपन्न और सुरुचिसंपन्न भाषा के सच्चे रचनाकार थे। उनकी शैली काव्यात्मक संवेदना से संपन्न और संयत है। यहाँ संकलित गद्यांश अध्याय 4 और 5 से लिया गया है। जहाँ उमराव जान अपनी किशोरावस्था की भावनाओं और अपने पहले प्रेमी गोहर मिर्ज़ा से मुलाकात की

याद करती है। उपन्यास का खुशवंत सिंह और एम ए हुसैनी कृत अंग्रेजी अनुवाद यूनेस्को की 'क्लेक्शन ऑफ़ रिप्रेजेंटेटिव वर्क्स: इंडियन सीरीज़' (बम्बई, 1961) योजना के अंतर्गत प्रकाशित है। हालाँकि यह अनुवाद बहुत विश्वसनीय नहीं है, फिर भी पठनीय है।

हिंदी में 'उमराव जान अदा' का गिरीश माथुर द्वारा किया गया अनुवाद उपलब्ध है।

UNIT VI
उमराव जान अदा

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	مکتب	मकतब	पुरुषो. स्कूल
	سمیت	समेत	पर. सहित
3	/مرزا/ : मिर्जा; मुगल वंश की एक उपाधि।		
	حد کا شریع	हद का शरीर	अत्यन्त उदण्ड
	چھیڑنا	छेड़ना	स.क्रि. छेड़ना
6	/کسی کے/ : “किसी के”		
	قلم	कलम	पुरुषो. कलम, लेखनी
	نوک	नोक	स्त्रियों. नोक, बिन्दु
	دوات	दवात	स्त्रियों. दवात
	شرارت	शरारत	स्त्रियों. शरारत
	گت بنانا	गत बनाना	स.क्रि. गत बनाना
	صلح	सुलह	स्त्रियों. सुलह, सन्धि, शान्ति
	عادى ہونا	आदी होना	अ.क्रि. आदी होना, अभ्यस्त होना

اُمراؤ جان ادا

مکتب میں مجھ سمیت تین لڑکیاں تھیں اور ایک لڑکا تھا، گوہر مرزا^۳ حد کا شرپر، سب لڑکیوں کو پھیرا کرتا تھا۔ کسی^۶ کے چُنکی لے لی۔ کسی کی چوٹی پکڑ کر کھینچ لی۔ کسی کے قلم کی نوک توڑ ڈالی۔ کسی کی کتاب پر دوات اُلٹ دی۔ لڑکیاں بھی اُسے خوب مارتی تھیں اور مولوی صاحب بھی سزا دیتے تھے، مگر وہ اپنی شرارتوں سے نہیں چوکتا تھا۔ سب سے بڑھ کر میری گت بناتا تھا۔ مولوی صاحب نے اُس کو بہت مارا مگر اُس نے مجھے ستانا نہ چھوڑا۔ اسی طرح کئی برس گزر گئے۔ آخر ہماری صلح ہو گئی یا یوں کہیے کہ میں اُس کے ستانے کی عادی ہو گئی۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	فرق	फर्क	पुरुषो. फर्क, अन्तर
	حال	हाल	पुरुषो. स्थिति, दशा
3	/कोئی/ नम्बर के पहले इस्तेमाल करने का अर्थ होता है “लगभग”		
	مزا	मज़ा	पुरुषो. आनंद
5	/گوهر مرزا... آنے لگا/ : “गौहर मिर्ज़ा के सताने से मुझ को मज़ा (आनंद) आने लगा		
	ڈومنی	डोमनी	स्त्रियो. डोमिनी, डोम की स्त्री, एक गायिका
	جلسہ	जलसा	पुरुषो. सभा
	رندی	रंडी	स्त्रियो. रंडी, वेश्या
	فریفتہ	फ़रेफ़ता	विशे. मोहित, आसक्त
	سگت	संगत	स्त्रियो. संगत, साथ
	لطف	लुत्फ़	पुरुषो. आनंद
15	/اس درمیان میں/ : “इस बीच में” /درمیان/ : “बीच, मध्य”		
	واقعه	वाक़ेया	पुरुषो. घटना

گوہر مرزا کی اور میری عمر میں زیادہ فزق نہیں تھا۔ شاید وہ مجھ سے ایک دو سال بڑا تھا۔ جس زمانے کا حال بتا رہی ہوں، میری عمر کوئی تیرہ^(۱۳) برس ہوگی اور گوہر مرزا کا چودھواں^(۱۴) پندرھواں^(۱۵) سال تھا۔

گوہر مرزا کے ستانے میں مجھ کو مرا آنے لگا۔ اُس کی آواز بہت اچھی تھی۔ ڈومنی کا لڑکا تھا۔ ادھر میں بھی لے سر جانتی تھی۔ جب مولوی صاحب مکتب میں نہ ہوتے تھے، خُوب جلے ہوتے تھے۔ کبھی میں گانے لگتی، کبھی وہ گاتا۔ گوہر مرزا کی آواز پر اور رنڈیاں بھی ذریفہ تھیں۔ ہر ایک کمرے میں بلایا جاتا تھا۔ اُس کے ساتھ میرا جانا بھی ایک ضروری بات تھی، کیونکہ ہم دونوں کی سنگت کے بغیر لطف نہیں آتا تھا۔

اس طرح میری زندگی کے کئی برس خانم کے مکان پر گزرے۔ اس درمیان^(۱۶) میں کوئی واقعہ ایسا نہیں گذرا جس کا

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	بیان	बयान	पुरुषो. वर्णन
2	خوب یاد آیا /	“मुझे अच्छी तरह याद आया”	
	مسی	मिस्सी	स्त्रियो. मिस्सी, एक प्रकार का पावडर जो महिलाएं अपने दांतों को सुन्दर दिखाने के लिए लगाती हैं।
	دھوم	धूम	स्त्रियां. धूम
	بارہ دری	बारहदरी	स्त्रियां. बारहदरी
	دور دور سے	दूर दूर से	दूर दूर से
	طوائف	तवायफ़	स्त्रियो. वेश्या, रंडी
	گویا	गवैया	पुरुषो. गायक, गाने वाला
	صحبت	सोहबत	स्त्रियो. संगत
	اکوتا	इकलौता	विशं. इकलौता, अकेला
	چال چلنا	चाल चलना	अ.क्रि. चाल चलना
	بے چارہ	बेचारा	विशे. बेचारा
	خرچ ہوتا	खर्च होना	अ.क्रि. खर्च होना
	ملازم	मुलाज़िम	विशं. नौकर, सेवक
17	ان کا... مشکل ہے /	“उन बातों का वर्णन मेरे लिए बहुत मुश्किल है।”	
	بیباک	बेबाक	विशं. निर्भीक

بیان ضروری ہو۔ ہاں، خوب یاد آیا۔ ²بسم اللہ کی بستی
 بڑی دھوم سے ہوئی۔ بارہ درمی اس جلسے کے لیے
 سجائی گئی۔ شہر کی رنڈیاں سب تھیں اور دُور دُور سے
 بھی طوائفیں بلوائی گئی تھیں۔ بڑے بڑے گویئے دہلی سے
 آئے تھے۔ سات دن رات گانے بجانے کی ضجّت رہی۔

بسم اللہ خانم کی اِکَلَوَتی لڑکی تھی، خوب اِنظام
 کیا گیا۔ نواب پچھتن صاحب نے ماں باپ سے بہت دولت
 پائی تھی۔ خانم نے خدا جانے کیا چال چلی، بے چارے پھنس
 ہی گئے۔ نواب صاحب کے پچیس^(۳۰) تیس^(۳۱) ہزار روپے اس جلسے
 میں خرچ ہوئے۔ اس کے بعد بسم اللہ نواب صاحب کی مُلازم
 ہو گئیں۔

مرزا رسوا صاحب! جو باتیں آپ مجھ سے پوچھتے ہیں،
 اُن کا میری زبان سے نکلا سخت مشکل¹⁷ ہے۔ یہ سچ ہے کہ
 رنڈیاں بہت بے باک ہوتی ہیں، لیکن رنڈیاں بھی عورت

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
1	/وہ/	यहां सहयोजन के रूप में प्रयुक्त हुआ है न कि सम्बंधसूचक सर्वनाम के रूप में : /کہ/	'इसलिए' के रूप में प्रयुक्त ।
	اصرار کرنا	इस्सार करना	स.क्रि. आग्रह करना
	پڑھا لکھا	पढ़ा लिखा	विश. शिक्षित
	شرم	शर्म	स्त्रिया. शर्म, लाज
	اوی	उई	आश्चर्य व्यक्त करना, दुख, दर्द
	انسان	इंसान	पुरुषो. मानव
7	/یہ آپ نے خوب کہی/	“ये आपने अच्छा कहा ।”	
	فضول	फुजूल	विश. व्यर्थ
	ضائع کرنا	ज़ाए, करना	स.क्रि. नष्ट करना
	اخبار	अखबार	पुरुषो. अखबार, समाचार पत्र
12	/کہیں کسی... دیکھیے گا/	“खुदा के लिए कहीं किसी अखबार में न छपवा दीजिएगा ।”	
13	/اور آپ کیا سمجھتی ہیں/	“और आप क्या समझती हैं ।”	
14	/توہا/ یا /توہا/		
	رُسا کرنا	रुस्वा करना	स.क्रि. बुराई से मशहूर करना
16	/رُسا/	शब्द रुस्वा लेखक का उपनाम है ।	
	خیر	खैर	क्रि.वि. खैर, अच्छा
	ہرج	हर्ज	पुरुषो. नुकसान, घाटा
	زبردستی	ज़बरदस्ती	स्त्रिया. ज़बरदस्ती
20	/بے شرمی کی باتیں/	“बेशर्मी की बातें”	

ذات ہیں۔ ان باتوں کو پوچھنے سے آپ کو کیا فائدہ ؟
 رُسوا: کچھ تو فائدہ ہے جو میں اصرار کر کے پوچھتا ہوں ۔
 آپ بڑھی لکھی ہیں ۔ پڑھے لکھوں کو ایسی شرم نہیں چاہیے ۔
 اُمراؤ: اُدنیٰ ! تو کیا پڑھنے سے انسان بے شرم ہو جاتا ہے ۔
 یہ آپ نے خوب کہی ۔

رُسوا: اچھا ، اچھا تو کیے ۔ فضول باتوں میں وقت
 ضائع نہ کیجیے ۔

اُمراؤ: کہیں کسی اخبار میں نہ چھپوا دیجیے گا !
 رُسوا: اور آپ کیا سمجھتی ہیں ؟

اُمراؤ: توبہ کیجیے ۔ مجھے بھی آپ اپنی طرح رُسوا کریں گے ۔
 رُسوا: خیر اگر آپ میرے ساتھ رُسوا ہوں گی تو کوئی
 ہرج نہیں ۔

اُمراؤ: کیا زبردستی ہے ۔ کیا بے شرمی کی باتیں آپ پوچھتے
 ہیں ۔ اچھا ، لیجیے سنئے :

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	رسم	रस्म	स्त्रियों. रस्म, संस्कार
	امنگ	उमंग	स्त्रियों. उमंग, इच्छा
	ناواقف	नावाकिफ़	विशे. अनभिज्ञ
	سند	सनद	स्त्रियों. प्रमाण
	علاحدہ	अलाहिदा	विशे. अलग
	بے تکلف	बेतकल्लुफ़	विशे. अनौपचारिक
7	/ وہ مردوں ... لگی تھیں / : “वह मर्दों के साथ स्वच्छंद हंसी मज़ाक़ करने लगी थीं।”		
	جدا جدا	जुदा जुदा	क्रि.वि. अलग-अलग
	نواڑ	निवाड़	स्त्रियों. निवाड़
	پلنگ	पलंग	पुरुषों. पलंग
11	پانداں	पानदान	पानदान
	کنول	कंवल	पुरुषों. कमल के आकार के लैम्प
	خدمت گار	खिदमतगार	पुरुषों. सेवक
14	/ ہاتھ باندھے کھڑے ہیں / : “हाथ बांधे खड़े हैं।”		
	رئیس زادہ	रईसज़ादा	पुरुषों. धनाढ्य का पुत्र
	حاضر	हाज़िर	विशे. हाज़िर, उपस्थित
17	پان لگانا	पान लगाना	पान लगाना
18	بسم اللہ	बिस्मिल्लाह	अल्लाह के नाम से
	آنکھیں بچھانا	आंखें बिछाना	स.क्रि. आंखें बिछाना, हार्दिक स्वागत करना
	پرہا کرنا	परवा करना	स.क्रि. परवाह करना
	قربان کرنا	क़ुरबान करना	स.क्रि. त्याग करना
23	/ کوئی دل ... کر رہا ہے / : “कोई दिल हथेली पर रखे हुए है, कोई जान क़र्बान कर रहा है।”		

جب سے بسم اللہ کی ہستی ہوئی، خورشید جان اور امپرن جان کی ریمیں ہوئیں، میرے دل میں ایک خاص قسم کی اُمتگ پیدا ہوئی۔ میں نے دیکھا کہ ایک خاص رُسم (جس سے میں بالکل ناواقف تھی) کے بعد بسم اللہ سے بسم اللہ جان ہوئیں۔ بے باکی کی سند مل گئی۔ اب یہ لوگ مجھ سے علاحدہ ہو گئے۔ وہ مردوں کے ساتھ بے تکلف ہنسی مذاق کرنے لگی تھیں⁷۔ اُن کے کمرے جدا جدا سجا دیے گئے تھے۔ نواڑ کے پلنگ، بڑے بڑے پان دان¹¹، شام سے دو کنول روشن ہو جاتے ہیں۔ خدمت گار ہاتھ باندھے کھڑے ہیں۔ نوجوان رئیس زادے ہر وقت دل بہلانے کو حاضر ہیں۔ سامنے پان دان کھلا ہے۔ ایک ایک کو پان¹⁷ لگا کر دیتی جاتی ہیں۔ اُٹھتی ہیں تو لوگ¹⁸ 'بسم اللہ' کہتے ہیں۔ چلتی ہیں تو لوگ آنکھیں پچھاتے ہیں۔ یہ کسی کی پروا نہیں کرتیں۔ کوئی دل بھیلی پر رکھے ہوئے ہے، کوئی جان قربان کر رہا ہے²³۔ ادھر اس کو رُلا دیا، ادھر اُس کو

- क्र. उर्दू देवनागरी अर्थ
- 1 / ادھر اس کو... ہسا دیا/ : “यहां किसी को हंसा दिया और वहां किसी को रुला दिया”
- 2 / بات بات میں روٹھنا/ : /बात बात में रूठना/
- 3 / یہ دیکھ... جانتی ہوں/ : “यह देख कर मेरे दिल पर जो बीतती है उसे मैं अच्छी तरह जानती हूँ।”
- رَشک رشक पुरुषो. ईर्ष्या, डाह
- चाहने वाला पुरुषो. चाहने वाला, प्रिय
- 6 / مگر میری... دیکھتا تھا/ : “मगर मेरी ओर कांई आंख उठा कर भी न देखता था”
- بُوا बुआ स्त्रियां. बुआ, पिता की बहन
- کوٹھری कोठरी स्त्रियां. कोठरी, छोटा कमरा
- دھواں धुवां पुरुषो. धुआं
- سیاہ सियाह विश. काला, दुर्भाग्य
- پڑ رہنا पड़ रहना अ.क्रि. पड़ा रहना, रखा रहना
- چوल्हा चूल्हा पुरुषो. चूल्हा
- مسالا मसाला पुरुषो. मसाला
- جلانے کی لکڑی जलाने की लकड़ी जलाने की लकड़ी
- 20 / خلاصہ یہ/ : “संक्षेप यह है कि ...” /खुलासा/ सारांश, संक्षेप
- کیل कील स्त्रियां. कील

ہنسا¹ دیا۔ بات بات میں رُوٹھی² جاتی ہیں۔ لوگ منا رہے ہیں۔

یہ دیکھ کر میرے دل پر جو گزرتی تھی، اُس کو میں خوب جانتی³ ہوں۔ عورت کو عورت سے رشک ہوتا ہے۔ سچ تو یہ ہے اگرچہ مجھے کہتے ہوئے شرم آتی ہے، میرا دل چاہتا تھا، سب کے چاہنے والے مجھی کو چاہیں۔ مگر میری طرف کوئی آنکھ اٹھا کر بھی نہ دیکھتا تھا۔⁶ بُوا حُسنی کی پھوٹی سی کوٹھری میں ہم اور بُوا حُسنی رات کو بٹڑ رہتے تھے۔ ایک طرف کوٹھری میں چوڑھا بنا ہوا تھا۔ اس کے پاس دو گھڑے پڑے ہوئے تھے۔ یہیں ادھر ادھر برتن پڑے رہتے تھے۔ ایک کونے میں آٹے کی منکی تھی۔ اُس پر دو تین دالیں، نمک، مسالا وغیرہ تھا۔ اسی کے پاس جلانے کی لکڑیاں۔ خلاصہ²⁰ یہ کہ سب کچھ یہیں تھا۔ چوڑھے کے اوپر دو کپلیں لگی ہوئی تھیں۔ کھانا پکاتے وقت اُن پر

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	چراغ	चिराग	पुरुषो. चिराग, दीप
	چھینکا	छींका	पुरुषो. छींका
	پياز	पियाज़	स्त्रियों. प्याज़
	سالن	सालन	पुरुषो. शोरबा (गोश्त/ मछली का)
	چپاٲی	चपाती	स्त्रियों. चपाती, रोटी
	استاد	उस्ताद	पुरुषो. उस्ताद, गुरु, अध्यापक
	جھڑکی	झिड़की	स्त्रियों. झिड़की, गुस्से से कहना
	کرتوت	करतूत	स्त्रियों. शरारत, उदंडता
	اول اول	अव्वल अव्वल	क्र.वि. पहले पहल
11	/ادھر ہوا ... نکلا/ : “इधर हुआ हुसैनी बाहर गयीं, उधर मैंने आईना निकाला”		
	ناک نقشہ	नाक नक्शा	पुरुषो. नाक नक्शा, रूप
13	/اپنا ناک ... ملاٲی تھی/ : “अपना रूपरंग दूसरी रंडियों से मिलाती थी।		
	چہرہ	चेहरा	पुरुषो. चेहरा
	بہتر	बेहतर	विशे. श्रेष्ठ
	دراصل	दरअस्ल	क्र.वि. वास्तव में
19	/اس وقت ... ہوگا/ : “उस वक़्त तो और भी यांचन होगा”		

چراغ رکھ دیا جاتا تھا۔ اس کوٹھری میں دو پھینکے بھی تھے۔ ان میں سے ایک میں پیاز رہتی تھی اور دوسرے میں سالن کی پتلی۔ اسی میں چپاتیاں ڈھانپ کر رکھ دی جاتی تھیں۔ صبح سے گیارہ بجے تک مولوی صاحب کی مار اور شام کو استاد کی جھڑکیاں، یہ ہماری زندگی تھی۔ مگر میں اپنی کرتوتوں سے باز نہیں آتی تھی۔

اَوَّل اَوَّل تو مجھے آئینہ دیکھنے کا شوق ہوا۔ اب میری عمر چودہ برس کی تھی۔ ادھر بُوا حُسنی کوٹھری سے نکلیں، ادھر میں نے آئینہ نکالا۔¹¹ اپنی صورت دیکھنے لگی۔ اپنا ناک نقشہ اور رنڈیوں سے ملاتی تھی۔¹³ مجھے اپنے چہرے میں کوئی چیز بُری معلوم نہ ہوتی تھی، بلکہ اوروں سے اپنے کو بہتر سمجھتی تھی۔ اگرچہ دراصل ایسا نہ تھا۔

رُسوا: تو کیا آپ کی صورت کسی سے بُری تھی۔ اب بھی سینکڑوں سے اچھی ہے۔ اُس وقت تو اور بھی جو بن ہوگا۔¹⁹

- क्र. उर्दू देवनागरी अर्थ
- تعریف तारीफ स्त्रियों. प्रशंसा
- 2 /خیر اب ... رہنے دیجیے/ : “खैर, अब इस प्रशंसा (तारीफ) को रहने दीजिए।”
- 3 /دل ہی دل میں/ : “अपने मन में”
- ہائے हाय विस्मया. हाय
- توجہ तवज्जोह स्त्रियों. ध्यान
- 6 /میری طرف ... نہیں کرتا/ : “कोई मेरी तरफ ध्यान ही नहीं देता”
- ممکن मुमकिन विशेष. संभव
- 8 /یہ تو ... نہ ہو/ : “यह तो मुमकिन ही नहीं कि किसी को आपका ध्यान न हो”
- عقل अक़ल स्त्रियों. बुद्धि
- جلنا जलना अ.क्रि. जलना, ईर्ष्या
- 11 /راتوں ... گئی تھی/ : “मैं रात को सो नहीं सकी थी”
- کنگھی کرنا कंघी करना स.क्रि. कंघी करना, बाल झाड़ना
- صدمہ सदमा पुरुषों. दुख
- چوٹی گوندھنا चोटी गंधना स.क्रि. चोटी बनाना
- سینہ सीना पुरुषों. छाती
- لوٹنا लोटना अ.क्रि. लोटना
- 18 /میرے سینے ... جاتا تھا/ : “मैं ईर्ष्या से जल जाती थी” /सीने पे सांप लोटना/ मुहावरा
- فرصت फुर्सत स्त्रियों. समय, अवसर
- 20 /نہیں تو ... کھلے ہیں/ : “नहीं तो मेरे बाल सारा दिन खुले हैं”

اُمر او: خیر اب اس تعریف کو رہنے دیجیے۔ اُس وقت
دل ہی دل میں کہتی تھی کہ ہائے مجھ میں کیا بُرائی ہے جو میری
طرف کوئی توجہ نہیں کرتا۔

رُسوا: یہ تو ممکن نہیں کہ کسی کو آپ کی طرف توجہ نہ ہو۔ مگر⁸
آپ کی مستی نہیں ہوئی تھی۔ خانم سے لوگ ڈرتے تھے،
اس لیے آپ سے کوئی بولتا نہ ہوگا۔

اُمر او: شاید یہی ہو۔ مگر مجھے اتنی عقل کہاں تھی۔ میں¹¹
دوسروں کو دیکھ کر جلتی تھی، راتوں کی پُند اڑ گئی تھی۔
اُسی زمانے میں کنگھی کرتے وقت اور بھی صدمہ ہوتا

تھا۔ اس لیے کہ کوئی چوٹی گوندھنے والا نہ تھا۔ جب بسم اللہ
کی چوٹی نواب چبّتن صاحب اپنے ہاتھ سے گوندھتے تھے
تو میرے پسنے پر سانپ لوٹ جاتا تھا۔ یہاں کون تھا،
وہی بُوا خیننی۔ وہ بھی جب اُنھیں فرصت ہوئی، نہیں تو²⁰
سارا دن بال کھلے ہیں۔ آخر میں نے اپنے ہاتھ سے چوٹی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	جوڑا	जोड़ा	पुरुषो. जोड़ा कपड़े का
	پوشاک	पोशाक	स्त्रियो. परिधान, पहनावा
3	/ یہاں سارا ... پوشاک / : "मैं हफ्ते में केवल एक बार पोशाक बदलती हूँ"		
4	/ اس پر بھی / : इस पर भी		
	جی چاہنا	जी चाहना	अ.क्रि. जी चाहना, इच्छा करना
	بہانہ	बहाना	पुरुषो. बहाना
7	/ کسی نہ ... جاتی تھی / : "किसी न किसी तरह वहां से हटा दी जाती थी"		
8	/ ہر طرح ... کرتی تھی / : "उन दिनों में हर तरह से मर्दों को अपनी तरफ रिक्रानती थी"		
	کس قدر	किस कदर	विशे. कितना
	غنیمت	गनीमत	स्त्रियो. संतोष की बात
11	/ آپ سمجھ ... ہوتا تھا / : "आप समझ सकते हैं कि गोहर मिर्ज़ा ऐसे वक़्त और ऐसी हालतों में मुझे कितना सहाय्य देता था"		
	سنگترہ	संगतरा	पुरुषो. संतरा
	چپکے سے	चुपके से	क्रि.वि. चुपके से

گوئد ہنا سیکھا - دوسری رنڈیاں تو دن میں تین تین جوڑے بدلتی تھیں، یہاں سارا ہفتہ وہی پوشاک³ - اس پر بھی⁴ میرا جی چاہتا تھا کہ مردوں میں جا کر بیٹھوں - کبھی بسم اللہ کے کمرے میں چلی گئی، کبھی امیر جان کے پاس - مگر جہاں جاتی تھی، کسی نہ کسی بہانے سے اٹھا دی جاتی تھی - سب کو اپنے مزے کا خیال تھا - مجھے کون بیٹھنے دیتا تھا - اُن دنوں میں ہر طرح مردوں سے لگاؤٹ⁸ کرتی تھی اس وجہ سے لوگ مجھے بیٹھنے نہ دیتے تھے -

مرزا صاحب ! آپ سمجھ سکتے ہیں کہ گوہر مرزا ایسے وقت اور اس حالت میں مجھے کس قدر غنیمت معلوم ہوتا تھا۔¹¹ وہ مجھ سے پیار کی باتیں کرتا تھا - میں اُس کو پھیرتی تھی، وہ مجھے پھیرتا تھا - میں اُس کو اپنا چاہنے والا سمجھتی تھی اور وہ بھی اُن دنوں مجھ کو چاہتا تھا - جب صبح مکتب میں آتا، دو سنگترے جیب میں پڑے ہوتے - مجھے چپکے سے دے دیتا۔

क्र. उर्दू देवनागरी अर्थ

- 1 / ہزاروں روپے... اٹھائے ہوں گے / : “میں نے अपनी जिंदगी में अपने हाथों से हजारों रुपये कमाए और खर्च किये होंगे”

راز داری	राजदारी	स्त्रियो.	रहस्य या भेद जानना
سمجھ	समझ	स्त्रियो.	समझ, ज्ञान
بے شک	बेशक	क्रि.वि.	निःसंदेह/शक/संदेह
سن تمیز	सिने तमीज़		किशोरावस्था
گھٹا	घटा	स्त्रियो.	घटा, बादल
گر جٹا	गरजना	अ.क्रि.	गरजना
اکيلا	अकेला	विशे.	अकेला

ایک دن نہ معلوم کہاں سے ایک روپیہ لے آیا۔ وہ بھی مجھے دے دیا۔ ہزاروں روپے اپنی زندگی میں میں نے اپنے ہاتھ سے اٹھائے ہوں گے¹، مگر اُس ایک روپے کے پانے کی خوشی کبھی نہ بھولوں گی۔ اس سے پہلے مجھے پیسے تو بہت ملے تھے، مگر روپیہ کبھی نہیں ملا تھا۔ وہ روپیہ میں نے بہت دن تک اپنے پاس رکھا۔ مجھے اُس کے خرچ کرنے کی کوئی ضرورت نہ تھی۔ یہ بھی خیال تھا کہ خرچ کرتی ہوں، تو لوگ پوچھیں گے، کہاں سے ملا، تو کیا بتاؤں گی۔ رازداری کی سمجھ مجھے بھی آگئی تھی۔ بے شک میں سن تمیز کو پہنچ چکی تھی۔

برسات کے دن ہیں۔ گھٹا آسمان پر چھائی ہوئی ہے۔ پانی برس رہا ہے۔ بجلی چمک رہی ہے۔ بادل گرج رہا ہے۔ میں بُوا خیننی کی کوٹھری میں اکیلی پڑی ہوں۔ بُوا خیننی خانم کے ساتھ حیدری کے گھر گئی ہوئی ہیں۔ چراغ بجھ

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	جشن	जश्न	पुरुषो. उत्सव, समारोह
	قبضہ	कहकहा	पुरुषो. ज़ोर की हंसी
	بلند ہونا	बुलन्द होना	अ.क्रि. उंचा होना, प्रगति करना
	تہائی	तन्हाई	स्त्रियो. एकांत
	آس پاس	आस पास	क्रि.वि. आस पास
	دُلائی	दुलाई	स्त्रियो. दुलाई
	گھگھی بندھنا	धिग्धी बंधना	अ.क्रि. धिग्धी बंधना
	آخر کار	आखिरकार	क्रि.वि. आखिरकार, अन्ततः
	بے ہوش	बेहोश	विशे. बेहोश
11	/ وہ... ہے / : "वह नहीं मिला" (नाकारात्मक)		
	منہ تھوٹھانا	मुंह थोथाना	स.क्रि. मुंह फुलाये
	بڑبڑانا	बड़बड़ाना	अ.क्रि. बड़बड़ाना
14	/ خانم منہ... پھرتی ہے / : "खानम नागज़ हैं, वुआ हुसैनी बड़बड़ाती हुई इधर से उधर फिरती है"		
15	/ سب پوچھ... تو بتاؤں / : "सब पूछ पूछ कर थक गये लेकिन मुझे कुछ मालूम ही नहीं कि बताऊं"		

گیا ہے اور اندھیرا ہے۔

دوسرے کمروں میں جشن ہو رہے ہیں۔ کہیں سے گانے کی آواز آرہی ہے، کہیں تہقے بلند ہو رہے ہیں۔ لیکن میں اس اندھیری کوٹھری میں اپنی تنہائی پر رو رہی ہوں۔ کوئی آس پاس نہیں ہے۔ جب بجلی چمکتی ہے، دُلائی سے منہ ڈھانپ لیتی ہوں۔ جب گرج کی آواز آتی ہے، کانوں میں انگلیاں دے لیتی ہوں۔ اسی حالت میں پیند آگئی۔ اتنے میں یہ معلوم ہوا کہ کسی نے زور سے میرا ہاتھ پکڑ لیا۔ میری گھٹکی بندھ گئی۔ منہ سے آواز تک نہ نکلی۔ آخر کار میں بے ہوش ہو گئی۔

صبح چور کو ڈھونڈھا گیا۔ وہ کہاں ملتا ہے۔¹¹ خانم منہ تھوٹھائے بیٹھی ہیں۔¹⁴ بڑا خینی بڑا قاتی پھرتی ہیں۔ میں چپ بیٹھی ہوں۔ سب پوچھ پوچھ کر تھک گئے۔ مگر مجھے¹⁵ کچھ معلوم ہو تو بتاؤں۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
1	یہ نہیں... کیوں بتاتی /	“यह क्यों नहीं कहती कि अगर तुम्हें मालूम भी होता तो तुम क्यों बताती”	
	باتیں بنانا	बातें बनाना	स.क्रि. बातें बनाना, मनगढ़त बात कहना
	مایوسی	मायूसी	स्त्रियो. निराशा
	بے اختیار	बे-इख्तियार	क्रि.वि. सहसा, बेरोक
	خاک	खाक	स्त्रियो. मिट्टी
6	ان کی... مل گئیں /	“उनकी उम्मीदें (आशाएं) मिट्टी में मिल गयीं”	
7	آپ کا... ہو گیا /	“आपके लिए तो मज़ाक हो गया”	
	دبانا	दबाना	स.क्रि. दबाना, छुपाना
9	اس معاملے... نہ تھا /	“इस बात को इस तरह दबा दिया जैसे कुछ हुआ ही नहीं”	
11	اب کسی... تلاش ہوئی /	“अब उन्हें किसी अंधे लेकिन धनवान व्यक्ति की तलाश हुई”	
	والد	वालिद	पुरुषो. पिता
	دولت	दौलत	स्त्रियो. धन
	وطن	वतन	पुरुषो. घर, मातृभूमि

رُسوا : یہ نہیں کہتیں کہ اگر معلوم بھی ہوتا تو کیوں بتاتی¹۔
 امراؤ : خیر اب باتیں نہ بنائیے، سنتے جائیے۔

خانم کی اُس دن کی مایوسی اور بڑا خیننی کا اداس چہرہ
 جب مجھے یاد آتا ہے تو بے اختیار ہنسی آ جاتی ہے۔
 رُسوا : کیوں نہ آئے۔ اُن کی اُمیدیں خاک میں مل گئیں⁶ اور
 آپ کا مذاق ہو گیا۔⁷

امراؤ : اُمیدیں خاک میں مل گئیں ! خانم کو آپ نہیں جانتے۔
 اِس معاملے کو اِس طرح دبا دیا جیسے کچھ ہوا ہی نہ تھا۔⁹

اب کسی آنکھ کے اندھے گانٹھ کے پورے کی تلاش
 ہوئی¹¹۔ آخر ایک بے وقوف پھنس ہی گیا۔ اُن کا نام راشد علی
 تھا۔ اُن دنوں پڑھنے کے لیے لکھنؤ آئے ہوئے تھے۔ اُن کے
 والد رشوت کے روپے سے بڑی دولت چھوڑ گئے تھے۔ روپیہ
 وطن سے آرہا تھا۔ وہ جو لکھ بھیجتے تھے، اُن کی ماں بیچاری
 بھیج دیتی تھیں، اِس خیال سے کہ لڑکا پڑھنے گیا ہے، مولوی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	عیش پسند	ऐश पसंद	विशे. आराम पसंद
	مفت خورہ	मुफ्त-खोरा	विशे. मुफ्त खाने वाला, लोफर
3	/آپ/ यहां आप का तात्पर्य तुम नहीं बल्कि 'वो' (वह) (के महोदय); 'आप' किसी को सम्मान देने के लिए प्रयुक्त होता है और यह सामान्यतः खुदा या पैगम्बर अथवा संत के लिए प्रयोग किया जाता है।		
	کہنا سننا	कहना सुनना	पुरुषो. कहना सुनना
5	/انہیں لوگوں... پیدا ہوا/ : "इन्हीं लोगों के दबाव से कुछ कहने सुनने का शौक पैदा हुआ"		
	کم سن	कमसिन	विशे. कम उम्र
	التجا	इल्तिजा	स्त्रियो. प्रार्थना
	بے قراری	वेकरारी	स्त्रियो. बेचैनी
	رہن کرنا	रहन करना	स.क्रि. गिरवी रखना
	گن دینا	गिन देना	स.क्रि. गिन कर दे देना
	منڈھنا	मंढना	स.क्रि. मंढना
13	/میں راشد... دی گئی/ : "मैं राशिद अली को दे दी गयी"		
	ماہوار	माहवार	क्रि.वि. मासिक
	شریف زادہ	शरीफज़ादा	विशे. शरीफ का बेटा
	نواب زادہ	नवाबज़ादा	विशे. नवाब का बेटा

بن کے آئے گا۔ عیش پسند مفت خور³ آپ کے ساتھ رہتے تھے۔ اُنہیں لوگوں کے کہنے سننے سے کچھ شوق پیدا ہوا۔⁵ ادھر خانم کا یہ کہنا: 'ناصاحب! ابھی وہ کہیں ہے'، آخر اُن کی التجا اور بے قراری آج تک مجھے یاد ہے۔ آخر پانچ ہزار روپے پر فیصلہ ہوا۔ روپیہ لینے کے لیے اُنہیں وطن جانا پڑا۔ ماں سے چھپا کے دو گاؤں آپ نے رہن کر دیے۔ 'بیس پچیس' ہزار روپیہ لے کر لکھنؤ آئے۔ پانچ ہزار خانم کو گن دیے۔

خلاصہ یہ کہ میں راشد علی کے سرمنڈھ دی گئی۔¹³ بچھ بینے وہ لکھنؤ میں رہے، سو روپیہ ماہوار دیتے رہے۔ اب میں گویا آزاد ہو گئی۔ دو خدمت گار میرے لیے خاص ملازم ہوئے۔ پھانک کے پاس والا کمرہ میرے لیے سجا دیا گیا۔ دو چار آدمی، شریف زادے نواب زادے میرے پاس بھی آکر بیٹھنے لگے۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	گلچیں اول	गुलर्ची अव्वल	विशे. फूल तोड़ने वाला पहला व्यक्ति
	برابر	बराबर	क्रि.वि. हमेशा, निरंतर
3	/بوا حسینی... تھیں/ : “बुआ हुसैनी और खानम उसके रूप से जलती थीं”		

گلچینِ اول گوہر مرزا ہر زمانے میں مجھ سے برابر ملتا
 رہا۔ بواخینی اور خانم اُس کی صورت سے جلتی تھیں³۔
 مجھے محبت تھی، اِس لیے کوئی روک نہیں سکتا تھا۔

(مرزا محمد ہادی رسوا)

सैयद एहतिशाम हुसैन

सैयद एहतिशाम हुसैन इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उर्दू विभाग के अध्यक्ष रहे थे। वे उर्दू के शीर्ष मार्क्सवादी आलोचकों में थे। कई किताबों के साथ-साथ उनके साहित्यिक निबंधों के आधा दर्जन से ज्यादा संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

आज़मगढ़ जिले (उ.प्र.) के एक छोटे-से गाँव माहुल में 1912 ई. में उनका जन्म हुआ। आज़मगढ़ से हाई स्कूल करने के बाद इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्होंने एम ए की उपाधि प्राप्त की। 1938 ई. में लखनऊ विश्वविद्यालय में पहली बार उनकी उर्दू प्राध्यापक के रूप में नियुक्ति हुई। वहाँ से वे 1952 ई. में रॉकफ़ेलर फ़ाउंडेशन द्वारा एक अध्ययन-यात्रा पर अमेरिका गये। उनके तत्संबंधी अनुभव 'साहिल और समंदर' शीर्षक यात्रा-वृत्तांत में संकलित हैं। वे 1961 ई. में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उर्दू विभागाध्यक्ष नियुक्त हुए।

सैयद एहतिशाम हुसैन ने क्लासिकी और आधुनिक साहित्य पर विस्तारपूर्वक लिखा है। वे प्रगतिशील साहित्य आंदोलन के अग्रणी लेखकों और संगठनकर्ताओं में रहे हैं और उन्होंने उर्दू आलोचना को नया आधार एवं नई दिशा दी। उनके गद्य से उनकी एक सौम्य और गंभीर लेखक की छवि उभरती है। वे एक रोचक, विनम्र एवं आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे। उनकी उर्दू आम बोलचाल के नज़दीक है। उनके यहाँ संभ्रांत और अलंकृत किस्म के प्रयोगों के लिए जगह नहीं थी। इस चयन के लिए विशेष रूप से लिखा गया सर सैयद अहमद ख़ाँ पर उनका निबंध एक सुस्पष्ट, तर्कसंगत एवं सहज पठनीय गद्यशैली का नमूना है।

सर सैयद अहमद ख़ाँ आधुनिक उर्दू गद्य के जनक माने जाते हैं। वे एक महान् मुस्लिम समाज सुधारक, बल्कि भारतीय मुसलमानों में से पहले व्यक्ति थे जिन्होंने धार्मिक एवं सामाजिक मामलों में वस्तुनिष्ठता एवं तर्कशीलता के लिए वैज्ञानिक रवैये की ज़रूरत पर बल दिया। एक विशिष्ट गद्य-शिल्पी के

रूप में उन्होंने आधुनिक उर्दू साहित्य को समृद्ध किया। उनसे पूर्व सामान्यतया उर्दू गद्य, शाइरी का अनुचर अर्थात् अलंकृत, शब्दाडंबरयुक्त एवं आयासपूर्ण था। उन्होंने इसे अतीत की दकियानूसियत से मुक्त किया और सामाजिक, राजनीतिक एवं तार्किकतापूर्ण विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए इसका बड़े पैमाने पर उपयोग किया। एक निबंधकार की हैसियत से वे बौद्धिक रूप से प्रखर, उदग्र और दृष्टिसंपन्न थे। उन्होंने उर्दू में 'गद्य एवं तर्क के युग' का प्रवर्तन किया। इस युग प्रवर्तक का प्रभाव इतना महान् था कि इसके लेखन ने न सिर्फ़ हाली (मृत्यु 1914), शिवली (मृत्यु 1914) आज़ाद (मृत्यु 1910) और नज़ीर अहमद (मृत्यु 1912) की रचनाओं का मार्ग प्रशस्त किया, बल्कि इसने 'उर्दू साहित्य के अलीगढ़ स्कूल' नाम से विख्यात एक नयी साहित्यिक सरणि का सूत्रपात भी किया।

UNIT VII

सर सैयद अहमद खां

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	پڑھا لکھا	पढ़ा लिखा	विशे. शिक्षित, सभ्य
	کھاتا پیتا	खाता-पीता	विशे. सम्पन्न
	خاندان	खानदान	पुरुषो. परिवार
	عربی	अरबी	स्त्रियो. अरबी भाषा
6	/باپ کا... اٹھ گیا/ : “बाप का साया (छाया) सर से उठ गया” अर्थात् सर सैयद अहमद खां के पिता का देहांत हो गया, /साया/ : “छाया”		
	ایسٹ انڈیا کمپنی	ईस्ट इंडिया कम्पनी	ईस्ट इंडिया कम्पनी
	دفتر	दफ्तर	पुरुषो. कार्यालय
	نوکری	नौकरी	स्त्रियो. नौकरी, सर्विस
	سمجھ دار	समझदार	विशे. बुद्धिमान

سر سید احمد خاں

انیسویں صدی کی دہائی میں ایک پڑھا لکھا، کھانا پیتا
 خاندان بتاتا تھا۔ اسی گھر میں ۱۷ اکتوبر ۱۸۱۷ء کو ایک لڑکا
 پیدا ہوا جس کا نام سید احمد رکھا گیا۔ بڑا ہو کر یہی لڑکا
 ہندستان کی تاریخ میں سر سید کے نام سے مشہور ہوا اور
 بہت سے لوگ بھول گئے کہ ماں باپ نے اس کا نام
 سید احمد رکھا تھا۔ اُس زمانے کے شریف مسلمان گھروں
 میں بچوں کو فارسی عربی پڑھائی جاتی تھی۔ سر سید نے بھی
 وہی پڑھی۔ جب وہ بیس سال کے تھے تو باپ کا سایہ
 سر سے اُٹھ گیا اور انھوں نے ایسٹ انڈیا کمپنی کے ایک
 دفتر میں نوکری کر لی۔ وہ بچپن ہی سے بڑے سمجھ دار اور

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	مختی	मेहनती	विशे. मेहनती, परिश्रमी
	جج	जज	पुरुषो. जज, न्यायधीश
	بغاوت	बगावत	स्त्रियो. विद्रोह
	ماركاٹ	मारकाट	स्त्रियो. मारकाट, फ़साद
	تعلقات	तअल्लुकात	पुरुषो. तअल्लुक (संवन्ध) का बहुवचन
	دوستانہ	दोस्ताना	क्रि.वि. मित्रवत
	زبان	ज़बान	स्त्रियो. भाषा
	علوم	उलूम	पुरुषो. इल्म (ज्ञान) का बहुवचन
	سائنٹفک سوسائٹی	साइंटिफ़िक सोसायटी	स्त्रियो. साइंटिफ़िक सोसायटी
	قائم کرنا	कायम करना	स.क्रि. स्थापित करना

معنتی تھے ، جلد جلد ترقی کر کے نج ہو گئے ۔ اپنے سرکاری کام سے وقت بچا کر لکھتے پڑھتے بھی رہتے تھے ، اس لیے اُن کی بڑی عزت تھی ۔

۱۸۵۷ء میں جب سرسید کی عمر چالیس سال کی تھی ، ہندوستانیوں نے آزادی حاصل کرنے کے لیے انگریزوں کے خلاف بغاوت کر دی ۔ ہر طرف مار کاٹ ہونے لگی ۔ سرسید نے بہت سے انگریزوں کی جان بچائی اور اس بات کی کوشش کی کہ انگریزوں اور ہندوستانیوں کے تعلقات دوستانہ ہو جائیں ۔ اس سلسلے میں اُنھوں نے بہت کام کیے ۔ اُن کا خیال تھا کہ دونوں قوموں میں دوستی اُسی وقت ہو سکتی ہے ، جب ہندوستانی انگریزی زبان ، رہن سہن ، خیالات اور علوم سے واقف ہوں ۔ اس کے لیے اُنھوں نے اسکول کھولے اور ایک سائنٹفک سوسائٹی قائم کی ، جس کا کام یہ تھا کہ انگریزی کی کتابوں کا ترجمہ کیا جائے اور اُردو جاننے والے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	سائنس	साइंस	स्त्रियो. विज्ञान
	ساجی	समाजी	विशे. सामाजिक/ समाज से संबंधित
	انگلستان	इंग्लिस्तान	पुरुषो. इंग्लैंड
	مطلب	मतलब	पुरुषो. उद्देश्य, तात्पर्य
	ظاہر کرنا	ज़ाहिर करना	स.क्रि. व्यक्त करना
	تہذیب الاخلاق	तहज़ीबुल अख़लाक	॥ संस्कृति
	نثر	नस्र	स्त्रियो. गद्य
	شکل	शक्ल	स्त्रियो. रूप, आकृति

سائنس اور دوسرے نئے علوم سے واقف ہوں۔ اس سوسائٹی کا ایک اخبار بھی نکلتا تھا۔ اس دوران میں سرسید مراد آباد غازی پور، علی گڑھ اور بنارس میں رہے اور سماجی کام کرتے رہے۔

۱۸۶۵ء میں سرسید انگلستان گئے۔ اُن کے دو لڑکے سید حامد اور سید محمود بھی ساتھ تھے۔ وہ انگلستان اپنے لڑکوں کی تعلیم کا انتظام کرنے گئے تھے مگر مطلب تھا وہاں کی تعلیم اور رہن بہن کو دیکھنا، اچھی کتابیں لانا اور وہاں کی زندگی کو سمجھنا۔ سرسید وہاں سے بہت کچھ دیکھ اور سمجھ کر واپس آئے۔ سب سے پہلے انھوں نے اپنے نئے خیالوں کو ظاہر کرنے اور پھیلانے کے لیے ایک رسالہ نکالا، جس کا نام تہذیب الاخلاق تھا۔ اس سے لوگوں کے خیالات ہی نہیں بدلے، اردو نثر کی بھی ترقی ہوئی۔ کچھ دنوں بعد انھوں نے علی گڑھ میں وہ کالج کھولا جو آج علی گڑھ مسلم یونیورسٹی کی شکل میں

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	موجود	मौजूद	क्रि.वि. उपस्थित
	یادگار	यादगार	स्त्रियो. यादगार
	واسرائے	वायसराय	पुरुषो. वायसराय
	کونسل	कौंसिल	स्त्रियो. कौंसिल
	ممبر	मिम्बर	पुरुषो. सदस्य
	سر	सर	सर, Sir
	خطاب	खिताब	पुरुषो. उपाधि
	شخص	शख्स	पुरुषो. व्यक्ति
	انتقال ہونا	इन्तिकाल होना	अ.क्रि. मृत्यु होना
	رہنما	रहनुमा	पुरुषो. नेता, मार्गदर्शक
	نام پانا	नाम पाना	स.क्रि. प्रसिद्धि
	کم عمری	कमउम्री	स्त्रियो. युवावस्था
	عمارت	इमारत	स्त्रियो. इमारत
	آثارالصنادید	आसारुस्सनादीद	सरदारों के चिन्ह

जिन शब्दों में अरबी कारक-चिन्ह 'अल' का प्रयोग होता है, उनका उच्चारण निम्नलिखित नियम से किया जाता है:

यदि शब्द का पहला अक्षर, जिसके उपसर्ग के रूप में 'अल' का प्रयोग हुआ है, निम्नलिखित चौदह अक्षरों में से एक है — ت، ث، د، ذ، ز، س، ش، — तब कारक-चिन्ह के 'लाम' के होते हुए भी उसका मूल उच्चारण समाप्त हो जायेगा और वह अगले शब्द के पहले अक्षर के साथ मिलकर उसे द्वित्व बना देगा। इसके ऊपर 'तश्दीद' (द्वित्व) का चिन्ह लगाया जायेगा। उदाहरण के लिए 'आसार-अल-सनादीद' का उच्चारण 'आसारुस्सनादीद' किया जायेगा; 'दार-अल-तर्जुमा' का उच्चारण 'दारुत्तर्जुमा' किया जायेगा। उपर्युक्त चौदह अक्षरों को 'हुरूफुश्शमसिया' (सूर्य वर्ण) कहा जाता है, क्योंकि इनमें से एक अक्षर से 'शम्स' शब्द शुरू होता है। बाकी अक्षरों को 'हुरूफुलकमरिया' (चंद्र वर्ण) कहा जाता है, क्योंकि उनमें से एक से 'कमर' शब्द शुरू होता है। वाद की श्रेणी के अक्षरों में कारक-चिन्ह 'अल' के लाम का उच्चारण किया जाता है। उदाहरण के लिए, तहज़ीब-उल-अज़्लाफ़, ईदुलफ़ित्र।

موجود ہے اور اُن کی بڑی یادگار ہے۔

اب سرسید بہت مشہور ہو چکے تھے۔ انھیں وائسرائے کی کونسل کا ممبر بھی بنادیا گیا تھا اور سر کا خطاب بھی انگریزی سرکار کی طرف سے ملا تھا۔ اب انھیں ہر شخص سرسید ہی کہتا تھا۔ ۲۷ مارچ ۱۸۹۵ء کو اُن کا انتقال ہو گیا۔

سرسید ایسے لوگوں میں گنے جاتے ہیں جو دنیا میں کم ہی پیدا ہوتے ہیں۔ انھوں نے اپنے زمانے کو سمجھا اور اپنے ملک کو وقت کے ساتھ چلانے کی کوشش کی۔ وہ ایک اچھے رہنما، اچھے ادیب اور اچھے انسان تھے۔ انھیں کام سے محبت تھی اس لیے انھوں نے نام بھی پایا۔

لکھنا سرسید نے کم عمری ہی سے شروع کر دیا تھا۔ کچھ ترجمے کیے، کچھ چھوٹی چھوٹی کتابیں لکھیں، لیکن تیس سال کی عمر میں انھوں نے دہلی کی پرانی عمارتوں اور مشہور لوگوں کے بارے میں اپنی کتاب "آثار الفنا دیہ لکھی تو بہت

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	فرانسیسی	फ्रांसिसी	विशे. फ्रांसीसी
	یورپ	युरोप	पुरुषो. युरोप
	شہرت	शोहरत	स्त्रियो. प्रसिद्धि
	اسباب بغاوت ہند	अस्बाबे बगावते हिन्द	भारत विद्रोह के कारण
	برطانیہ	बर्तानिया	पुरुषो. ब्रिटेन
	پارلیمنٹ	पार्लिमेंट	स्त्रियो. संसद
	مذہبی	मज्हबी	विशे. धार्मिक
	مضمون	मज्मून	पुरुषो. लेख
	خوشامدی	खुशामदी	विशे. चापलूस
	نسل	नस्त	स्त्रियो. पीढ़ी
	اثر	असर	पुरुषो. प्रभाव
	شمار کرنا	शुमार करना	स.क्रि. गिनना
	نصف	निस्फ	विशे. आधा

مشہور ہو گئے۔ اس کا ترجمہ فرانسس میں بھی ہوا اور یورپ میں بھی انہیں شہرت حاصل ہوئی۔ بخور میں جو بغاوت ہوئی تھی، سرید نے اُس کی تاریخ بھی لکھی۔ بغاوت کے بارے میں "اسبابِ بغاوتِ ہند" لکھ کر برطانیہ کی پارلیمنٹ میں بھیجی۔ کئی مذہبی کتابیں لکھیں، مگر اردو ادب میں اُن کے وہ چھوٹے چھوٹے مضمون زیادہ مشہور ہوئے جو ہندوؤں کا خلاق میں چھپے تھے۔ اُن کے خیالات کو کچھ مسلمان پسند کرتے تھے کچھ ناپسند۔ کچھ لوگ اُن کو انگریزی راج کا خوشامدی سمجھتے تھے، کچھ لوگ ملک کا دوست۔ مگر سچ یہ ہے کہ وہ اپنے زمانے کے اُن لوگوں میں تھے جو بعد کی نسلوں پر اپنا گہرا اثر چھوڑتے ہیں اور جنہیں ملک کے تاریخی لوگوں میں شمار کرنا پڑتا ہے۔

اُنہیں صدی کا آخری نصف ہندستان کی تاریخ میں بڑی تبدیلیوں کا زمانہ تھا۔ ایک طرف وہ زندگی تھی

क्र.	اردو	देवनागरी	अर्थ
	سیاسی	سیاسی	विशे. राजनैतिक
	پریس	پ्रेस	पुरुषो. प्रेस
	کشمکش	कश्मकश्	स्त्रियो. दुविधा
	مفید	मुफीद	विशे. लाभकारी
	رائے	राय	स्त्रियो. राय, विचार
	مخالفت	मुखालिफत	स्त्रियो. विरोध
	قبول کرنا	कृबूल करना	स.क्रि. कृबूल करना, स्वीकार करना
	کے مطابق	के मुताबिक	के अनुसार
	خاص کر	खास कर	क्रि.वि. विशेष रूप से
	پیام	पयाम	पुरुषो. संदेश

جو سینکڑوں سال سے ایک ہی حال پر چلی جا رہی تھی اور دوسری طرف مغربی تعلیم، انگریزی ادب، سیاسی خیالات، پریس، ریل اور تار کے اثر سے پیدا ہونے والی نئی زندگی۔ ان دونوں میں بڑا فرق تھا۔ عام لوگوں کے لیے یہ بات بڑی مشکل تھی کہ وہ ان کی کشمکش کو سمجھیں مگر سرسید انگریزی زبان نہ جانتے ہوئے بھی اس کو اچھی طرح سمجھتے تھے۔ وہ جانتے تھے کہ باہر سے جو خیالات آرہے ہیں، ان میں سے کون سے خیالات ملکی ترقی کے لیے مفید ہیں۔ اس لیے ان کی رائے تھی کہ چاہے ان کی کتنی ہی مخالفت کی جائے ان خیالات کو قبول کر لینا چاہیے۔ ترقی کی راہ میں جو رکاوٹیں تھیں، وہ انہیں بھی جانتے تھے۔ اس طرح اپنی سوجھ بوجھ کے مطابق وہ نئے اور پرانے 'پلورب اور پیچٹم' کو بلا کر ہندوستانیوں اور خاص کر مسلمانوں کو ایک نئی زندگی کا پیام دینا چاہتے تھے۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	تیزی	तेज़ी	स्त्रियो. तीव्र, तेज़ी
	غلط	ग़लत	विशे. ग़लत
	طریقہ تعلیم	तरीक़ा-ए तालीम	पुरुषो. शिक्षा पद्धति
	شعروادب	शेरो-अदब	पुरुषो. साहित्य, गद्य-पद्य बहु.
	نقطہ نظر	नुक्ताए नज़र	पुरुषो. दृष्टिकोण
	اہمیت	अहमियत	स्त्रियो. महत्व
	رنگین	रंगीन	विशे. रंगीन
	کے مقابلے میں	के मुक़ाबले में	के मुक़ाबले में
	نتیجہ	नतीजा	पुरुषो. परिणाम, फल
	تحریر	तहरीर	स्त्रियो. लेखन
	سادگی	सादगी	स्त्रियो. सादगी
	(پر) زور دینا	(पर) ज़ोर देना	(पर) ज़ोर देना
	رنگینی	रंगीनी	स्त्रियो. रंगीनी

تبدیلی کا یہ پیام ایسا تھا کہ جو لوگ اُس کو نہیں
 سمجھ سکتے تھے وہ سرسید کو مذہب اور قوم کا دشمن سمجھنے
 لگے۔ لیکن زمانہ جس تیزی سے بدل رہا تھا، اُسے دیکھتے
 ہوئے اُن کے خیالات کو غلط نہیں کہا جاسکتا۔ وہ سماج میں
 طریقہ تعلیم میں، اور شعر و ادب میں، ہر چیز میں تبدیلی چاہتے
 تھے۔ یہی پرانے بندھنوں کو توڑ کر آگے بڑھنے کا راستہ تھا۔
 ادبی نقطہ نظر سے بھی سرسید کے کاموں کی خاص اہمیت
 ہے۔ انھوں نے رنگین اور بناوٹی ادبی زبان کے مقابلے میں
 سیدھی سادھی نثر کی طرف توجہ کی اور اُن کے اثر سے اُس
 زمانے کے کئی اور لکھنے والوں نے بھی ویسی ہی نثر لکھی۔
 اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ تحریر میں سادگی اور مطلب پر زور
 دیا جانے لگا۔ سرسید کی تحریروں میں رنگینی اور سجاوٹ
 تو نہیں ہے مگر زور اور سچائی بہت ہے۔

اُس زمانے کے مشہور ادیبوں میں خواجہ الطاف حسین حالی،

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
1	ذڪاء اللہ	जकाउल्लाह	
	مخالف	मुखालिफ	विशे. विरोधी
	رنگ	रंग	पुरुषो. रंग
	مختصر یہ کہ	मुख्तसर ये कि	संक्षिप्त यह कि
	دور	दौर	पुरुषो. युग
	(میں) ہاتھ ہونا	(में) हाथ होना	सहभागी होना
	کارنامہ	कारनामा	पुरुषो. उपलब्धि
	نظر انداز کرنا	नज़रअंदाज़ करना	स.क्रि. उपेक्षा करना

ڈاکٹر نذیر احمد، ذکاء اللہ¹، محسن الملک، چراغ علی، مولانا شبلی اور کچھ دوسرے لکھنے والے سرسید سے متاثر ہوئے۔ ان میں سے کئی ایسے تھے جن کے مضامین سرسید کے رسالے تہذیب الاخلاق ہی میں چھپتے تھے۔ دل چسپ بات یہ ہے کہ جو لوگ سرسید کے مخالف تھے، وہ بھی انہیں جیسی زبان استعمال کرنے پر مجبور ہوتے تھے۔ اس طرح اردو نثر میں وہ نیا رنگ پیدا ہو گیا جو آج تک اس کے اوپر چھایا ہوا ہے۔

مختصر یہ کہ ہندستان کونے دور میں داخل کرتے میں سرسید کا بڑا ہاتھ ہے اور ان کے کارناموں کو کبھی نظر انداز نہیں کیا جاسکتا۔

(سید احتشام حسین)

मुहम्मद हुसैन आज़ाद

मुहम्मद हुसैन आज़ाद उर्दू के महान् शैलीकारों में से हैं। एक शाइर के रूप में, अपने कुछ साथियों के साथ उन्होंने उर्दू शाइरी के नये युग की नींव डाली लेकिन उर्दू साहित्य में उनका स्थान मुख्यतः उनकी तेजस्वितापूर्ण एवं जीवंत शैली और साथ ही अतीत की पुनर्रचना की सामर्थ्य के कारण है।

मुहम्मद हुसैन का जन्म 1830 ई. में दिल्ली में हुआ। कुछ समय घर पर पढ़ाई करने के बाद उन्होंने उत्तर पश्चिम भारत की उस दौर की अग्रणी संस्था दिल्ली कॉलेज में अध्ययन किया। उनके पिता मुहम्मद बाकिर 1836 ई. में शुरू हुए दिल्ली के पहले उर्दू समाचार-पत्र 'दिल्ली उर्दू अख़बार' के संपादक थे। 1857 के विद्रोह के बाद वे उनकी देशभक्तिपूर्ण भावनाओं के कारण अंग्रेज़ सरकार ने उन पर मुक़दमा चलाया, और उनके घर व संपत्ति को ज़ब्त कर लिया। 'आज़ाद' बड़ी मुश्किल से बचे और छह-सात साल छिपते- छिपाते रहे। 1864 ई. में जब विद्रोह का गुबार थम चुका था, उन्हें लाहौर के शिक्षा विभाग में नौकरी मिल गयी। इसके बहुत बाद ओरियंटल कॉलेज में अरबी के प्रोफ़ेसर के रूप में उनकी पदोन्नति हुई।

आज़ाद हालाँकि बहुत कम अंग्रेज़ी जानते थे लेकिन उन्हें अपने समय की समझ थी, और वह अच्छी तरह जानते थे कि पुराना उर्दू अदब एक अंधी सुरंग में प्रवेश कर गया है और इसे मुक्त कराने की ज़रूरत है। पंजाब के लोक शिक्षण निदेशक कर्नल हॉलरायड के इशारे पर 1874 ई. में उन्होंने एक मुशायरे की शुरुआत की, जहाँ ग़ज़लों की बजाय विषय आधारित नज़्में पढ़ी जाती थीं। इससे एक नया रुज़हान सामने आया, जिसके परिणामस्वरूप बाद में आधुनिक धारा की उर्दू शाइरी के आंदोलन ने जोर पकड़ा।

आज़ाद, विद्रोह की घटनाओं के आघातपूर्ण प्रभाव के कारण और बाद में जाकर अपनी बेटी की दुःखद मृत्यु के कारण, दिमागी ख़राबी के शिकार हो गये और अपने जीवन के अंतिम बीस वर्षों तक विक्षिप्तावस्था में रहे। 1910 ई. में लाहौर में उनका निधन हुआ।

‘आब-ए-हयात’, आधुनिक पद्धति से लिखा गया उर्दू कवियों का पहला वृत्तांत, आज़ाद की श्रेष्ठतम कृति है। इसमें उन्होंने उर्दू शाइरों के जीवन एवं कृतित्व को अद्भुत वर्णन-क्षमता एवं कल्पनाशीलता के साथ प्रस्तुत किया है कि इसे पढ़ते हुए पाठक स्वयं को अतीत के मोहक संसार में पाता है। विचित्र बात यह है कि इतिहास सम्बंधी कुछ चूकों के बावजूद इसकी गद्य-शैली की खूबखूब प्रशंसा की गई, यहाँ तक कि यह पुस्तक अपनी मिसाल आप बन गई। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि आज़ाद की लेखनी से छूकर कवियों के चित्रण और व्याख्यान जीते जागते आँखों के आगे घूमने लगते हैं।

आज़ाद का लेखन लगभग बीस पुस्तकों में प्रकाशित है। मध्यकालीन भारतीय इतिहास पर आधारित कहानी-संग्रह, ‘क़िसस-ए- हिंद’, रूपक कथात्मक निबंधों का संग्रह- (दो खंडों में) ‘नैरंग-ए- खयाल’ और अकबर महान् (1556-1605) के समय का इतिहास ‘दरबार-ए-अकबरी’ उनकी अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं। इन पुस्तकों में ‘आब-ए-हयात’ की भाँति उत्कृष्ट गद्य-शैली नहीं मिलती, फिर भी ये पुस्तकें अपने गद्य की सरसता, लयात्मकता, मोहकता और अपने विशिष्ट आस्वाद के लिए जानी जाती हैं।

प्रस्तुत संचयन के लिए ‘आब-ए-हयात’ से किसी गद्यांश के चयन को जान-बूझ कर छोड़ा गया है। कारण यह है कि उत्तर प्राथमिक पाठ्यक्रम के लिहाज़ से इसका गद्य बहुत ज़्यादा लाक्षणिकतापूर्ण है और इस बात का डर था कि इसके शब्दों और प्रयोगों के स्थानापन्न देने से इसका मौलिक सौंदर्य नष्ट हो जाता। इसकी जगह पर यहाँ ‘दरबार-ए-अकबरी’ से एक अंश शामिल किया गया है। इसमें सलीम (जहाँगीर, 1605-1627) और मेहरुन्निसा खानम (बाद में नूरजहाँ) की प्रेम-कहानी का वर्णन है और यह अपने ढंग का एक ललित गद्यांश है।

मेहरुन्निसा का जन्म 1577 ई. में कंदहार में हुआ था, जब उसके पिता फ़ारस से भारत की यात्रा के रास्ते में थे। कहा जाता है कि नौजवानी में उसने शाहज़ादा सलीम का मन मोह लिया। लेकिन सलीम के पिता सम्राट अकबर ने इस प्रेमासक्ति पर अपनी स्वीकृति की मुहर नहीं लगाई और उसके सुझाव पर मेहरुन्निसा का विवाह शेर अफ़ग़न से कर दिया गया। शेर अफ़ग़न वह व्यक्ति था जिसे उसकी विशिष्ट सैन्य सेवाओं के लिए बंगाल में जागीर अता की गयी थी। 1605 ई. जहाँगीर के रूप में सलीम जब तख़्तनशीन हुआ, शेर अफ़ग़न की

हत्या कर दी गयी। इस घटनाक्रम में जहाँगीर कहाँ और किस रूप में आता है, अब तक इस बात की प्रामाणिकता की जांच सही ढंग से नहीं की गयी है। बहरहाल सच्चाई जो भी हो, मेहरुन्सिसा एक कैदी के रूप में दिल्ली लायी गयी। जहाँगीर ने पहले उसे अपनी माँ की कनीज़ों के बीच रखा लेकिन बाद में अपने सत्तारूढ़ होने के छठवें वर्ष जहाँगीर ने उससे शादी कर ली और उसे नूरजहाँ (सृष्टि की रौशनी) का खिताब दिया। नूरजहाँ को इतना सम्मान दिया गया कि भारत में किसी अन्य शाही वेगम को नसीब न हुआ होगा। उसने भी अपने पति को मुग्ध कर लिया, जहाँगीर बाद नाममात्र का बादशाह ही रहा। यहाँ तक कि नूरजहाँ के नाम के सिक्के भी ढाले गये।

नूरजहाँ ताजमहल की सुंदरी मुमताज़ की फूफी थी। वह अतिशय सुंदर और महत्वाकांक्षी स्त्री थी, और उसे फ़ारसी साहित्य का अच्छा ज्ञान भी था। वह साज-सज्जा के मुआमले में अगुआ थी। उसके क़ालीनों, पर्दों, ज़री के कामों और जालियों की शैली समूचे भारत में विख्यात हैं। उसने जहाँगीर के साथ अपनी आयु के अठारह वर्ष बिताये, और 1645 ई. में लाहौर में उसकी मृत्यु हुई, जहाँ जहाँगीर के मक़बरे के पास ही उसे दफ़न किया गया।

UNIT VIII

मीना बाज़ार

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	ترکستان	तुर्किस्तान	व्य.सं. मध्य एशिया
	دستور	दस्तूर	पुरुषो. रीति, रिवाज, प्रथा
3	بازار لگتے ہیں /	बाज़ार लगते हैं /	
	آبادی	आबादी	स्त्रियों. जनसंख्या
	ریشم	रेशम	पुरुषो. रेशम
	سوت	सूत	पुरुषो. सूत
	ٹوپی	टोपी	स्त्रियों. टोपी
	رومال	रूमाल	पुरुषो. रूमाल
	دستکاری	दस्तकारी	स्त्रियों. हस्तकला
	جنس	जिंस	स्त्रियों. वस्तुएं
12	بازار کو گرم کرنا /	“बाज़ार को सक्रिय और सरगर्म रखना”	
	مرغی	मुर्गी	स्त्रियों. मुर्गी
16	مرغی... تک /	“जरूरत की सारी चीज़ें”	
	گاڑھا	गाढ़ा	पुरुषो. गाढ़ा, एक प्रकार का मोटा कपड़ा
	قالین	कालीन	पुरुषो. कालीन
	مبادلہ	मुबादला	पुरुषो. एक चीज़ लेकर दूसरी चीज़ देना
21	جلال الدین محمد اکبر /	(1542-1605), भारत का महान मुगल शासक	
	رواج	रिवाज, रवाज	पुरुषो. रिवाज, रीति
	ترقی دینا	तरक्की देना	स.क्रि. तरक्की देना, प्रोन्नति करना
	آئین اکبری	आईने अकबरी	अकबर का संविधान (नवरत्न अबुल फज़ल द्वारा फ़ारसी में लिखित)
	معمولی	मामूली	विशे. मामूली, साधारण
	قلعہ	क़िला	पुरुषो. क़िला

پینا بازار

ترکستان میں دستور ہے کہ ہفتے میں دو دفعہ یا ایک دفعہ ہر شہر میں بازار لگتے ہیں³۔ اُس آبادی کے اور آس پاس کے لوگ ایک جگہ آکر جمع ہوتے ہیں۔ عورتیں ریشم، سوت، ٹوپیاں، رومال، دستکاری وغیرہ بیچنے کو لاتی ہیں۔ مرد اپنی اپنی جنس سے بازار کو گرم کرتے ہیں۔ مرغی اور انڈے سے لے کر گھوڑوں تک¹⁶ اور گاٹے سے لے کر قالین تک ہرچیز موجود ہوتی ہے اور دوپہر تک سب بیک جاتی ہیں۔ اکثر لین دین مبادلے میں ہوتے ہیں۔ اکبر نے²¹ اس رواج کو ترقی دی۔ آئین اکبری میں لکھا ہے کہ ہر پینے معمولی بازار کے تپسے دن قلعے میں

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	زنانه	ज़नाना	विशे. स्त्री से सम्बन्धित
	بیگمات	बेगमात	स्त्रियों. मुगल महिलाओं की बहु. उपाधि
	امرا	उमरा	पुरुषों. अमीर (धनवान) का बहु. बहुवचन
	شرفا	शुरफ़ा	पुरुषों. उच्च परिवार; (शरीफ़ का बहुवचन)
	تماشا	तमाशा	पुरुषों. तमाशा
	سودا	सौदा	पुरुषों. सौदा, सामग्री
	پہرا	पहरा	पुरुषों. पहरा
	چمن	चमन	पुरुषों. चमन, फुलवारी
	رعایا	रिआया	स्त्रियों. प्रजा
	مناسب	मुनासिब	विशे. उचित
	نذر	नज़्र	स्त्रियों. उपहार
	نسبت	निस्वत	स्त्रियों. सम्बन्ध, सगाई
	حقیقت	हकीक़त	स्त्रियों. सच्चाई, वास्तविकता
	آئین	आईन	पुरुषों. संविधान
	جز	जुज़	पुरुषों. अंग, हिस्सा
	باہمی	बाहमी	विशे. आपसी
	کاروبار	कारोबार	पुरुषों. कारोवार, व्यवसाय

زنانه بازار لگتا تھا۔ اُس زنانه بازار میں محل کی بیگمات آتی تھیں۔ امرا و شُرُفا کی بیویوں کو بھی اجازت تھی، جو چاہے آئے اور تماشا دیکھے۔ دکانوں پر تمام عورتیں بیٹھ جاتی تھیں، سودا زیادہ تر زنانه رکھا جاتا تھا۔ عورتیں ہی پہرے پر ہوتی تھیں۔ مایوں کی جگہ بھی مانیں چمن کی دیکھ بھال کرتی تھیں۔

بادشاہ آپ بھی آتا تھا۔ اپنی رعایا کی بہو بیٹیوں کو دیکھ کر ماں باپ کی طرح خوش ہوتا تھا۔ جہاں مناسب جگہ دیکھتا تھا، بیٹھ جاتا تھا۔ بیگمات، بہنیں، بیٹیاں پاس بیٹھتی تھیں۔ امرا کی بیویاں آکر سلام کرتیں۔ نذریں دیتیں۔ بچوں کو حاضر کرتیں۔ اُن کی نسبتیں طے ہوتیں اور حقیقت میں یہ بھی آپن کا ایک جز تھا، کیوں کہ امرا کی باہمی محبت اور دشمنی کا اثر بادشاہ کے کاروبار پر پڑتا تھا۔ کبھی دو امپروں میں جگاڑ ہو جاتا تھا۔ بادشاہ چاہتے تھے کہ ان

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	علاج	इलाज	पुरुषो. उपचार
2	اتھیں اس سے کچھ کام نہیں /	“तुम्हें इससे कुछ मतलब नहीं”	
	ناز	नाज़	पुरुषो. नाज़, नख़रा
	لینا (کا) ذمہ	(का) ज़िम्मा लेना	स.क्रि. (का) ज़िम्मेदारी लेना
7	سلیم / (1569-1627)	मुग़ल राजकुमार, 1605 में अपने पिता अकबर	
	مہمان سے سत्تا لے	महान से सत्ता ली, उस समय उसका नाम जहांगीर था	
	دل آنا (پر)	(पर) दिल आना	अ.क्रि. (पर) आसक्त होना
9	ایسا... رہا /	“वह मुहब्बत में गिरफ़्तार हो गया”	
	بزرگ	बु.जुर्ग	विशे. वरिष्ठ, सम्मानित

میں بگاڑ نہ رہے۔ اس کا یہی علاج تھا کہ دونوں گھر ایک ہو جائیں۔ جب وہ نہ مانتے تو بادشاہ کہتے تھے کہ اچھا، یہ لڑکا یا لڑکی ہماری، تمہیں اس سے کچھ کام نہیں²۔ وہ یا اُس کی بیوی ناز سے کہتے: ”حضور آپ ہی کے لیے پالا تھا۔“ بادشاہ کہتے: ”بہت خوب۔“ کبھی بیگم شادی کا ذمہ لے لیتیں، کبھی بادشاہ لے لیتے۔ اور شادی دھوم سے ہوتی۔

اسی پینا بازار میں سلیم⁷ (جہانگیر) کا دل زین خاں کوکہ کی بیٹی پر آیا اور ایسا آیا کہ قابو ہی میں نہ رہا۔ اچھا ہوا کہ اُس کی ابھی شادی نہیں ہوئی تھی۔ اکبر نے خود شادی کر دی۔ لیکن دوسرا وہ معاملہ ہے جو بزرگوں سے سنا ہے۔ یہی پینا بازار لگا ہوا تھا، جہانگیر اُن دنوں نوجوان لڑکا تھا۔ بازار میں پھرتا ہوا چمن میں آنکلا۔ ہاتھ میں کبوتر کا جوڑا تھا۔ سامنے کوئی پھول کھلا ہوا نظر آیا،

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	بھانا	भाना	अ.क्रि. पसंद आना
3	دوनों ... تھے /	“उसके दोनों हाथ व्यस्त थे”	
	بوا	बुआ	स्त्रियो. किसी महिला के लिए सम्मान सूचक संबोधन शाब्दिक : पिता की वहन
	کیاری	कियारी	स्त्रियो. क्यारी
	صاحب عالم	साहिबे आलम	साहिबेआलम
	ہیں	हैं!	क्या! (आश्चर्यसूचक)
	کیوں کر	क्योंकर	कैसे
	اگرچہ	अगरचे	सह. यद्यपि
11	ہاتھ سے جانا /	“खो देना”	
	انداز	अंदाज़	पुरुषां. अनुमान
	دل لوثنا	दिल लूटना	अ.क्रि. मोहित होना
	ناظم بیانات	नाज़िम-ए-ब्यूतात	महल का प्रबंधक
15	ہمارے ہاں /	“हमारे यहां”	

بہت بھایا۔ چاہا کہ توڑے، دونوں ہاتھ رُکے ہوئے تھے³۔ وہیں ٹھہر گیا۔ اتنے میں سامنے ایک لڑکی آئی۔ شہزادے نے کہا: ”بوا! ذرا ہمارے کبوتر تم لے لو، ہم وہ پھول توڑ لیں۔“ لڑکی نے دونوں کبوتر لے لیے۔ شہزادے نے کیاری میں جا کر چند پھول توڑے۔ واپس آیا تو دیکھا کہ لڑکی کے ہاتھ میں ایک کبوتر ہے۔ پوچھا: ”دوسرا کبوتر کیا ہوا؟“ عرض کی: ”صاحبِ عالم وہ تو اڑ گیا۔“ پوچھا: ”ہیں! کیوں کر اڑ گیا؟“ اُس نے ہاتھ بڑھا کر دوسری منٹھی بھی کھول دی کہ ”حضور یوں اڑ گیا۔“ اگرچہ دوسرا کبوتر بھی ہاتھ سے گیا مگر شہزادے کا دل اس انداز پر لوٹ گیا۔ پوچھا: ”تمہارا کیا نام ہے؟“ عرض کی: ”مہر النساء خاتم۔“ پوچھا: ”تمہارے باپ کا کیا نام ہے؟“ عرض کی: ”مرزا غیاث، حضور کا ناظم بیوتات ہے۔“ کہا: ”دوسرے اُمرا کی لڑکیاں محل میں آیا کرتی ہیں، تم ہمارے ہاں¹⁵

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
1	امّاں جان / منت	अम्मा जान, प्यारी माँ मिन्नत	स्त्रियो. मिन्नत
4	بچپن کی عمر / ادب	बचपन की उम्र अदब	पुरुषो. सदव्यवहार, शिष्टाचार, अदब, साहित्य,
	لحاظ خواہ مخواہ	लिहाज़ ख़्वाह मख़्वाह	पुरुषो. सम्मान, महत्त्व क्रि.वि. अकारण, बिना वजह
9	اگر بات چیت ... کچھ اور / کُछ اور होता, अगर उसकी निगाहों को देखें तो उसका अंदाज़ ही कुछ और है	“अगर मैं बातचीत करता तो उसका ढंग ही कुछ और होता, अगर उसकी निगाहों को देखें तो उसका अंदाज़ ही कुछ और है”	
	ٹاڑ جانا	ताड़ जाना	अ.क्रि. भांप जाना, समझ जाना

نہیں آتیں۔ کہا: ”میری اماں جان تو آتی ہیں، مجھے
 نہیں لائیں، ہمارے ہاں لڑکیاں گھر سے باہر نہیں نکلا
 کرتیں۔ آج بھی بڑی بنتوں سے یہاں لائی ہیں۔“ کہا:
 ”تم ضرور آیا کرو۔“ وہ سلام کر کے رخصت ہوئی۔ جہانگیر
 باہر آگیا۔ مگر دونوں کو خیال رہا۔ اگلی بار جب مرزا
 غیاث کی بیوی محل میں جانے لگی تو بیٹی کے کہنے سے
 اُسے بھی ساتھ لے لیا۔ بیگم نے دیکھا، بچپن کی عمر، اِس
 میں ادب کا لحاظ، بہت بھلی معلوم ہوئی۔ باتیں بھی پیاری
 لگیں۔ بیگم نے بھی کہا: ”اِسے تم ضرور لایا کرو۔“ آہستہ آہستہ
 آنا جانا زیادہ ہوا۔ شہزادے کا یہ حال کہ جب وہ بیگم
 کے پاس آئے تو وہاں موجود، وہ دادی کے سلام کو
 جائے تو وہاں حاضر۔ کسی نہ کسی بہانے سے خواہ مخواہ
 اُس سے بولتا۔ اگر بات چیت کرتا تو اُس کا طور ہی کچھ
 اور۔ نگاہوں کو دیکھو تو انداز ہی کچھ اور۔ بیگم تار گئی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	خان خاناں	खान-ए-खानां	खिताब, अब्दुरहीम खान का अकबर द्वारा दिया गया (1556-1627)
2	بھکر کی مہم / مصاحب	“भक्कर का युद्ध” मुसाहिब	पुरुषो. मुसाहिब (राजकुमार का चहेता)
	نسبت ٹھہراتا	निस्वत ठहराना	स.क्रि. मंगनी (सम्बन्ध) का ऐलान
	بربادی	बरबादी	स्त्रियो. बरवादी
	انجام	अंजाम	पुरुषो. अन्त, परिणाम
	(کا) شکار ہونا	(का) शिकार होना	अ.क्रि. (का) शिकार होना
8	نور جہاں	नूरजहां	नूर जहां, शाब्दिक अर्थ संसार का प्रकाश; सम्राट जहांगीर से 1611 में उसका विवाह हुआ
11	افسوس ... رہ گیا /	“अफसोस, जहांगीर और नूरजहां दोनों की मृत्यु हो गयी, लेकिन उनके नामों पर धक्का रह गया”	

اور بادشاہ سے عرض کی۔ اکبر نے کہا: ”مرزا غیاث کی بیوی کو سمجھا دو، چند روز لڑکی کو یہاں نہ لائے۔“ اور مرزا غیاث سے کہا کہ لڑکی کی شادی کر دو۔

جب خانِ خاناں بھکر کی مہم² پر تھا تو پٹھان سپِ قلی بیگ ایک نوجوان ایران سے آیا تھا اور اس مہم میں بہادری دکھا کے اُس کے مُصاحبوں میں داخل ہو گیا تھا۔ شیر افگن خاں کا خطاب حاصل کیا تھا۔ بادشاہ نے اُس کے ساتھ نسبت ٹھہرا دی اور جلد ہی شادی کر دی۔ یہی شادی اُس جوان کی بربادی تھی۔ انجام اُس کا یہ ہوا کہ جو نہ ہونا تھا، سو ہوا۔ شیر افگن خاں موت کا شکار ہو کر جوانمرگ دُنیا سے گیا۔ مہرِ انسا بیوہ ہوئی۔ چند روز کے بعد جہانگیر کے محلوں میں آکر نور جہاں بیگم ہو گئی۔ افسوس نہ جہانگیر رہے نہ نور جہاں رہیں، ناموں پر دھتارہ گیا۔

(نعمتِ خین آزاد)

अबुल कलाम आज़ाद

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (1888-1958 ई.) विरल प्रतिभासंपन्न व्यक्तियों में से थे। वे एक गंभीर अध्येता, एक महान् राजनीतिज्ञ, एक प्रखर देशभक्त, एक समर्पित धर्मशास्त्रवेत्ता और एक ओजस्वी शैलीकार थे। पचास वर्ष से भी ज़्यादा समय तक वे राष्ट्रीयतावाद, स्वतंत्रता और जनतंत्र के अग्रणी सेनानी के रूप में अडिग खड़े रहे। वे पुनरुत्थानशील भारत की आत्मा का साक्षात् रूप थे और अपने जीवनकाल में ही एक किंवदंती बन गये थे।

मौलाना आज़ाद (मूल नाम मुहीउद्दीन अहमद) का जन्म मक्का में हुआ था। आरंभिक शिक्षा उन्होंने घर पर ही अपने पिता और उस समय के कुछ प्रतिष्ठित विद्वानों से प्राप्त की। दस वर्ष की अवस्था में वे अपने पिता के साथ भारत आये। इसे एक कौतुक ही समझिए कि पंद्रह वर्ष की आयु में वे अरबी, फ़ारसी और मुस्लिम धर्मशास्त्र के गंभीर अध्येता बन चुके थे, और 1903 ई. में 'लिसानुल-सिद्क़' नाम से साहित्यिक जर्नल जारी कर दिया था। 1905 ई. में वे मध्य पूर्व वापस गये।

भारत वापस लौटने के बाद, उदीयमान राष्ट्रीय चेतना के प्रति भारतीय मुसलमानों के अविश्वास, अवसाद और संदेहपूर्ण रवैये से दुखी होकर उन्होंने 1912 ई. में 'अल हिलाल' उर्दू साप्ताहिक जारी किया। इसे मिसाली सफलता मिली। इधर 'अलीगढ़ पार्टी' के रूप में विख्यात सर सैयद अहमद खाँ के उत्तराधिकारीगण, मुसलमानों को ब्रिटिश हुकूमत के समर्थन और हिंदुओं से अलगाव बरतने के लिए प्रेरित कर रहे थे। आज़ाद ने एक भिन्न कार्यक्रम की घोषणा की और कहा कि मुसलमानों को भारतीय राष्ट्रवाद की सामान्य अपेक्षाओं से जोड़कर अपनी पहचान बनानी चाहिए, और ब्रिटिश उपनिवेशवादी ताकतों का विरोध करना चाहिए। 'अल हिलाल' ने सरकार को परेशान कर दिया और अख़बार की ज़मानत ज़ब्त कर ली गयी। फिर भी आज़ाद की दुर्दमनीय प्रतिभा ने हार नहीं मानी और उन्होंने 'अल बलाग़' साप्ताहिक पत्रिका के रूप में नया अख़बार जारी किया। इसके तुरंत बाद क्रांतिकारी गतिविधियों के आरोप में

रांची में उन्हें नज़रबंद किया गया। स्वतंत्रता संग्राम में गांधीजी के महनीय प्रवेश से पहले, वे प्रभावशाली आंदोलन छेड़ चुके थे। 1920 ई. में रिहाई के तुरंत बाद वे असहयोग आंदोलन में कूद पड़े। 1923 ई. में जब वे मात्र 35 वर्ष के थे, उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। इसके अब तक के इतिहास में वे युवतम निर्वाचित अध्यक्ष हैं। यह बहुत उपयुक्त था कि वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के तब तक अध्यक्ष बने रहे, जबकि अंग्रेजों ने 1946 ई. में अंतिम रूप से भारत छोड़ने का निर्णय लिया।

कांग्रेस खेमे के अनेक लोगों की तुलना में उनकी बौद्धिक पकड़ बहुत उत्कृष्ट थी, जिसके कारण गांधीजी को कई नाजुक मौकों पर उनके परामर्श की ज़रूरत महसूस हुई। क्लासिकल धर्मशास्त्रीय प्रशिक्षण एवं आधुनिक दृष्टिकोण का सामंजस्य उनका अद्वितीय चारित्रिक गुण था। अपने विचारों के कारण लम्बे समय तक कारावास और मुकदमे-बाजी का दुःख भोगना पड़ा लेकिन उनकी स्वतंत्रता और राष्ट्रप्रेम की लौ कभी नहीं काँपी। वे एक ही साथ मौन और मुखर दोनों रह सकते थे। उनकी अध्ययनशीलता ने उन्हें एक किस्म के एकांत प्रेम की ओर प्रवृत्त किया था। हालाँकि उनके व्यक्तित्व में असीम सम्मोहन था लेकिन वे शांत वातावरण में साँस लेना पसंद करते थे, जिसमें कम ही लोग दाखिल हो सकते थे, और वे कम ही लोगों को करीब आने देते थे।

उर्दू साहित्य के इतिहास में उनके साहित्यिक अवदान को अद्वितीय कहा जा सकता है। उनके व्यक्तित्व में वाग्मिता एवं वाक्पटुता, शाइरी एवं चातुर्य, भव्य एवं शानदार भाषा और सौम्यता एवं चारित्रिक ईमानदारी का अद्भुत सामंजस्य था। 'कुर्आन' के अपने भाष्य (तर्जुमानुल कुर्आन) में भाषा एवं विचारों के स्तर पर उन्होंने प्रवीणता अर्जित की, उर्दू में जिसकी कोई दूसरी मिसाल नहीं मिलती। वे शायद अपने पत्र-संग्रह 'गुबार-ए-खातिर' में फ्रांसीसी दार्शनिक डेवदजमेनुपमन (1689-1755 ई.) से प्रभावित लगते हैं। ये पत्र एक मित्र को लिखे गये थे लेकिन कभी भेजे नहीं गये। ये एक वरिष्ठ शैलीकार की बौद्धिक अंतर्गताएँ अथवा 'शांति के क्षणों में भावों का अनुस्मरण' (emotions recollected in tranquillity) हैं— इन्हें गद्य के रूप में कविता कहा जा सकता है। यहाँ हर शब्द जीवित है और उसके पंख लगे हुए हैं। इनकी शैली अत्यंत सुरुचिपूर्ण एवं परिमार्जित है और पद-विन्यास एवं सूक्ष्म कला-कौशल की दृष्टि से उल्लेखनीय है। 'तज़किरा' (1920 ई.), एक जीवनीपरक संस्मरण, आज़ाद की एक अन्य महत्वपूर्ण किताब है।

अपनी लेखनी की शक्ति के साथ-साथ, उनके पास हज़ारों लोगों को अपनी वाणी से मंत्रमुग्ध कर देने की विलक्षण प्रतिभा भी थी। हालाँकि वे मित्रभाषी थे लेकिन निर्विवाद रूप से वे उर्दू के बेजोड़ वक्ताओं में से थे। उनके कुछ भाषण विश्व के वाग्वैदग्ध्यपूर्ण साहित्य (rhetorical literature) के विरल नमूने हैं। भाषा के सभी स्रोतों पर असाधारण अधिकार के साथ, वे वाद-विवाद में अपने प्रतिपक्ष को उखाड़ सकते थे और चर्चा में सहमत हो सकते थे।

उत्तर आधारीक पाठ्यक्रम के लिए उनके अन्य लेखन से किसी गद्य-रचना का चयन असंभव था, इसलिए यहां हमने उनका एक राजनीतिक भाषण शामिल करना चाहा है, क्योंकि उनसे बेहतर उर्दू की भाषण-कला का प्रतिनिधित्व और कोन कर सकता है? लोकसभा में उन्होंने अंग्रेज़ी प्रयोगों को खुलकर बरता और बड़ी परिष्कृत व सरल उर्दू में वक्तव्य दिये, ताकि सभी उनकी बात समझ सकें। वे उपयुक्त शब्द की तलाश में भटकते कभी नहीं दिखे, और यहाँ तक कि उनके आकस्मिक जवाबों में भी घरेलू बोलचाल की उपमाएँ मिल जाती हैं। यहाँ सम्मिलित भाषण उन्होंने 16 जून, 1952 को केंद्रीय शिक्षा मंत्री (मृत्यु के दिन तक वे इस पद पर रहे।) के रूप में बजट का पक्ष लेते हुए दिया था। यह भाषण 'द लोकसभा डिबेट्स' से लिया गया है। यह तार्किकता, बेबाकी और तीक्ष्ण वाक्पटुता के लिए पठनीय है।

UNIT IX

लोक सभा में मौलाना आज़ाद का बयान

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	ایک	स्पीच	स्त्रियां. भाषण
	غور	गौर	पुरुषों. ध्यान
	بحث	बहस	स्त्रियां. बहस, वाद-विवाद
4	/بہت حد تک/ : /بड़ी हद तक/		
	تقریر	तक़रीर	स्त्रियां. भाषण
	خلاصہ	खुलासा	पुरुषों. खुलासा, सारांश
	گورنمنٹ	गवर्नमेंट	स्त्रियां. गवर्नमेंट
	ضرورت	ज़रूरत	स्त्रियां. ज़रूरत, आवश्यकता
	مسئلہ	मसला	पुरुषों. समस्या
	برس	वरस	पुरुषों. वर्ष

لوک سبھا میں مولانا آزاد کا بیان

جناب ! پرسوں میں چار گھنٹے تک اُن تمام دوستوں کی اسپیکیں پورے غور اور دل چسپی کے ساتھ سُنتا رہا، جنہوں نے اِس بحث میں حصہ لیا تھا۔ مگر مجھے افسوس کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ بہت حد تک مجھے مایوسی ہوئی۔ جن صاحبوں نے بحث میں حصہ لیا، اُن سب کی تقریروں کا خلاصہ یہ تھا کہ گورنمنٹ تعلیم کے لیے جو کچھ اِس وقت کر رہی ہے، وہ ضرورت کے مقابلے میں بہت کم ہے۔ جناب ! جہاں تک تعلیم کے مسئلے کا تعلق ہے، پچھلے پانچ برسوں میں بجٹ کی بحث کے پانچ موقع نکلے تھے، جن میں سے ہر موقع پر یہی شکایت دہرائی گئی تھی اور

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	تفصیل	तपसील	स्त्रियां. विस्तृत वर्णन
2	/اپنا دکھڑا رونا/ : “अपनी ही बातें करना”		
	(کے) علاوہ	(के) इलावा	(के) इलावा
4	/سنٹرل ایڈوائزری بورڈ آف ایجوکیشنل/	सेन्ट्रल एडवाइजरी बोर्ड ऑफ एजुकेशन	
	اجلاس	इजलास	पुरुषो. बैठक
6	/ایجوکیشن منسٹری/	शिक्षा मन्त्रालय	
	رپورٹ	रिपोर्ट	स्त्रियां. रिपोर्ट
	اندازہ کرنا	अन्दाज़ा करना	स.क्रि. अंदाज़ा करना
9	/ایک کے بعد ایک/	एक के बाद एक	
10	/ऑनरेबल ممبر/	ऑनरेबल मेम्बर	
	تعجب	तअज्जुब	पुरुषो. आश्चर्य
	محسوس کرنا	महसूस करना	स.क्रि. महसूस करना
	گرہ	गिरह	स्त्रियां. गिरह, गांठ
	زحمت کرنا	ज़हमत करना	स.क्रि. कष्ट उठाना
	ختم کرنا	ख़त्म करना	स.क्रि. समाप्त करना

ہر مرتبہ مجھے پوری تفصیل کے ساتھ اپنا ڈکھڑا² رونا پڑا تھا۔ پھر اس کے علاوہ سنٹرل ایڈوائزری بورڈ آف ایجوکیشن⁴ ہے، جس کے ہر اجلاس میں میں نے ایجوکیشن منسٹری کی مشکلوں اور رکاوٹوں کی کہانی دہرائی ہے اور اس کی رپورٹیں تمام ملک کے سامنے آچکی ہیں۔

ایسی حالت میں جناب! آپ اندازہ کر سکتے ہیں کہ پرسوں جب ایک کے بعد ایک آئریبل ممبر اٹھے اور انہوں نے وہی پُرانی شکایت دہرائی شروع کر دی، تو میرے تعجب کا کیا حال تھا۔ کوئی صاحب اس کی ضرورت محسوس نہیں کرتے کہ ہماری تعلیم کے مسئلے میں جو اصلی گہرہ پڑی ہوئی ہے، اسے کھولنے کی کوئی کوشش کریں۔ ڈاکٹر رام بھاگ سنگھ نے خیال کیا کہ تعلیم کے مسئلے میں ایک ایک بات کے نام لینے کی زحمت کیوں کی جائے۔ کیوں نہ ایک ہی سانس میں سارا معاملہ ختم کر دیا جائے۔ انہوں نے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
1	“अनुरोध” : /فرمایش/		
	توقع	तवक्को	स्त्रियां. आशा
	صورت	सूरत	स्त्रियां. दशा, शा. आकृति
	احساس	अहसास	पुरुषो. अनुभव
	سوال	सवाल	पुरुषो. सवाल, प्रश्न
	ماتم	मातम	पुरुषो. दुख
	زخم	ज़ख्म	पुरुषो. ज़ख्म, घाव
	ٹیس	टीस	स्त्रियां. टीस, दर्द
	میدان	मैदान	पुरुषो. मैदान, क्षेत्र
	قدم بڑھانا	कदम बढ़ाना	स.क्रि. कदम बढ़ाना, आगे बढ़ना

کہا: "تعلیم کے لیے کچھ بھی نہیں ہو رہا ہے اور تعلیم کے لیے سب کچھ ہونا چاہیے۔" تعلیم کے لیے کچھ نہیں ہو رہا " یہ بات صرف وہی کہہ سکتے تھے اور تعلیم کے لیے سب کچھ ہونا چاہیے۔" اس فرمائش کی بھی صرف اُنھی سے توقع کی جاسکتی ہے۔ کیونکہ دونوں صورتوں میں ذمہ داری کے احساس کا کوئی سوال ان کے لیے پیدا نہیں ہوتا۔

سوال یہ ہے کہ کیا اس طرح کی شکایتوں سے وہ گرہ کھل سکتی ہے، جو تعلیم کے مسئلے میں پڑ گئی ہے اور جس پر پانچ برس سے برابر ماتم کیا جا رہا ہے۔ میں نے پچھلے سال بجٹ کے موقع پر جو تقریر کی تھی، وہ تقریر نہیں تھی، میرے دل کے زخموں کی ٹپس تھی جو زبان پر آگئی تھی۔ میں نے پوری تفصیل کے ساتھ بتایا تھا کہ کس طرح پچھلے پانچ برسوں کے اندر گورنمنٹ نے تعلیم کے ہر میدان میں قدم بڑھانا چاہا اور کس طرح مجبور ہو کر اُسے رُک جانا پڑا۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	حل	हल	पुरुषो. हल, समाधान
	حق بجانب	हक बजानिब	ठीक, सही, दुरुस्त
4	شکایت پر اتر آنا /	“शिकायत करने पर आमादा होना”	
	محض	महज़	बिशे. केवल
6	لفظوں کے طوطا مینا بنانا /	“बहाने बनाना, झूठ बोलना”	मुहावरा
	پہلو	पहलू	पुरुषो. पक्ष
	نقشہ	नक्शा	पुरुषो. नक्शा
	کمیٹی بٹھانا	कमेटी बिठाना	कमेटी बिठाना
	سفارش	सिफारिश	स्त्रियां. सिफारिश, अनुमोदन
	آخری	आखिरी	बिशे. आखिरी, अन्तिम
	فیصلہ	फैसला	पुरुषो. फैसला, निर्णय
	اسکیم	स्कीम	स्त्रियां. स्कीम, योजना

اگر آپ مجھے آج بتلائیں کہ گورنمنٹ یہ حل نکال سکتی تھی،
 لیکن اُس نے کوشش نہیں کی، تو پھر آپ کی ہر شکایت حق
 بجانب ہوگی۔ لیکن اگر آپ اس سوال کو بھلا دیتے ہیں اور
 صرف شکایتوں پر اتر آنا چاہتے ہیں، تو میں آپ سے کہوں
 گا کہ محض لفظوں کے تو مانینا بنانے سے ملک کا کوئی مسئلہ
 حل نہیں ہو سکتا۔

میں آپ کو ذمے داری کے پورے احساس کے ساتھ
 بار بار بتلا چکا ہوں اور آج پھر بتلاتا ہوں کہ ملک کے
 تعلیمی مسئلے کا کوئی پہلو ایسا نہیں، جس پر گورنمنٹ نے
 غور نہ کیا ہو اور کام کا پورا نقشہ تیار نہ کر لیا ہو۔ گورنمنٹ
 نے ہر مسئلے کے لیے کمیٹیاں بٹھائیں، کمیٹیوں کی سفارشاتوں
 پر غور کیا اور پھر ایک آخری فیصلہ کر کے کام کا نقشہ بنایا
 لیکن جب یہ تمام اسکیمیں تیار ہو گئیں تو معلوم ہوا کہ آگے
 قدم بڑھانے کا راستہ بند ہے۔ کیوں راستہ بند ہے؟

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	عمل میں لانا	अमल में लाना	अ.क्रि. व्यवहार में लाना
2	/هاؤس/ : हाउस, संसद		
	منطق	मन्तिक	स्त्रियो. तर्क
4	/پروفیکیش/ : “सुरक्षा, पुनर्वास, भोजन, नदी, घाटी योजनाएं।”		
	گھٹانا	घटाना	स.क्रि. घटाना, कम करना
	مقدمہ	मुक्दमा	पुरुषो. दावा

اس لیے کہ ہر اسکیم کو عمل میں لانے کے لیے روپے کی ضرورت ہے اور روپیہ نکل نہیں سکتا۔ اس ہاؤس کے پانچ سو ممبروں میں سے کوئی آنریبل ممبر مجھے بتلائیں کہ اس رُکاوٹ کا علاج کیا ہے۔

میں یہ معلوم کرنا چاہتا ہوں کہ جن آنریبل ممبروں نے تعلیمی کاموں کے نہ ہونے کی شکایت کی، آخر اس بارے میں اُن کی منطق کیا ہے۔

تعلیم کے لیے کافی روپیہ نہیں نکل سکتا، کیوں کہ ڈیفنس ری ہیبیلیٹیشن، فوڈ، ریور ویلی پروجکٹس وغیرہ پر روپیہ خرچ کرنا پڑتا ہے۔ آپ ایک ہی سانس میں یہ بھی کہتے ہیں کہ دوسرے خرچ نہ گھٹائے جائیں، پھر اس کی فرمائش کرتے ہیں کہ تعلیم پر زیادہ خرچ کیا جائے۔ اگر ان دونوں مقدموں کا خلاصہ نکالا جائے تو یہ شکل بنے گی کہ تعلیم کے لیے روپیہ نہ نکالا جائے اور تعلیم پر روپیہ زیادہ خرچ کیا

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	بے وقوفی	बेव.कूफी	मित्र्या. मूर्खता
	بنیاد ڈالنا	बुनियाद डालना	स.क्रि. नींव डालना
3	/آخر... ڈالی/ : “आखिरकार अरिस्टाटिल ने यह कोई बेव.कूफी का काम नहीं किया था कि तर्क की बुनियाद डाली”		
4	/نیشن بلڈنگ/ /नेशन बिल्डिंग/ : “राष्ट्र निर्माण”		
	راہ نکالنا	राह निकालना	स.क्रि. राह निकालना, उपाय ढूँढना

جائے۔ خدا کے لیے مجھے بتلایئے کہ اس سے جو نتیجہ آپ نکالنا چاہتے ہیں، وہ کیا ہے۔ آخر اسٹائل نے یہ کوئی بے وقوفی کا کام نہیں کیا تھا کہ منطق کی بنیاد ڈالی³۔

میں اس ہاؤس کے اندر بھی اور اس سے باہر بھی بار بار یہ کہانی سنا چکا ہوں کہ پچھلے چار برسوں میں کس طرح ایک کے بعد ایک آپٹیمیں بنائی گئیں اور کس طرح روپیہ نہ ملنے کی وجہ سے مجبور ہو کر قدم روک لینا پڑا۔

پھر سوال صرف تعلیم ہی کا نہیں۔ نیشن⁴ بلڈنگ کے تمام کاموں کی راہ میں یہی رکاوٹ راستہ روکے ہوئے ہے، اور ہمیں غور کرنا ہے کہ آگے بڑھنے کی راہ کیسے نکالی جائے۔

मौलवी अब्दुल हक़

महान् उर्दू सेवी मौलवी अब्दुल हक़ को बाबा-ए-उर्दू (उर्दू के पितामह) की उपाधि से पुकारा जाता है। जीवन भर वे उर्दू को भारतीय उप महाद्वीप में उचित स्थान दिलाने के लिए अभियान चलाते रहे। यह उनके प्रयासों का सुपरिणाम ही था कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपने संविधान की धारा 21 में हिंदुस्तानी (हिंदी-उर्दू) को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में स्थान दिया। तथापि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद मौलवी अब्दुल हक़ पाकिस्तान चले गये और अपने जीवन का बाकी समय उन्होंने उस देश में उर्दू के कामों में लगाया। हालाँकि उर्दू को पाकिस्तान की दो राष्ट्रभाषाओं में से एक का दर्जा दिलाने में वे सफल रहे, किंतु उन्हें सरकारी काम-काज के लिए अंग्रेज़ी के स्थान पर उर्दू को रखने के प्रयासों को लेकर भारी विरोध का सामना करना पड़ा।

अब्दुल हक़ का जन्म 1870 ई. में हुआ। पहले उन्होंने पंजाब में शिक्षा प्राप्त की और फिर एम ए ओ कॉलेज, अलीगढ़ के विद्यार्थी बने, जहाँ वे सर सैयद अहमद ख़ाँ (मृत्यु, 1898 ई.), शिवली (मृत्यु 1914 ई.) और हाली (मृत्यु 1914 ई.) से प्रभावित हुए। शिवली से उन्होंने अदम्य उत्साह एवं दृढ़ संकल्प के साथ अपने आदर्श को लोगों तक पहुँचाने का गुण सीखा। सर सैयद अहमद ख़ाँ और हाली से उन्होंने वस्तुपरकता एवं यथार्थ की तकनीक सीखी, जिसे बाद में उन्होंने अपने ढंग से विकसित किया। 1895 ई. में वे हैदराबाद गये। वहाँ एक स्थानीय स्कूल के हेडमास्टर के पद पर काम करने के बाद उन्होंने दो उर्दू पत्रिकाओं का संपादन किया, फिर निज़ाम के आदेश से इतिहास, विज्ञान और दर्शन की पुस्तकों के उर्दू अनुवाद हेतु स्थापित दारुत्तर्जुमा (अनुवाद संस्था) के अध्यक्ष नियुक्त हुए। वे नव स्थापित उस्मानिया विश्वविद्यालय के पहले उर्दू विभागाध्यक्ष भी बने। 1912 ई. में वे उर्दू के विकास और उन्नति के लिए समर्पित संस्था अंजुमन तरक्की-ए-उर्दू के महासचिव बनाये गये। वे 1947 में भारत विभाजन तक निर्विवाद रूप से इस पद पर काम करते रहे। परिव्रजन (माइग्रेशन) के बाद उन्होंने पाकिस्तान में 'अंजुमन' की दाग़बेल डाली और

कराची में उर्दू कॉलेज की शुरूआत भी की। 1961 ई. में उनकी मृत्यु हुई।

मौलवी अब्दुल हक ने घर-बार कभी नहीं किया। उनके पास निजी आवास या संपत्ति नाम की कोई चीज़ नहीं थी। उन्होंने स्वयं को संपूर्ण रूप से भाषा की सेवा के लिए अर्पित कर दिया था जिसे वे दिलोजाना से प्यार करते थे। उनके दृढ़ निश्चयी स्वभाव, उनकी लम्बे समय तक कठोर परिश्रम की योग्यता और उनकी लम्बी आयु के फलस्वरूप उन्होंने तीन दशक से ज़्यादा 'उर्दू' नामक विद्वत्तापूर्ण पत्रिका का संपादन करने के साथ-साथ पचास के लगभग पुस्तकों की रचना की। कुछ अल्पज्ञात आधारभूत पाण्डुलिपियों सहित उनकी आधी से ज़्यादा पुस्तकें प्रायः विस्मृत कर दी गयी हैं। तथापि 'The Standard English Urdu Dictionary' और 'क़वाइद-ए-उर्दू' (उर्दू व्याकरण) उनकी ज़्यादा पढ़ी जाने वाली पुस्तकें हैं।

मौलवी अब्दुल हक की गद्य-शैली में सर सैयद अहमद ख़ाँ और हाली के गद्य का विकास लक्षित होता है। उनके पास बोली-वानी के स्पर्श और शब्दों की किफ़ायत के साथ सरलतम भाषा में स्वयं को व्यक्त करने का अद्वितीय कौशल था। उनका सुगठित, सारगर्भित एवं सामासिक गद्य उर्दू भाषा की बुनियादी गद्य-शैली के बहुत नज़दीक है।

यहाँ सम्मिलित गद्य-रचना साहित्यिक एवं ग़ैर साहित्यिक हस्तियों के व्यक्ति-चित्रों के संग्रह 'चंद हमअस्र' से ली गयी है। 'नामदेव माली' शीर्षक व्यक्ति-चित्र में निष्ठा एवं समर्पण जैसे मानवीय गुणों और कर्तव्य-बोध से प्रेरित होकर मनुष्य के अपने काम में खुद को पा लेने की क्षमताओं पर प्रकाश डाला गया है।

UNIT X
नामदेव माली

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	باغ	बाग़	पुरुषो. बाग़, बगीचा
	ذات	जात	स्त्रियो. जाति
	ڈھیر	ढेड़	पुरुषो. अनुसूचित जाति (चमार)
	نگرانی	निगरानी	स्त्रियो. निगरानी, देखरेख
	سپرد کرنا	सुपुर्द करना	स.क्रि. सुपुर्द करना
	صاف	साफ़	विशे. साफ़, स्पष्ट
	مصرف	मसरूफ़	विशे. व्यस्त
	حرکت	हरकत	स्त्रियो. क्रिया
	مثلاً	मस्तन	क्रि.वि. जैसे, उदाहरण के लिए
	پودا	पौदा	पुरुषो. पौधा

نام دیو مالی

نام دیو اورنگ آباد کے ایک باغ میں مالی تھا۔
ذات کا ڈھیڑ تھا جو بہت پنچ خیال کی جاتی ہے۔
وہ باغ میری نگرانی میں تھا۔ میرے رہنے کا
مکان بھی باغ ہی میں تھا۔ میں نے اپنے مکان کے
سامنے چمن بنانے کا کام نام دیو کے سپرد کیا۔ میں اندر
کمرے میں کام کرتا رہتا تھا۔ میری میز کے سامنے بڑی
سی بکھر کی تھی۔ اُس میں سے چمن صاف نظر آتا تھا۔
لکھتے لکھتے کبھی نظر اٹھا کر دیکھتا تو نام دیو کو اپنے کام
میں مصروف پاتا۔ بعض دفعہ اُس کی حرکتیں دیکھ کر بہت
تعجب ہوتا۔ مثلاً کیا دیکھتا ہوں کہ نام دیو ایک پودے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	थालا	थाला	पुरुषो.
	حوض	हौज़	पुरुषो.
	رخ	रुख	पुरुषो.
	مڑ مڑ کر دیکھنا	मुड़मुड़ कर देखना	मुड़ मुड़ कर देखना
	حیرت	हैरत	स्त्रियो.
8	یہاں تک کہ / : /	यहां तक कि /	
	چپکے چپکے	चुपके चुपके	क्रि.वि.
	اتفاق سے	इत्तफ़ाक़ से	क्रि.वि.
	کیڑا لگنا	कीड़ा लगना	अ.क्रि.
	فکر ہونا	फिक्क़ होना	अ.क्रि.
	پروان چڑھنا	परवान चढ़ना	अ.क्रि.

کے سامنے بیٹھا اُس کا تھالا صاف کر رہا ہے۔ تھالا صاف کر کے عَوْض سے پانی لیا اور آہستہ آہستہ ڈالنا شروع کیا۔ اور ہر رُخ سے پودے کو فرد فرد کر دیکھا۔ پھر پیچھے ہٹ کر اُسے دیکھنے لگا۔ دیکھتا جاتا تھا اور مُکراتا اور خوش ہوتا تھا۔ یہ دیکھ کر مجھے حیرت بھی ہوتی اور خوشی بھی۔

اب مجھے اُس سے دل چسپی ہونے لگی۔ یہاں تک کہ بعض وقت اپنا کلام پھوڑ کر اُسے دیکھا کرتا۔ مگر اُسے کچھ خبر نہ ہوتی کہ کوئی دیکھ رہا ہے۔ اُس کے کوئی اولاد نہ تھی۔ وہ اپنے پودوں اور پیریدوں ہی کو اپنی اولاد سمجھتا تھا۔ وہ ایک ایک پودے کے پاس بیٹھتا، اُن کو پیار کرتا، بھک بھک کے دیکھتا اور ایسا معلوم ہوتا، گویا اُن سے چپکے چپکے باتیں کر رہا ہے۔ کبھی کسی پودے میں اِتفاق سے کپڑا لگ جاتا تو اُسے بڑا فِکر ہوتا۔ اُس کے لگائے ہوئے پودے ہمیشہ پروان چڑھے۔ وہ خود بھی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	صاف ستھرا	साफ़ सुथरा	विशे. साफ़ सुथरा
	بارش	बारिश	स्त्रियो. बारिश, वर्षा
	کنواں	कुंआ	पुरुषो. कुंआ
	برائے نام	बराए नाम	विशे. थोड़ा, नाम के लिए क्रि.वि.
	ہرا بھرا	हरा भरा	विशे. हरा भरा
	سینچنا	सींचना	स.क्रि. सींचना (पौधे को) पानी से
	انعام	इन्आम	पुरुषो. उपहार
	شاید	शायद	क्रि.वि. शायद
	پالنا پوسنا	पालना पोसना	स.क्रि. पालना पोसना
	مستحق	मुस्तहिक़	विशे. योग्य, अधिकारी
11	/حضور نظام/ : भारत में हैदराबाद रियासत के पूर्व शासक की पदवी		
	بیسویں	बीसियों	विशे. बीसीयों
13	/مالی بھی کیسے کیسے/ : “माली भी कितने उच्च श्रेणी के।”		
	جاپانی	जापानी	विशे. जापानी
	ایرانی	ईरानी	विशे. ईरानी
	شام	शाम	व्य.सं. सीरिया
17	/یہاں بھی... رنگ تھا/ : “यहां भी नामदेव उसी ढंग से था”		
	باغبانی	बाग़बानी	स्त्रियो. बाग़बानी

بہت صاف ستھرا رہتا تھا اور ایسا ہی اپنے چمن کو بھی رکھتا۔

ایک سال بارش بہت کم ہوئی۔ کنوؤں میں پانی برائے نام رہ گیا۔ بہت سے پودے اور پیرد ضائع ہو گئے۔ لیکن نام دیو کا چمن ہرا بھرا تھا۔ وہ دُور دُور سے ایک ایک گھڑا پانی کا سر پر اٹھا کے لاتا اور پودوں کو پینچتا۔ اُس پر میں نے اُسے انعام دینا چاہا تو اُس نے لینے سے انکار کر دیا۔ شاید اُس کا کہنا ٹھیک تھا کہ اپنے بچوں کے پالنے پوسنے میں کوئی انعام کا مستحق نہیں ہوتا۔ جب حضور نظام کو ¹¹ اورنگ آباد میں باغ لگانے کا خیال ہوا تو نام دیو کو بھی شاہی باغ میں بلا لیا گیا۔ وہاں بیسویں مالی تھے اور مالی بھی کیسے کیسے! ¹³ ٹوکیو سے جا پانی، لہران سے اپرانی اور شام سے شامی آئے تھے۔ یہاں بھی نام دیو کا وہی رنگ تھا۔ اُس نے باغبانی کی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	دھن	धुन	स्त्रियो. धुन, इच्छा
	جھگڑنا	झगड़ना	अ.क्रि. झगड़ना
	شہد کی مکھی	शहद की मक्खी	स्त्रियो. शहद की मक्खी
	پورش	यूरिश	स्त्रियो. हमला, आक्रमण, धावा
	بے دم ہونا	बेदम होना	अ.क्रि. मुर्छित हो जाना
7	/آخر... دے دی/ : “आखिरकार उसकी मृत्यु हो गयी”		
	سادہ مزاج	सादा मिज़ाज	विशं. साधारण स्वभाव
	غریب	ग़रीब	विशं. ग़रीब, दीन
	اس پر بھی	इस पर भी	इस पर भी
11	/کام کرتے کرتے/ : “काम करते हुए”		

تعلیم نہیں پائی تھی، لیکن اُسے کام کی ذہن تھی اور اسی میں اُس کی جیت تھی۔ شاہی باغ میں بھی اُسی کا کام سب سے اچھا رہا۔ دوسرے مالی لڑتے جھگڑتے، شراب پیتے، یہ نہ کسی سے لڑتا جھگڑتا، نہ شراب پیتا۔

ایک دن نہ معلوم کیا بات ہوئی کہ شہد کی مکھیوں کی یوَرِش ہوئی۔ سب مالی بھاگ بھاگ کر چھپ گئے۔ نام دیو کو خبر بھی نہ ہوئی کہ کیا ہو رہا ہے۔ وہ اپنے کام میں لگا رہا۔ یہاں تک کہ مکھیوں نے اتنا کاٹا، اتنا کاٹا کہ بے دم ہو گیا۔ آخر اسی میں جان دے دی۔⁷

وہ بہت سادہ مزاج اور بھولا بھالا تھا۔ بھوٹے بڑے ہر ایک سے جھک کے ملتا۔ غریب تھا اور تنخواہ بھی کم تھی، اس پر بھی اپنے بھائیوں کی مدد کرتا تھا۔ کام سے عشق تھا اور آخر کام کرتے کرتے ہی اس دُنیا سے رخصت ہو گیا۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	نیکی	नेकी	स्त्रियो. नेकी, अच्छाई
	قدرت	.कुदरत	स्त्रियो. प्रकृति
	صلاحیت	सलाहियत	स्त्रियो. योग्यता
	درجہ کمال	दर्जाए कमाल	सम्पूर्णता, दक्षता

جب کبھی مجھے نام دیو کا خیال آتا ہے تو میں سوچتا ہوں کہ نیکی کیا ہے اور بڑا آدمی کسے کہتے ہیں۔ ہر شخص میں قدرت نے کوئی نہ کوئی صلاحیت رکھی ہے۔ اس صلاحیت کو درجہ کمال تک پہنچانے میں ساری نیکی اور بڑائی ہے۔ درجہ کمال تک نہ کبھی کوئی پہنچا ہے، نہ پہنچ سکتا ہے، لیکن وہاں تک پہنچنے کی کوشش ہی میں انسان انسان بناتا ہے۔ اگر نیکی اور بڑائی کا یہ معیار ہے تو نام دیو نیک بھی تھا اور بڑا بھی۔

(مولوی عبدالحق)

कृशन चंदर

कृशन चंदर आधुनिक उर्दू साहित्य के प्रथम पंक्ति के लेखकों में से हैं। शायद उर्दू या हिंदी के किसी अन्य समकालीन कथाकार का इतना व्यापक पाठक वर्ग नहीं है। तात्त्विक मानववाद एवं प्रचुर वाग्विदग्धता के साथ-साथ रेटॉरिक और अंतर्निहित काव्यतत्त्व उनकी कहानियों की कुछ खास खूबियाँ हैं।

1914 ई. में जन्मे कृशन चंदर ने अपने आरंभिक जीवन का अधिकांश भाग कश्मीर में बिताया, जहाँ की प्राकृतिक सुषमा ने उनके सौंदर्यबोध को गहरे में प्रभावित किया। फ़ॉर्मन क्रिश्चियन कॉलेज, लाहौर से उन्होंने शिक्षा प्राप्त की, जहाँ से उन्होंने अंग्रेज़ी में एम ए किया। कई वर्षों तक वे पत्र-पत्रिकाओं में लिखते रहे। तदुपरांत वे ऑल इंडिया रेडियो से जुड़ गये। लेकिन सरकारी नौकरी से आजिज़ आकर वे भारत के फिल्म उद्योग के केंद्र बम्बई चले गये, जहाँ वे उर्दू और हिंदी फिल्मों के लिए लगातार लिखते रहे।

एक बहुसर्जक होने के नाते उन्होंने लगभग सत्तर किताबें लिखीं जिनमें बीस कहानी-संग्रह और एक दर्जन उपन्यास शामिल हैं। एक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत के निवासी होते हुए वे पाकिस्तान में सबसे लोकप्रिय कथाकार माने जाते रहे। भारतीय उपमहाद्वीप की सभी क्षेत्रीय भाषाओं तथा अंग्रेज़ी, रूसी और चीनी भाषाओं में उनकी अधिकांश कथा-रचनाओं के अनुवाद हो चुके हैं। इतने भारी मात्रा में लेखन के बावजूद कृशन चंदर की रचनाओं में कहीं झोल नहीं है।

कृष्ण चंद्र के यहाँ रचना-विषयों की विविधता है, अर्थात् उन्होंने रोमानी, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सभी विषयों पर लेखनी चलायी। वस्तुतः उन्होंने सामयिक समस्याओं और मानवीय संबंधों के समूचे सरगम के बारे में लिखा। वे मार्क्सवाद से प्रभावित रहे और उनके लेखन का एक प्रयोजन था और कभी-कभी यह प्रयोजन बहुत ही प्रकट रूप में दिखाई देता था। कला उनके लिए जीवन की समीक्षा और सामाजिक उत्थान का साधन थी। उनके अधिकांश लेखन में रोमानीकरण और रूपहीनता की प्रवृत्ति अंतर्निहित है।

साहित्य समीक्षकों का जो भी कहना हो, वे पाठकों द्वारा व्यापक रूप से पढ़े और पसंद किये गये। मध्य और निम्न वर्ग के लोग, जिनके लिए कि मुख्यतः वे लिखते थे, उनके तीक्ष्ण आदर्शवाद, भावुकतावाद और सच्ची उपदेशपरकता को बहुत पसंद करते थे। प्रायः उनकी कहानियों की एक वास्तविक आधारभूमि होती है, इसके साथ-साथ वे ढीले बुने हुए कथानक के बीच में यथार्थ व्योरे उभारते जाते हैं, जिसके कारण उनकी कहानियाँ सत्याभास कराने में सफल होती हैं। विशेष रूप से वे विलक्षण किस्सागोई, आदर्शवादी तकनीक और एक वैयक्तिक सुखद व सूक्ष्म लहजे के लिए जाने जाते हैं। उनके लहजे में उनकी दयालुता और विनोद-वृत्ति प्रतिबिम्बित होती है। उन्हें एक 'सम्मोहक' (चार्मर) कहा जा सकता है। कुछ लेखकों की तरह वे उतने गहन और वस्तुनिष्ठ नहीं हैं, लेकिन भोले-भाले लोगों के दुर्भाग्य के प्रति उनके हृदय में असीम सहानुभूति है। अपने शिल्प की कमियों को वे अपनी मानवतावादी दृष्टि एवं रचना-शैली से पूरा कर लेते हैं। उनकी शैली में स्वतःस्फूर्तता, आवेश, तीव्रता और प्रवाह का एक साथ समावेश है और प्रायः उनके गद्य में कविता का आस्वाद विद्यमान रहता है।

'दो फ़र्लांग लम्बी सड़क' उनकी चर्चित कहानियों में से है। संयत ढंग से लिखी गयी, यह एक निबंधात्मक कहानी है। सड़क पर रोज़-ब-रोज़ की घटनाओं का बयान करते हुए लेखक ने भारत के अवाम की वेदना, दरिद्रता, तंगहाली और मनोव्यथा को दर्शाया है।

UNIT XI

दो फ़र्लांग लम्बी सड़क

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	کچہری	कचहरी	स्त्रियो. कचहरी, अदालत, न्यायालय
2	لا کالج / : लॉ कॉलेज فرلانگ	फर्लांग	स्त्रियो. फर्लांग, दूरी नापने का पैमाना, मील का आठवां हिस्सा
	پیدل	पैदल	क्रि.वि. पैदल
	سائیکل	साइकिल	स्त्रियो. साइकिल
	خُسن	हुस्न	पुरुषो. हुस्न, सौन्दर्य
	گدھ	गिद्ध	पुरुषो. गिद्ध
	کول تار	कोलतार	स्त्रियो. कोलतार
	بُ	बू	स्त्रियो. महक, गंध

دو فرلانگ لمبی سڑک

پکھریوں سے لے کر لاکا^۲ج تک بس یہی کوئی دو فرلانگ لمبی سڑک ہوگی۔ ہر روز مجھے اسی سڑک پر سے گزرنا ہوتا ہے۔ کبھی پیدل، کبھی سائیکل پر۔ سڑک کے دونوں طرف سوکھے سوکھے اُداس سے درخت کھڑے ہیں۔ اُن میں نہ خُسن ہے نہ چھاؤں۔ ٹہنیوں پر گدھوں کے بھنڈ ہیں۔ سڑک صاف سپہمی اور سخت ہے۔ میں نو سال سے اس پر چل رہا ہوں۔ سخت پتھروں سے یہ سڑک تیار کی گئی ہے اور اب اس پر کول تار بچھی ہے۔ جس کی عجیب سی بو گرمیوں میں طبیعت کو پریشان کر دیتی ہے۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	برادہ	बुरादा	पुरुषो. बुरादा
	ڈھنپنا	ढंपना	अ.क्रि. ढांपना
	سرخ	सुर्ख	विशे. सुर्ख, लाल
	بجری	बजरी	स्त्रियो. बजरी
	دوست	दोस्त	पुरुषो. दोस्त, मित्र
	قریب	करीब	क्रि.वि. करीब, पास, निकट
	پاس	पास	क्रि.वि. करीब, निकट
	گاڑی	गाड़ी	स्त्रियां. गाड़ी
	موٹر	मोटर	स्त्रियो. मोटर
	روز	रोज़	पुरुषो. रोज़ाना
	نشان	निशान	पुरुषो. निशान, चिन्ह
	سطح	सत्ह, सतह	स्त्रियो. सतह, स्तर
15	یوریشین	यूरोशियन	
	ٹھیکدار	ठेकेदार	पुरुषो. ठेकेदार

سڑکیں تو میں نے بہت دیکھی ہیں۔ لمبی لمبی، پوڑی پوڑی سڑکیں، بڑے سے ڈھنسی ہوئی سڑکیں، سڑکیں جن پر سُرُخ بھری پچھی ہوئی تھی، مگر نام گنانے سے کیا فائدہ۔ جتنی اچھی طرح میں اس سڑک کو جانتا ہوں، کسی اپنے گھرے دوست کو بھی اتنی اچھی طرح نہیں جانتا۔ ہر صبح اپنے گھر سے جو کچھریوں کے قریب ہی ہے، اٹھ کر دفتر جاتا ہوں جو لاکالج کے پاس ہی ہے۔ اس کا رنگ کبھی نہیں بدلتا۔ سینکڑوں ہزاروں انسان، گھوڑے گاڑیاں، موٹریں اس پر سے ہر روز گزر جاتی ہیں اور پیچھے کوئی نشان باقی نہیں رہتا۔ اس کی ہلکی نیلی سطح اُسی طرح سخت ہے، جیسی پہلے روز تھی جب ایک یوریشین¹⁵ ٹھیکیدار نے اسے بنایا تھا۔

یہ کیا سوچتی ہے؟ یا شاید یہ سوچتی ہی نہیں۔ میرے سامنے ہی ان نو برسوں میں اس نے کیا کیا

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	حادثہ	हादिसा	पुरुषो. दुर्घटना
	محتاج	मोहताज	विशे. ज़रूरतमंद, ग़रीब
	فقير	फ़कीर	पुरुषो. फ़कीर, भीख मांगने वाला
	ترس کرنا	तरस करना	तरस करना, दया करना
6	/بابا/ : “भिखारियों द्वारा या भिखारियों के लिए प्रयोग किया जाने वाला एक शब्द” शा. पिता।		
7	/کوئی... نہیں/ : “यहां ऐसा कोई नहीं (भगवान को प्यार करने वाला) जो एक पैसा देता जाए”		
	لجّا	लुंजा	विशे. लूला
	تیوری چڑھانا	तेवरी चढ़ाना	स.क्रि. तेवरी चढ़ाना, गुस्सा करना
	حرام زادہ	हराम ज़ादा	विशे. दुष्ट, पाजी
	مشندہ	मुश्टंडा	विशे. मुश्टंडा, शक्तिशाली
	امیر	अमीर	विशे. अमीर, धनवान
	شان دار	शानदार	विशे. शानदार, भव्य
	فٹن	फिटन	स्त्रियो. फिटन
	بھکارن	भिकारन	स्त्रियो. भिखारिन

واقعات اور حادثے دیکھے۔ لیکن کسی نے اسے مُسکراتے نہیں دیکھا، نہ روتے ہی۔

”ہائے بابو! اندھے محتاج، غریب فقیر پر ترس کر جاؤ رے بابا! اے بابو! خدا کے لیے ایک پیسہ دیتے جاؤ رے بابا۔ ارے کوئی بھگوان کا پیارا نہیں؟“

پیسوں فقیر اسی سڑک کے کنارے بیٹھے رہتے ہیں۔ کوئی اندھا ہے تو کوئی لُٹا۔ کوئی پیسہ دے دیتا ہے، کوئی تیوری چڑھائے گزر جاتا ہے۔ کوئی گالیاں دے رہا ہے: ”حرام زادے، مُشنڈے، کام نہیں کرتے۔ بھپک مانگتے ہیں۔“

دو لڑکے سائیکل پر سوار ہنستے ہوئے جا رہے ہیں۔ ایک بوڑھا امپر آدمی اپنی شان دار فٹن میں بیٹھا سڑک پر بیٹھی ہوئی بھکارن کی طرف دیکھ رہا ہے اور اپنی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	مونچھ	मूँछ	स्त्रियो. मूँछ
	تاؤ دینا	ताव देना	स.क्रि. ताव देना, ऐँठना
	پہیہ	पहिया	पुरुषो. पहिया
	سنان	सुनसान	विशे. सुनसान
	ستانا	सुस्ताना	स.क्रि. सुस्ताना, आराम करना एवं अ.क्रि.
	اوغھنا	उंघना	अ.क्रि. उंघना
11	پولس	पुलिस	
	سپاہی	सिपाही	पुरुषो. सिपाही, पुलिस वाला
	چالان	चालान	पुरुषो. चालान
	ہجور	हजूर	पुरुषो. हुजूर का बिगड़ा रूप
	تھانہ	थाना	पुरुषो. थाना
	معاف کرنا	माफ करना	स.क्रि. माफ करना, क्षमा करना

انگلیوں سے مونچھوں کو تاؤ دے رہا ہے۔ ایک سُنت
کتا فٹن کے پہیوں کے نیچے آگیا ہے اور سڑک پر خون
بہہ رہا ہے۔

پھر کبھی سڑک سُنان ہو جاتی ہے۔ صرف ایک
جگہ درخت کی چھاؤں میں ایک تانگے والا گھوڑے کو
ستا رہا ہے۔ گدھ ٹہنیوں پر بیٹھے اونگھ رہے ہیں۔
پولیس کا رپا ہی آتا ہے۔

”او تانگے والے! یہاں کھڑا کیا کر رہا ہے؟ کیا
نام ہے تیرا؟ کر دوں چالان“

”بھڑا!“

”بھڑا کا بچہ! چل تھانے“

”بھڑا!“

”یہ تھوڑا ہے۔ اچھا جا، تجھے مُعاف کیا۔“

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	गोरा	गोरा	विशे. गोरा, अंग्रेज़
	چھڑی	छड़ी	स्त्रियो. छड़ी
6	ڈانس	डांस	नृत्य
7	کنٹونمنٹ	कैन्टोन्मेंट	
8	صاب /	साहिब का बिगड़ा रूप	
9	بکنا /	बकना का अंग्रेज़ी उच्चारण / बकटा /	“तुम क्या बेवकूफी की बातें करते हो”
	معافی مانگنا	मुआफी मांगना	स.क्रि. माफी मांगना
	میلہ	मैला	विशे. मैला, गंदा

تانگے والا تانگے کو دوڑائے جا رہا ہے۔ راستے
 میں ایک گورا آ رہا ہے۔ سر پر ٹیڑھی ٹوپی، ہاتھ میں
 چھڑی، لبوں پر کسی ڈانس کا سر۔
 ”کھڑا کر دو، کنٹونمنٹ⁶“
 ”آٹھ آنے صاب⁷“
 ”پچھ آنے۔“

”نہیں صاب“

”کیا بکٹا ہے تم“

تانگے والے کو مارتے مارتے چھڑی ٹوٹ جاتی
 ہے۔ لوگ اکٹھے ہو رہے ہیں۔ پولیس کا بپا ہی بھی پہنچ
 گیا ہے۔ ”حرام زادے، صاب سے معافی مانگو۔“
 تانگے والا اپنی میلی پگڑی سے آنسو پونچھ رہا ہے۔
 لوگ چلے جاتے ہیں۔

اب سڑک پھر سُنان ہے۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	بھرتی ہونا	भर्ती होना	अ.क्रि. भर्ती होना
	جنگ	जंग	स्त्रियां. जंग, युद्ध
	بخار	बुखार	पुरुषो. बुखार
	ٹلنا	टलना	अ.क्रि. उतरना
	حکیم	हकीम	पुरुषो. वैध
	دوا	दवा	स्त्रियो. दवा, इलाज

7 /राम राम/ : अभिवादन का एक ढंग जिसे हिन्दू समाज प्रयोग करता है

شام ہوگئی ہے۔ میں نے دیکھا کہ کچھریوں کے
قریب چند مزدور میلے لباس پہنے باتیں کر رہے ہیں۔

”بھیا بھرتی ہو گیا؟“

”ہاں۔ ناہے جنگ شروع ہونے والی ہے۔“

”کب شروع ہوگی؟“

”کب ! اس کا تو پتا نہیں۔ مگر ہم غریب ہی تو

مارے جائیں گے۔“

”کون جانے غریب مارے جائیں گے یا امیر۔“

”ننھا کیسا ہے؟“

”بخار نہیں ملتا۔ کیا کریں۔ ادھر جیب میں پیسے

نہیں۔ ادھر حکم سے دوا ...“

”بھرتی ہو جاؤ۔“

”سوچ رہے ہیں۔“

”رام رام !“

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	بیاری	बीमारी	स्त्रियो. बीमारी
	بجلی	बिजली	स्त्रियो. बिजली
	زرد	ज़र्द	विशे. पीला
	خجّر	खच्चर	पुरुषो. खच्चर
	جھڑی	झुरी	स्त्रियो. झुरी
	مدھم	मद्धम	विशे. मद्धिम, हल्का
	باو لا	बावला	विशे. बावला, उत्साहित

پھٹی ہوئی دھوتیاں، ننگے پاؤں، تھکے ہوئے قدم
 یہ کیسے لوگ ہیں! یہ کیسی عجیب باتیں ہیں! پیٹ، بھوک،
 بیماری، پیسے، حکیم کی دوا، جنگ!

بجلی کی زرد زرد روشنی سڑک پر پڑ رہی ہے۔
 دو عورتیں ایک بوڑھی ایک جوان، اُپلوں کے
 ٹوکرے اٹھائے خجروں کی طرح چلی جا رہی ہیں۔ جوان
 عورت کی چال تیز ہے۔

”بیٹی، میں... ذرا ٹھہر تو۔ بوڑھی عورت کے چہرے
 پر مجھڑیاں ہیں۔ اُس کی چال مذہم ہے۔
 ”بیٹی، میں، ذرا ٹھہر، میں تھک گئی... میرے اللہ
 ”اماں، ابھی گھر جا کر روٹی پکانی ہے۔ تو تو باولی
 ہوئی ہے۔“

”اچھا بیٹی۔ اچھا بیٹی۔“

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	لمحہ	लम्हा	पुरुषो. लम्हा, क्षण
	غم	ग़म	पुरुषो. ग़म, दुख
	نوجوان	नौखेज़	विशे. युवा
	بھڑکیلا	भड़कीला	विशे. भड़कीला, चमकदार

- 5 / بانہوں... ڈالے ہوئے / : “बाहों में बाहें डाले हुए”
- 6 / شملہ پہاڑی / : संज्ञा; एक स्थान का नाम
- 7 / لارنس گارڈن / : (पुरु.) लारेंस गार्डन
- 8 / انارکلی / : एक फैशनेबल शापिंग सेंटर का नाम, शा. अनार की कली।

بوڑھی عورت جوان عورت کے پیچھے بھاگتی ہوئی
 جا رہی ہے۔ بوجھ کے مارے اُس کی ٹانگیں کانپ رہی
 ہیں۔

وہ صدیوں سے اسی سڑک پر چل رہی ہے۔
 اُپلوں کا بوجھ اٹھائے ہوئے۔ کوئی اُس کا بوجھ ہلکا
 نہیں کرتا۔ کوئی اُسے ایک لمحہ ستانے نہیں دیتا۔ وہ
 بھاگی ہوئی جا رہی ہے۔ اُس کی ٹانگیں کانپ رہی
 ہیں۔ اُس کی جھڑیوں میں غم ہے اور بھوک ہے۔

تین چار نوخیز لڑکیاں بھرپیلی ساڑھیاں پہنے
 بانہوں میں بانہیں ڈالے ہوئے جا رہی ہیں۔
 ”بہن! آج شملہ پہاڑی⁶ کی سیر کریں۔“
 ”بہن! آج لارنس گارڈن⁷ چلیں۔“
 ”بہن! آج انارکلی⁸!“

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
1	रीगल	रीगल	
2	शट अप, यू फूल / آمد	शट अप, यू फूल आमद	स्त्रियों. आमद, आगमन
	پڑی	पपड़ी	स्त्रियों. पपड़ी
	جمنہ	जमना	अ.क्रि. जम जाना
	تہمتا	तमतमाना	अ.क्रि. तमतमाना, जलना
	(کا) انتظار کرنا	(का) इंतज़ार करना	स.क्रि. (का) इंतज़ार करना

”ریگل!“¹

”شٹ اپ“²، یو فول!“

آج سڑک پر سُرخ بھری بیچھی ہے۔ ہر طرف
 جھنڈیاں لگی ہوئی ہیں۔ پولیس کے سپاہی کھڑے ہیں۔
 کسی بڑے آدمی کی آمد ہے۔ اسی لیے تو اسکولوں
 کے چھوٹے چھوٹے لڑکے نیلی پگڑیاں باندھے سڑک
 کے دونوں طرف کھڑے ہیں۔ اُن کے ہاتھوں میں
 چھوٹی چھوٹی جھنڈیاں ہیں۔ اُن کے لبوں پر پیریاں
 جم گئی ہیں۔ اُن کے چہرے دھوپ سے تتما اُٹھے
 ہیں۔ اسی طرح کھڑے کھڑے وہ ڈیڑھ گھنٹے سے بڑے
 آدمی کا انتظار کر رہے ہیں۔ جب وہ پہلے پہلے یہاں
 سڑک پر کھڑے ہوئے تھے تو ہنس ہنس کر باتیں کر
 رہے تھے۔ اب سب چپ ہیں۔ چند لڑکے ایک درخت

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	شلوار	शलवार	स्त्रियो. शलवार
	ازار بند	अज़ारबंद	पुरुषो. नाड़ा
8	/ماسٹر جی/ : “टीचर”		
9	/یہ بھی... ہے/ : “इसे भी तुमने अपना घर समझ रखा है”		
10	/ابھی چھٹی ہوا چاہتی ہے/ : अब छुट्टी होने वाली है, का दूसरा रूप		
	پياس	प्यास	स्त्रियो. प्यास

کی چھاؤں میں بیٹھ گئے تھے۔ اب اُتاد اُنہیں کان سے پکڑ کر اُٹھا رہا ہے۔ شفیع کی پگڑی کھل گئی تھی۔ اُتاد اُسے گھور کر کہہ رہا ہے: ”اوشفی! پگڑی ٹھیک کر۔“ پیارے لال کی شلوار اُس کے پاؤں میں اٹک گئی ہے اور ازار بند جوتیوں تک لٹک رہا ہے۔

”تمہیں کتنی بار سمجھایا ہے پیارے لال!“

”ماسٹر جی⁸ پانی!“

”پانی کہاں سے لاؤں! یہ بھی تم نے اپنا گھر سمجھ رکھا ہے۔ دو تین منٹ اور انتظار کرو۔ بس ابھی¹⁰ مچھلی مہوا چاہتی ہے۔“

دو منٹ، تین منٹ، آدھا گھنٹہ۔

”ماسٹر جی پانی!“

”ماسٹر جی پانی!“

”ماسٹر جی بڑی پیاس لگی ہے۔“

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	متوجہ ہونا	मुत्तवज्जे होना	अ.क्रि. ध्यान देना
3	لڑکوں/ : “लड़को”	पुकारने या सम्बोधन के समय	प्रयुक्त होता है।
	ہوشیار	होशियार	विशे. होशियार, सावधान
	ا بے	अबे	विस्मया. अबे, अपमानसूचक सम्बोधन
	قطار	क़तार	स्त्रियां. पंक्ति
	بد معاش	बदमाश	विशे. बदमाश, उदंड
	سواری	सवारी	स्त्रियां. सवारी
	جان میں جان آنا	जान में जान आना	मुहावरा. जान में जान आना
	بھنگی	भंगी	पुरुषा. भंगी, स्वीपर
	جھاڑو دینا	झाड़ू देना	स.क्रि. झाड़ू देना, सफ़ाई करना
	تیل	बैल	पुरुषां. बैल
	کولھو	कोल्हू	पुरुषां. कोल्हू

لیکن اُتاد اب اُس طرف متوجہ ہی نہیں ہوتے۔
 وہ اِدھر اِدھر دوڑتے پھر رہے ہیں۔ "لڑکوں! ہوشیار
 ہو جاؤ، دیکھو جھنڈیاں اس طرح ہلانا۔ ابے تیری
 جھنڈی کہاں ہے؟ قطار سے باہر ہو جا، بد معاش
 کہیں کا... سواری آ رہی ہے۔"

بڑا آدمی سڑک سے گزر گیا۔ لڑکوں کی جان
 میں جان آگئی ہے۔ اب وہ اُچھل اُچھل کر جھنڈیاں
 توڑ رہے ہیں۔ شور مچا رہے ہیں۔

صبح کی ہلکی ہلکی روشنی میں بھنگی جھاڑو دے رہا ہے۔
 اُس کے منہ اور ناک پر کپڑا بندھا ہے۔ جیسے بیلوں
 کے منہ پر، جب وہ کولھو چلاتے ہیں۔
 سڑک کے کنارے ایک بوڑھا فقیر مَرا پڑا ہے۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	بے نور	बेनूर	विशे. बिना रोशनी का
	تکنا	तकना	स.क्रि. देखना
	ٹس سے مس نہ	टस से मस न होना	टस से मस न होना,
	ہونا		स्थिर
4	ڈائنامائٹ		डायनामाईट

اُس کی کھلی ہوئی بے نور آنکھیں آسمان کی طرف تک
رہی ہیں ۔

”خدا کے لیے مجھ غریب پر ترس کر جاؤ رے بابا۔“
کوئی کسی پر ترس نہیں کرتا۔ سڑک خاموش اور
سُنان ہے ۔ یہ سب کچھ دیکھتی ہے، سُنتی ہے، مگر ٹس
سے مس نہیں ہوتی ۔

اکثر میں سوچتا ہوں کہ اگر اسے ڈانٹناٹ لگا کر⁴
اُڑا دیا جائے تو پھر کیا ہو ۔ اس کے ٹکڑے اُڑ جائیں
گے ۔ اُس وقت مجھے کتنی خوشی حاصل ہوگی ۔ اس کا کوئی
اندازہ نہیں کر سکتا ۔

سڑک خاموش ہے اور سُنان ۔ بلند ٹہنیوں پر
گدھ بیٹھے اونگھ رہے ہیں ۔ یہ دو فرلانگ لمبی سڑک !

(کرن چندر)

सैयद आबिद हुसैन

सैयद आबिद हुसैन (जन्म 1896 ई.) उर्दू और अंग्रेज़ी दोनों में लिखते थे और एक लेखक के रूप में उनकी दोहरी भूमिका रही थी। उन्होंने अंग्रेज़ी और जर्मन से प्रचुर मात्रा में अनुवाद किये और इसके साथ ही साथ उर्दू के लिए मौलिक योगदान भी किया। भारतीय संस्कृति का इतिहास और देश के राष्ट्रीय जीवन में भारतीय मुसलमानों की भूमिका उनके प्रिय विषय थे। इतिहास एवं साहित्य के प्रति उनके दृष्टिकोण पर गांधीवादी प्रभाव लक्षित होता है।

भोपाल के एक संपन्न परिवार में जन्मे आबिद हुसैन ने इलाहाबाद और अलीगढ़ विश्वविद्यालयों में अध्ययन किया और उच्च शिक्षा के लिए ऑक्सफ़ोर्ड गये। वहाँ कुछ समय बिताने के बाद वे जर्मनी गये, जहाँ बर्लिन विश्वविद्यालय से उन्होंने डी. फ़िल. की उपाधि प्राप्त की। जर्मनी में उनकी भेंट डॉ. जाकिर हुसैन और मुहम्मद मुजीब से हुई और तीनों ने मिलकर महात्मा गांधी के महान् मित्र और भारतीय मुसलमानों के राष्ट्रीय नेता हकीम अजमल ख़ाँ से संपर्क स्थापित किया। इस प्रकार यह त्रयी बन गयी जिसने बाद में जाकर जामिया मिल्लिया इस्लामिया (नई दिल्ली) के स्वरूप का गठन किया। ऑक्सफ़ोर्ड और जर्मनी में रहते हुए सैयद आबिद हुसैन को पाश्चात्य प्रगति की सापेक्षता में भारतीय जीवन को देखने और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का आकलन करने का सुअवसर मिला।

इस दौरान वे महात्मा गांधी से प्रभावित हुए और यह प्रभाव इतना गहरा था कि यह राष्ट्र के कार्य के प्रति आजीवन समर्पण के रूप में एक मार्गदर्शक शक्ति बन गया। स्वदेश वापसी के बाद 1926 ई. में वे दर्शन एवं उर्दू साहित्य के प्रोफ़ेसर नियुक्त हुए और एक अत्यल्प वेतन पर जामिया की सेवा के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया।

गोथे का 'फ़ाउस्ट' (Faust), जार्ज बर्नार्ड शॉ का सेंट जोन (St. Joan), सेलेक्टेड डायलॉग्स ऑफ़ प्लेटो (Selected Dialogues of Plato), कांट का क्रिटिक ऑफ़ प्योर रीज़न (Critique of Pure Reason) और डी बोर (De Boer) की 'हिस्ट्री ऑफ़ फ़िलासफी इन इस्लाम' सैयद आबिद हुसैन के आरंभिक अनुवादों में से हैं। आगे इसी क्रम में उन्होंने महात्मा गांधी और जवाहर लाल

नेहरू की कृतियों के अनुवाद किये, जिन्हें तत्काल सफलता प्राप्त हुई और जिनकी बदौलत उन्हें उर्दू के विशिष्ट लेखकों के बीच प्रतिष्ठा मिली। उन्होंने मौलवी अब्दुल हक की 'The Standard English-Urdu Dictionary' तैयार करने में बहुत ऊर्जा और समय व्यय किया लेकिन वाकई उन्हें इस कार्य का उचित श्रेय नहीं दिया गया।

सैयद आबिद हुसैन जैसे तो एक जीवंत एवं विनोदप्रिय स्वभाव वाले व्यक्ति थे और चुनींदा मित्र-मंडली के बीच खूब आनंद लेते थे लेकिन 'अक्षरों के सेवक' की तरह अपना पूरा समय लेखन में लगाते हुए स्वयं में सीमित रहते थे। वे उचित जगह पर उचित शब्द का प्रयोग सुनिश्चित करने को लेकर बहुत सावधानी बरतते थे। इस तरह उन्होंने एक अर्थगर्भित शैली विकसित की, जो बहुत सीधी और सरल है। हाली (जिनकी प्रपौत्री के साथ उनका विवाह हुआ) की भांति श्रमशील और पूर्णतावादी सैयद आबिद हुसैन ने अपनी कुछ उत्कृष्ट एवं मौलिक पुस्तकों को सँवारने में कई वर्ष लगा दिये, तब अंतिम रूप से उन्हें प्रकाशित किया गया। उन्होंने अपनी पुस्तक 'The National Culture of India' (कौमी तहजीब का मस्अला) के तीन भागों पर एक दशक तक जम कर मेहनत की, जिसके दूसरे और संक्षिप्त भाग पर 1956 ई. में उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'The Way of Gandhi and Nehru' और 'The Destiny of Indian Muslims' उनकी अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं। वे राजभाषा आयोग तथा यूनेस्को (UNESCO) से सह संबद्ध राष्ट्रीय आयोग के कई वर्षों तक सदस्य रहे। भारत गणराज्य के राष्ट्रपति द्वारा 1957 ई. में उन्हें 'पद्म भूषण' से अलंकृत किया गया।

उनके शब्द-लाघव, भाव-संयम, वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण और अतिविकसित सारल्य-भाव के कारण उनका गद्य सदैव एक आदर्श बना रहेगा। यहाँ सम्मिलित गद्यांश महात्मा गांधी की आत्मकथा 'My Experiments With Truth' के उनके द्वारा किये गये अनुवाद से लिया गया है। इसमें वासना के संयम पर गांधी जी के विचार विद्यमान हैं।

UNIT XII

ब्रह्मचर्य

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	(का) पाबंद होना	अ.क्रि.	(द्वारा) बंधा होना
	وفا دار	वफादार	विशं. वफादार, वचन या कर्तव्य का पालन करने वाला
	حق	हक	पुरुषो. सच, ठीक
	جنوبی افریقہ	जनूबी अफ्रीका	दक्षिणी अफ्रीका
5	یہ حقیقت ... کھلی	“यह सच मुझ पर प्रगट हुआ”	
	برہنچریہ	ब्रह्मचर्य	पुरुषो. ब्रह्मचर्य
	ضروری	जरूरी	विशं. जरूरी, आवश्यक
9	مسز گلڈ اسٹون	मि. ग्लैड स्टोन, (विलियम एवर्ट) (1809-1898) इंग्लैंड के चार बार प्रधानमंत्री बने।	
	میاں بیوی	मियां बीबी	पुरुषो. पति-पत्नी
			बहु.
	چیز	चीज़	मित्रयो. चीज़, वस्तु

برہنچریہ

میں شادی کے بعد سے ایک بیوی کا پابند تھا۔ کیونکہ بیوی کا وفا دار رہنا بھی حق کی محبت کا ایک جز ہے۔ مگر یہ حقیقت مجھ پر جنوبی افریقہ آنے کے بعد کھلی کہ بیوی سے "برہنچریہ" برتنا ضروری ہے۔ میں نے کہیں پڑھا تھا کہ مسٹر گلیڈ اسٹون کی بیوی اُن کے لیے پارلیمنٹ میں خود چائے بناتی ہیں۔ میں نے یہ واقعہ رائے چند بھائی سے بیان کیا اور اسی سلسلے میں کہا: "میاں بیوی کی محبت بھی کیا اچھی چیز ہے۔" انھوں نے مجھ سے پوچھا: "تم ان دونوں چیزوں میں سے کسے زیادہ اچھا سمجھتے ہو، اس

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	خاتون	खातून	स्त्रियो. भद्र महिला
	انجام دینا	अंजाम देना	स.क्रि. पूरा करना
	فرض کرنا	फर्ज करना	स.क्रि. मान लेना
	الفاظ	अल्फाज़	पुरुषो. लफ़्ज़ (शब्द) का बहुवचन
	تلیخ	तल्ख़	विशे. कड़वा
	وفاداری	वफ़ादारी	स्त्रियो. निष्ठा
	شہوت رانی	शहवतरानी	स्त्रियो. शारीरिक सम्बंध
	ذریعہ	ज़रिया	पुरुषो. माध्यम
	انصاف	इंसाफ़	पुरुषो. इंसाफ़, न्याय
	ترغیب دلانا	तर्गीब दिलाना	स.क्रि. लालच दिलाना
	دل پر رکھنا	दिल पर रखना	स.क्रि. हट, निश्चय, इरादा
	عہد	अह्द	पुरुषो. शपथ, क़सम

محبت کو جو یہ خاتون ، بیوی کی حیثیت سے مسٹر گلیڈ
 اسٹون سے رکھتی ہیں ، یا اُس خدمت کو جو بغیر اُن
 تعلقات کے انجام دیتی ہیں ۔ فرض کرو وہ اُن کی
 بہن یا خادمہ ہوتیں اور اُن کا اتنا ہی خیال رکھتیں
 جتنا اب رکھتی ہیں تو کیا تم اُن کی تعریف کرتے ؟
 رائے چند بھائی کی بھی شادی ہو چکی تھی ۔ اُس
 وقت اُن کے الفاظ بہت تلخ معلوم ہوئے تھے ،
 مگر انھوں نے میرے دل پر گہرا اثر کیا ۔

میں نے اپنے دل میں سوچا ، تو مجھے اپنی
 بیوی سے کس طرح کا تعلق رکھنا چاہیے ۔ کیا وفاداری
 اسی کا نام ہے کہ میں اُسے اپنی شہوت رانی کا ذریعہ
 بناؤں ۔ انصاف کی یہ بات ہے کہ میری بیوی کبھی
 مجھے ترغیب نہیں دلاتیں ۔ اس لیے اگر میں دل پر
 رکھ لوں تو برہمچریہ کا عہد کرنا کوئی بڑی بات نہیں ۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	دقت	दिक्कत	स्त्रियो. मुश्किल, कठिनाई
	(کی) وجہ سے	(की) वजह से	पर. क्योंकि, (के) कारण
	ناکامی	नाकामी	स्त्रियो. नाकामी, असफलता
	سبب	सबब	पुरुषो. वजह, कारण
	اعلیٰ	आला	विशे. उच्च
	جذبہ	जज़्बा	पुरुषो. आदर्श, भावना
	مقصد	मक़सद	पुरुषो. उद्देश्य
	بہر حال	बहरहाल	क्रि.वि. बहरहाल
	ضبط نفس	जब्तो नफ़्स	पुरुषो. शारीरिक इच्छाओं पर रोक
	تھک کر پڑر ہوتا	थक कर चूर होना	बुरी तरह थक जाना
	کارگر	कारगर	विशे. कारगर, प्रभावपूर्ण, असरदार
	قطع	क़तई	विशे. अन्तिम, दृढ़

جو کچھ دقت ہے وہ میری وجہ سے ہے۔ یہ احساس پیدا ہونے کے بعد بھی مجھے دوبارہ ناکامی ہوئی۔ اس ناکامی کا سبب یہ ہوا کہ میری کوشش کے پیچھے کوئی اعلیٰ جذبہ نہ تھا۔ میرا اصل مقصد یہ تھا کہ اور بچے نہ ہوں۔

بہر حال میں ضبطِ نفس کی کوشش کرتا رہا۔ یہ بڑا کٹھن کام تھا۔ ہم بیاں پھوی الگ الگ کمروں میں سونے لگے۔ میں نے یہ کوشش کی کہ بستر پر اُس وقت تک نہ جاؤں گا جب تک دن بھر کے کام سے تھک کر چوڑ نہ ہو جاؤں گا۔ اُس وقت یہ کوششیں زیادہ کارگر نہیں معلوم ہوتی تھیں۔ لیکن ان ناکام کوششوں کا اثر آہستہ آہستہ ہوتا رہا اور آخری فیصلہ ان ہی کا نتیجہ تھا۔

قطعی ارادہ میں نے کہیں ۱۹۰۶ء میں کیا۔ میں

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	جنگ بوز	जंग बोएर	बोएर का युद्ध
	زولو بغاوت	जुलू बगावत	जुलू विद्रोह
3	نٹال	नटाल	
4	جوهاںس برگ	जोहांसबर्ग	
	وکالت	वकालत	स्त्रियो. वकालत
6	فینکس	फीनिक्स	
7	ایمبولینس کور	एम्बूलेंस कोर	
	زندگی	जिंदगी	स्त्रियो. जिंदगी, जीवन
	اہم	अह्म	विशे. महत्त्वपूर्ण
	دروازہ	दरवाज़ा	पुरुषो. दरवाज़ा
	مضبوط	मज़बूत	विशे. मज़बूत
	شک	शक	पुरुषो. सन्देह
	ترغیب	तर्गीब	स्त्रियो. लालच
	گرفتار	गिरफ्तार	विशे. गिरफ्तार
	مشورہ کرنا	(से) मश्विरा करना	स.क्रि. (से) राय करना
	بے جھجک	वेझिझक	क्रि.वि. खुले रूप से, निःसंकोच
	منظور کرنا	मंजूर करना	स.क्रि. स्वीकार करना
	سہل	सहल	विशे. आसान, सहल

جنگِ بوئر کے تھوڑے دن بعد زولوۃ بغاوت کے زمانے میں نٹال³ کے شہر جوہانسبرگ⁴ میں وکالت کر رہا تھا۔ بغاوت کے دنوں میں میں اپنے بیوی بچوں کو فینکس⁶ لے گیا اور وہاں ایسبولینس کور⁷ میں کام کرنے لگا۔ اُس مہم میں میرے کُل چھ ہفتے لگے۔ مگر یہ زمانہ میری زندگی کے لیے بہت اہم تھا۔ اب مجھے یہ معلوم ہو گیا کہ عہد سے سچی آزادی کا دروازہ بند نہیں ہوتا بلکہ کھلتا ہے۔ اب تک مجھے کامیابی نہ ہونے کی وجہ یہ تھی کہ میرا ارادہ مضبوط نہ تھا اور میرے دل میں شک تھا۔ میں نے دیکھا کہ عہد نہ کرنے سے انسان ترغیبوں میں گرفتار ہو جاتا ہے۔ میں نے براہِ پھر یہ کا عہد کرتے وقت اپنی بیوی سے مشورہ کیا۔ اُنھوں نے بے جھجک منظور کر لیا۔ مگر آخری فیصلہ کرنا میرے لیے سہل نہ تھا۔ اُس زمانے میں یہ بات عجیب معلوم

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	شوهر	शौहर	पुरुषो. पति
	ہم بستری	हमबिस्तरी	स्त्रियो. साथ सोना
	ترک کرنا	तर्क करना	स.क्रि. छोड़ देना
	مدد	मदद	स्त्रियो. मदद, सहारा
5	/مگر میں... کر گذرا/ : “मगर मैंने खुदा का नाम लेकर और उसकी मदद का भरोसा करके अपने वचन को पूरा किया”		
	دشواری	दुश्वारी	स्त्रियां. कठिनाई, रुकावट
	شرط	शर्त	स्त्रियो. शर्त
	ذائقہ	जाएक़ा	पुरुषो. स्वाद
	(سے) کام لینا	(से) काम लेना	स.क्रि. (से) काम लेना

ہوتی تھی کہ شوہر اپنی بیوی سے ہم بستری ترک کر دے۔ مگر میں خدا کا نام لے کر اور اُس کی مدد کا بھروسہ کر کے عہد کر گزرا۔

جب میں اس عہد کے بعد کی زندگی پر ، جسے اب بیس سال ہو گئے ، غور کرتا ہوں تو میرا دل خوشی اور حیرت سے بھر جاتا ہے۔ ضبطِ نفس کی کوشش میں ۱۹۰۱ء سے کر رہا تھا اور اس میں کسی حد تک کامیابی بھی ہوئی تھی۔ لیکن خوشی اور آزادی کا احساس عہد کرنے کے بعد ہوا ، اور وہ پہلے کبھی نہیں ہوا تھا۔ پھر بھی یہ کوئی سہل کام نہ تھا۔ اب چھپن سال کی عمر میں بھی مجھے اس کی دشواریاں محسوس ہوتی ہیں۔

اس عہد کی پابندی کے لیے پہلی شرط یہ ہے کہ انسان ذات کے معاملے میں ضبطِ نفس سے کام لے۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	تجربہ	तज्जिबा	पुरुषो. प्रयोग, अनुभव
	برہمچاری	ब्रह्मचारी	विशे. ब्रह्मचारी
	غذا	गिज़ा	स्त्रियो. भोजन, खाना
	بے	बे	उप. बिना
	مسالہ	मसाला	पुरुषो. मसाला
	پکا	पक्का	विशे. पका
	جسم	जिस्म	पुरुषो. शरीर
	نشوونما	नश्व व नुमा	स्त्रियो. विकास, बढ़ना पुरुषो.
	آسانی سے	आसानी से	आसानी से
	ہضم ہونا	हज़्म होना	अ.क्रि. पचना
	تدبیر	तदबीर	स्त्रियो. उपाय
	روزہ	रोज़ा	पुरुषो. उपवास, व्रत
	زور ٹوٹنا	ज़ोर टूटना	अ.क्रि. ज़ोर टूटना
	تصور	तसव्वुर	पुरुषो. कल्पना

اپنے تجربے سے میں نے یہ نتیجہ نکالا کہ برہمچاری کی غذا تھوڑی سادہ بے سالے کی، اور ممکن ہو تو بے پکی ہونی چاہیے۔

میرے نزدیک دودھ کے استعمال سے یقیناً برہمچریہ برتنے میں دشواری ہوتی ہے لیکن دودھ کا کوئی ایسا بدل نہیں مل سکا جو جسم کی نشو و نما میں بھی مدد دیتا ہو اور آسانی سے ہضم بھی ہو جاتا ہو۔ اس لیے میں کسی کو اس کے چھوڑنے کا مشورہ نہیں دے سکتا۔

برہمچریہ کو مدد دینے کی دوسری تدبیروں میں سے روزہ بھی اتنا ہی ضروری ہے جتنی غذا کی سادگی۔ ہر شخص جانتا ہے کہ غذا نہ ملنے سے خواہش کا زور ٹوٹ جاتا ہے مگر بعض لوگوں کو اس سے کچھ فائدہ نہیں پہنچتا، کیوں کہ وہ تصور میں طرح طرح کی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	لذت	लज्जत	स्त्रियो. स्वाद, आनंद
	مزه لینا	मज़ा लेना	स.क्रि. मज़ा लेना
	روزہ کھولنا	रोज़ा खोलना	स.क्रि. उपवास/व्रत तोड़ना
	قابو میں لانا	काबू में लेना	वश में करना
	شہوانی	शहवानी	विशे. कामेच्छा
	طالب	तालिब	पुरुषो. चाहने वाला
	باگ ڈھیلی چھوڑنا	बाग ढीली छोड़ना	लगाम छोड़ देना
	غیر	गैर	उप. अजनबी
	مثال	मिसाल	स्त्रियो. उदाहरण
	لطف اٹھانا	लुत्फ उठाना	स.क्रि. आनंद उठाना

لذتوں کے مزے لیا کرتے ہیں اور ہر وقت سوچا کرتے ہیں کہ جب روزہ کھولیں گے تو یہ کھائیں گے اور یہ پیئیں گے۔ اس طرح کے روزے سے ذائقے کو قابو میں لانے میں مدد نہیں ملتی اور نہ ہی شہوانی خواہشوں کو دبانے میں۔

برہمچریہ کے بہت سے طالب اس وجہ سے ناکامیاب ہوتے ہیں کہ دوسری خواہشوں کی باگ وہ اس طرح ڈھیلی چھوڑ دیتے ہیں جیسے غیر برہمچاری۔ اس لیے اُن کی مثال اُس شخص کی سی ہے جو گرمی میں یہ کوشش کرتا ہے کہ جاڑے کا نطف اٹھائے۔ برہمچاری اور غیر برہمچاری کی زندگی میں فرق ہونا چاہیے۔

(مہاتما گاندھی : ترجمہ ڈاکٹر سید عابد حسین)

रशीद अहमद सिद्दीकी

रशीद अहमद सिद्दीकी के कला-विनोद की कहानी अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के जीवन के विविध पहलुओं की कहानी है। अलीगढ़ उनका प्रेम था और लेखन उनकी श्रद्धा। अपने अति व्यक्तिवाद, तेज़ मस्तिष्क और विलक्षण विनोदशीलता के रहते हुए उनका नाम उर्दू के समकालीन निबंधकारों और व्यंग्य लेखकों की उच्च श्रेणी में आता है।

उनका जन्म मड़याहू, जौनपुर (उ.प्र.) में 1896 ई. हुआ। आरंभ में उन्होंने एक स्थानीय स्कूल में विद्यार्जन किया और फिर अलीगढ़ चले गये, जहाँ विश्वविद्यालय में अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए कचहरी में क्लर्की करनी पड़ी। उन्होंने अलीगढ़ में 1922 ई. पढ़ाना शुरू किया और स्थायी रूप से वहीं बस गये। अलीगढ़ उनके लिए एक जीवन का मार्ग, एक सोचने का ढंग था। अलीगढ़ के प्रति उनके लगाव और जुड़ाव को उनकी अतीव पठनीय आत्मकथा 'आशुप्ता बयानी मेरी' में प्रखर अभिव्यक्ति दी गयी है।

रशीद अहमद सिद्दीकी एक पूर्णतावादी हैं और अपने विषय और शैली पर स्वयं को एकाग्र रखते हैं। 'मज़ामीन-ए-रशीद' और 'ख़दाँ' उनकी दो बहुचर्चित किताबें हैं। 'गंजहाए- गरौं माया' और 'हम नफ़सान-ए-रफ़्तः' में प्रमुख राष्ट्रीय और साहित्यिक हस्तियों के व्यक्ति-चित्र संगृहीत हैं। वे एक सुसज्जित और कोमल-कांत भाषा का व्यवहार करते हैं। उनकी शैली में अरबी और फ़ारसी प्रयोगों के प्रति झुकाव दिखाई देता है, तथापि उनकी भाषा क्लिष्ट एवं अलंकार बोझल होने के बजाय सुगठित एवं सामासिक है। उनके निबंधों में गहन मानवीय सहानुभूति, प्राचीन मूल्यों के प्रति आदरभाव और संयत हास-परिहास को अभिव्यक्ति मिली है। यहाँ उल्लास की सतह के नीचे करुणा प्रवाहित है, जिसने उनके जीवन एवं व्यक्तित्व को गढ़ा है। उन्होंने अपने लेखन में अलीगढ़ के जीवन और घटनाओं तथा अपने पूर्वग्रहों को बेबाक अभिव्यक्ति दी है, और अपने विचारों को कुछ शिथिल ढाँचे में विकसित होने दिया है। उन्हें अपने सतत और संपूर्ण निबंधों की अपेक्षा अपनी भाषा और नुकीली

सूक्तियों के लिए ज़्यादा पढ़ा जाता है। उनका गद्य परिपक्व बुद्धिमत्ता और सार्वभौमिक मानवीय आदर्शों एवं वृत्तियों के प्रति गहन अंतर्दृष्टि से परिपूर्ण है; यह सामासिक एवं संश्लिष्ट होते हुए सारगर्भित कहावतों से संपन्न है। उनके निबंध प्रायः व्यंग्यात्मक या विरोधाभासपूर्ण तेवर के साथ समाप्त होते हैं। उनकी इस विशेषता ने उन्हें उर्दू के बहु उद्धृत समकालीन लेखकों की पंक्ति में खड़ा कर दिया है।

‘चारपाई’ गद्य-रचना उनके संग्रह ‘मज़ामीन-ए-रशीद’ से ली गयी है। इसे कुछ संक्षिप्त करके यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

UNIT XIII

चारपाई

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	اوڑھنا بچھوٹا	ओढ़ना बिछौना	पुरुषो. ओढ़ना बिछौना, ज़रूरी सामान
	پیدا ہونا	पैदा होना	अ.क्रि. पैदा होना, उत्पन्न होना
3	آفس	ऑफिस	पुरुषो.
	جیل خانہ	जेलखाना	पुरुषो. जेलखाना, बन्दीगृह
5	کونسل	कौंसिल	स्त्रियों.
	آخرت	आखिरत	स्त्रियों.
	گھٹی میں پڑنا	घुट्टी में पड़ना	दूसरी दुनिया, परलोक घुट्टी में पड़ना, बचपन से किसी चीज़ का आदी होना
	اعتماد	एतिमाद	पुरुषो. विश्वास, भरोसा
	آئی سی ایس	आई सी एस	स्त्रियों इंडियन सिविल सर्विस
	جائے پناہ	जाण पनाह	स्त्रियों. शरणस्थल, पनाह लेने की जगह

چارپائی

چارپائی اور مذہب ہم ہندوستانیوں کا اوڑھنا
 بچھونا ہے۔ ہم اسی پر پیدا ہوتے ہیں اور یہیں
 سے اسکول، آفس^۳، جیل خانے، کونسل^۵ یا آخرت
 کا راستہ لیتے ہیں۔ چارپائی ہماری گھنٹی میں پڑی
 ہوئی ہے۔ ہم اس پر دوا کھاتے ہیں اور
 دُعا بھی مانگتے ہیں۔ ہم کو چارپائی پر اتنا ہی
 اعتماد ہے جتنا برطانیہ کو آئی۔ سی۔ ایس^۹ پر
 تھا۔

چارپائی ہندوستانیوں کی آخری جاے پناہ

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	فتح	फतह	स्त्रियो. जीत, विजय
	شکست	शिकस्त	स्त्रियो. हार, पराजय
	ریاست	रियासत	स्त्रियो. राज्य
	ناموزوں	नामौजूं	विशे. अनुप्युक्त
7	/ کام پر لگنا/ : “नौकरी पाना”		
8	/ ولایت پاس/ : “विदेश की शिक्षा”; वह व्यक्ति जिसने विदेश में शिक्षा प्राप्त किया हो।		
	اسامی	असामी	स्त्रियो. नौकरी, रोज़गार
10	/ کانوں تک بات پہنچنا/ : “ख़बर होना”		
	جگہ	जगह	स्त्रियो. जगह, पद, स्थान
12	/ لاٹ صاحب/ : “वायसराय, गवर्नर जनरल, बर्तानिया के भारत में उच्च पदाधिकारी, /लाट/ अंग्रेज़ी शब्द लॉर्ड का भारतीकरण		
	اکتفا کرنا	(पर) इक्तिफ़ा करना	स.क्रि. (पर) संतोष करना
	ہل چل	हलचल	स्त्रियो. हलचल
	مچنا	मचना	अ.क्रि. मचना, उठना
16	/ ایول سرجن/ : सिविल सर्जन		
	رخست	रुख़स्त	स्त्रियो. छुट्टी

ہے۔ فتح ہو یا شکست، وہ جائے گا ہمیشہ چارپائی کی طرف۔ پھر وہ چارپائی پر لیٹ جائے گا، گائے گا یا گالی دے گا۔

چارپائی ریاست کے ملازم کی طرح ہے۔ یہ ہر کام کے لیے ناموزوں ہوتا ہے۔ اس لیے ہر کام پر لگا دیا جاتا ہے۔ ایک ریاست میں کوئی صاحب⁷ 'ولایت پاس'⁸ ہو کر آئے۔ ریاست میں کوئی اسامی نہ تھی جو ان کو دی جاسکتی۔ آدمی سوچھ، بوچھ کے تھے۔ راجہ صاحب کے کانوں تک یہ بات پہنچا دی کہ¹⁰ کوئی جگہ نہ ملی تو وہ لاٹ صاحب سے طے کر آئے ہیں، راجہ صاحب ہی کی جگہ پر اکتفا کریں گے۔ ریاست میں بل چل مچ گئی۔ اتفاق سے ریاست کے سول سرجن¹² رخصت پر گئے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
1	انجینیر فالج	इंजीनीयर फ़ालिज	पुरुषो. पुरुषो. लक्वा
3	ہائی کورٹ	हाई कोर्ट	स्त्रियो. उच्च न्यायालय
4	چیف جسٹس	चीफ जस्टिस	पुरुषो. मुख्य न्यायमूर्ति
	بیمار	बीमार	विश. बीमार
	میسر ہونا	मयस्सर होना	अ.क्रि. उपलब्ध होना
	حاجت	हाजत	स्त्रियो जरूरत, आवश्यकता
	پڑیا	पुड़िया	स्त्रियो. पुड़िया
	تکلیہ	तकिया	पुरुषो. तकिया
	شیشی	शीशी	स्त्रियो. शीशी
	سرہانہ	सरहाना	पुरुषो. सिरहाना
	طیب	तबीब	पुरुषो. हकीम, वैद्य
	خدمت گزار	खिदमत गुज़ार	विश. सेवक
	بول و براز	बोल-व-बराज़	पुरुषो. पिशाब-पाखाना

ہوئے تھے۔ یہ اُن کی جگہ پر لگا دیے گئے۔
 کچھ دنوں بعد سول سرجن صاحب واپس آئے
 تو انجینیئر صاحب¹ پر فالج گرا۔ اُن کی جگہ
 اِن کو دے دی گئی۔ آخری بار یہ خبر سنی
 گئی کہ وہ ریاست کے ہائی کورٹ کے چیف
 جسٹس⁴ ہو گئے تھے۔

یہی حالت چارپائی کی ہے۔ فرق صرف
 یہ ہے کہ اُن ملازم صاحب سے کہیں زیادہ مفید
 ہوتی ہے! فرض کیجیے آپ بیمار ہیں۔ سفر آخرت
 کا سامان میسر ہو یا نہ ہو، اگر چارپائی آپ
 کے پاس ہے تو دنیا میں آپ کو کسی اور چیز کی
 حاجت نہیں۔ دوا کی پڑیا تکیے کے نیچے، شیشی
 سرہانے رکھی ہوئی، بڑی بیہوشی، بچھوٹی
 بیہوشی خدمت گزار، چارپائی سے ملا ہوا بول و براز

क्र.	उर्दू کھلونا کاغذ محلہ ایک آدھ	देवनागरी खिलौना कागज़ मुहल्ला एक-आध	अर्थ पुरुषो. पुरुषो. पुरुषो. विशे.	खिलौना कागज़ मुहल्ला, पड़ोस एक या दो, एक या आधा
	زکام بتلا غسل 8 آپ کے دشمن / قبرستان	जुकाम मुब्तला गुस्ल कब्रिस्तान	पुरुषो. विशे. पुरुषो. पुरुषो.	जुकाम मुब्तला, ग्रस्त नहाना, स्नान कब्रिस्तान (जहां मुर्दों को गाड़ा जाता है)
11	گھراٹا ڈرائنگ روم	घराना ड्राइंग रूम	पुरुषो. पुरुषो.	घराना, परिवार बैठक
	غسل خانہ خیمہ دواخانہ صندوق حاصل رہنا دری مع 20 شیروانی بیک بغی مشکل	गुस्ल खाना खेमा दवाखाना सन्दूक हासिल रहना दरी मअ शेरवानी बैग बुगची, बैग बगची मुश्किल	पुरुषो. पुरुषो. पुरुषो. पुरुषो. अ.क्रि. स्त्रियो. ललं स्त्रियो. पुरुषो. स्त्रियो. विशे. एवं स्त्रियो.	स्नानघर तंबू, डेरा दवाखाना बक्स हासिल रहना दरी, कार्पेट सहित शेरवानी छोटा बंडल मुश्किल
	بے وقوف میزبان بد نصیب	बेवकूफ मेज़बान बदनसीब	विशे. पुरुषो. विशे.	मूर्ख, मूढ़ घर का मालिक, अतिथेय दुर्भाग्यशाली

کا برتن، چارپائی کے نیچے میلے کپڑے، پنچوں کے
 کھلونے، جھاڑو، کاغذ کے ٹکڑے، گھریا محلے کے
 دو ایک بچے جن میں ایک آدھ زکام میں مبتلا!
 اچھے ہو گئے تو بیوی نے چارپائی کھڑی کر کے
 غل کرا دیا ورنہ آپ کے دشمن⁸ اسی چارپائی
 پر قبرستان لائے گئے۔

ہندستانی گھرانوں میں چارپائی کو ڈرائنگ
 روم¹¹، سونے کا کمرہ، غل خانہ، قلعہ، خیمہ، دواخانہ
 صندوق، کتاب گھر سب کی حیثیت حاصل رہتی ہے۔
 کوئی مہمان آیا، چارپائی نکالی گئی۔ اس پر ایک
 نئی درسی پچھا دی گئی اور مہمان صاحب مع
 شیردانی، ٹوپی، بیگ²⁰، بنغی کے بیٹھ گئے اور
 تھوڑی دیر کے لیے یہ معلوم کرنا مشکل ہو گیا کہ
 مہمان بے وقوف ہے یا میزبان بدنصیب! چارپائی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	فراق	फिराक	पुरुषो. जुदाई
	وصال	विसाल	पुरुषो. मिलन
	تندرستی	तंदरुस्ती	स्त्रियो. स्वास्थ्य
	(سے) نپٹنا	(से) निपटना	स.क्रि. (से) निमटना
	بہ طور	बतौर	क्रि.वि. रूप में
	پاخانہ	पाखाना	पुरुषो. शौचालय
	فرش	फर्श	पुरुषो. फर्श
9	ملٹری ٹینک	मिलिट्री टैंक	पुरुषो.
	کھٹل	खटमल	पुरुषो. खटमल
	نجات (سے)	(से) निजात पाना	स.क्रि. (से) छुटकारा पाना
	پانا		
	ترکیب	तर्कीब	स्त्रियो. उपाय
	آسن	आसन	पुरुषो. आसन
	تخیل	तखय्युल	पुरुषो. कल्पना
15	/کھٹلوں سے ... لیا ہے/ : “खटमलों से छुटकारा पाने के लिए जो उपाय किये जाते हैं और जिस जिस आसन में चारपाई नज़र आती है, उनपर ध्यान दें तो ऐसा मालूम होता है जैसे भारतीय पत्नी की कल्पना भारतीयों ने चारपाई ही से ली है।		
	حکومت	हुकूमत	स्त्रियो. शासन
	کرتا دھرتا	करता धरता	पुरुषो. मुखिया
	براجمان ہوتا	ब्राजमान होना	अ.क्रि. विराजमान होना

ہی پر اُن کا منہ ہاتھ ڈھلویا اور کھانا
کھلایا جائے گا اور اسی چارپائی پر سو رہیں
گے۔

فراق اور وصال، بیماری و تندرستی سب
سے چارپائی ہی پر بیٹھتے ہیں۔ بچے بوڑھے اور
بیمار اس کو بہ طور پاخانہ، غسل خانہ کام میں
لاتے ہیں۔ فرش پر گھسیٹے تو معلوم ہو کوئی
ملٹری ٹینک⁹ ٹھم پر جا رہا ہے۔ کھٹملوں سے نجات
پانے کے لیے جو ترکیبیں کی جاتی ہیں اور جس
جس آسن میں چارپائی نظر آتی ہے، اُن پر غور
کریلیجے تو ایسا معلوم ہوتا ہے جیسے ہندستانی بیوی
کا تخیل¹⁵ ہندستانیوں نے چارپائی ہی سے لیا ہے!
حکومت بھی چارپائی ہی پر سے ہوتی ہے۔
خاندان کے کرتا دھرتا چارپائی ہی پر براجمان

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	احکام	अहकाम	पुरुषो. हुक्म (आदेश) का बहुवचन
	جاری ہوتا	जारी होना	अ.क्रि. पारित होना
	گناہ گار	गुनाहगार	विशे. पापी, दोषी
	ڈنڈا	डंडा	पुरुषो. डंडा
	باورچی خانہ	बावर्चीखाना	पुरुषो. रसोईघर
	پانسات	पानसात	विशे. पांच-सात
	بیلی	बिल्ली	स्त्रियो. बिल्ली
	بے شمار	बेशुमार	विशे. अनगिनत
11	/سب ... گئیں/ : “वह सब एक ढंग से बैठ गयीं”; /کرینا/ “ढंग, सलीका”		
	مار کھانا	मार खाना	स.क्रि. मार खाना
	بدتمیزی	बदतमीजी	स्त्रियो. दुर्व्यवहार
14	/باقی ... جاتی ہے/ : “बाकी इस पर कि उनको मक्खियां खाये जाती हैं”		
	بدزبانی	बदज़बानी	स्त्रियो. अपशब्द, गाली देना
	سہنا	सहना	स.क्रि. सहन करना, बर्दाश्त करना

ہوتے ہیں۔ وہیں سے ہر طرح کے احکام جاری ہوتے رہتے ہیں اور ہر گناہ گار کو سزا بھی وہیں سے دی جاتی ہے۔ اس میں ہاتھ پاؤں، زبان، ڈنڈا، جوتا بھی استعمال ہوتے ہیں جنہیں اکثر پھینک کر مارتے ہیں۔

چارپائی ہی کھانے کا کمرہ بھی ہوتی ہے۔ باورچی خانے سے کھانا چلا اور اُس کے ساتھ پانات پھوٹے بڑے بچے، اتنی ہی مرغیاں، دو ایک سکتے، بلی اور بے شمار مکھیاں آ پہنچیں۔ سب اپنے قریب سے بیٹھ گئیں۔¹¹ ایک بچہ زیادہ کھانے پر مار کھاتا ہے، دوسرا بدتمیزی سے کھانے پر تیسرا کم کھانے پر اور باقی اس پر کہ اُن کو مکھیاں کھائے جاتی ہیں۔¹⁴ دوسری طرف بیوی کھلی آزاتی جاتی ہے اور شوہر کی بد زبانی سنتی اور بدتمیزی سہتی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	گم ہونا	गुम होना	अ.क्रि. खो जाना
	تلاش	तलाश	स्त्रियो. तलाश, खोज
	ہاتھی	हाथी	पुरुषो. हाथी
	سوئی	सूई	स्त्रियो. सूई
	موزہ	मोज़ा	पुरुषो. मोज़ा
	کھٹکا	खटका	पुरुषो. आवाज़
	پناہ	पनाह	स्त्रियो. शरण
	آب و ہوا	आबो हवा	स्त्रियो. वातावरण, शा. "पानी व हवा"
	تمدن	तमहुन	पुरुषो. संस्कृति
	معاشرت	मुआशरत	स्त्रियो. सामाजिक जीवन, जीने का ढंग
	بھرپور	भरपूर	विशे. भरपूर
	نمونہ	नमूना	पुरुषो. नमूना
	(کے) مانند	(के) मानिंद	पर. (के) जैसे
	ڈھیلا ڈھالا	ढीला ढाला	विशे. ढीला ढाला, सुस्त
	بے سرو سامان	बे सरो सामान	विशे. बेबस
	غالب	ग़ालिब	विशे. विजयी, शक्तिशाली
	حکمران	हुक्मरां	पुरुषो. शासक
	سامان راحت	सामाने राहत	पुरुषो. आनंद/आराम का सामान
	فراہم کرنا	फ़राहम करना	स.क्रि. उपलब्ध करना
	صوفہ	सोफ़ा	पुरुषो. सोफ़ा
	اسیر	असीर	पुरुषो. अधीन, गुलाम, कैदी
	شاعر	शाइर	पुरुषो. शाइर, कवि

جاتی ہے ۔

کوئی چیز کہیں گم ہو ، ہندستانی اُس کی تلاش چارپائی سے شروع کرتا ہے ۔ اس میں ہاتھی ، سوئی ، بھوی ، بچے ، موزے ، مرغی ، چور سب شامل ہیں ۔ رات میں کھٹکا ہوا ، اُس نے چارپائی کے نیچے دیکھا ۔ خطرہ بڑھا تو چارپائی کے نیچے پناہ لی ۔

چارپائی ہندستان کی آب و ہوا ، تمدن و معاشرت کا سب سے بھرپور نمونہ ہے ۔ ہندستان اور ہندستانیوں کے مانند ڈھیلی ڈھالی اور بے سرو سامان ، لیکن ہندستانیوں کی طرح غالب اور حکمران کے لیے ہر قسم کا سامانِ راحت فراہم کرنے کے لیے تیار صوفے اور ڈرائنگ روم کے اسپر اُس راحت کا کیا اندازہ لگا سکتے ہیں جو چارپائی پر میسر آتی ہے ! شاعروں نے انسان کی خوشی اور

क्र.	उर्दू	देवनागरी	रू
	منتخب کرنا	मुंतख़ब करना	स.क्रि. चुनना, चुनाव करना
	شرافت	शराफ़त	स्त्रियों. शराफ़त
	فراغت	फ़राग़त	स्त्रियों. मुक्ति
	گوشے چمن	गोशए चमन	पुरुषो. बाग़/चमन का कोना
	فہرست	फ़हरिस्त	स्त्रियों. सूची
	مختصر ہونا	मुख़्तसर होना	अ.क्रि. छोटा होना, संक्षिप्त होना
	لوازم	लवाज़िम	पुरुषो. ज़रूरियात, आवश्यकताएं

خوشحالی کے لیے کچھ باتیں منتخب کر لی ہیں، مثلاً
 سچے دوست، شرافت، فراغت اور گوشہ چمن۔ ہندستان
 جیسے غریب ملک کے لیے یہ فہرست اس سے مختصر
 ہونی چاہیے۔ میرے نزدیک تو صرف ایک چارپائی
 ان تمام لوازم کو پورا کر سکتی ہے۔

(رشید احمد صدیقی)

आले अहमद 'सुरूर'

आले अहमद, उपनाम 'सुरूर', पहले क्रम में आने वाले चर्चित उर्दू आलोचक थे। 'सुरूर' से पहले उर्दू आलोचना एक स्वतंत्र साहित्यिक विधा होने की बजाय एक मन बहलाव का उपक्रम थी। 'सुरूर' ने अपने सहयात्री लेखकों के साथ इसे एक नया रचाव और नयी प्रतिष्ठा प्रदान की, और इन समकालीनों के प्रयासों के कारण ही उर्दू आलोचना का व्यक्तित्व निखरा।

आले अहमद 'सुरूर' का जन्म 1912 ई. में बदायूँ (उ.प्र.) में हुआ। बदायूँ मुस्लिम शिक्षा का एक पारंपरिक केंद्र है और शताब्दियों से धर्मवेत्ताओं और शाइरों का वतन रहा है। शाइरी यहाँ एक पेशा नहीं, बल्कि जीवन का एक ढब है। आले अहमद 'सुरूर' जब हाई स्कूल के विद्यार्थी थे, तभी उनके भीतर शाइरी के संस्कार जागृत हो चुके थे और वे शेर कहने लगे थे। लेकिन उनके माता-पिता उन्हें डॉक्टर बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने विज्ञान की पढ़ाई की और सेंट जॉस कॉलेज, आगरा से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। बाद में उन्होंने अंग्रेज़ी साहित्य का अध्ययन किया। 1934 ई. स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के बाद कुछ समय तक उन्होंने अलीगढ़ में उर्दू और अंग्रेज़ी का अध्यापन किया। फिर लखनऊ विश्वविद्यालय चले गये। 1955 ई. में उन्हें अलीगढ़ में सैयद हुसैन रिसर्च इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर पद पर कार्य करने हेतु आमंत्रित किया गया।

'सुरूर' के छः-सात साहित्यिक निबंध-संग्रह और दो शाइरी के मज्मूए प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने 'Aligarh History of Urdu Literature' पुस्तक तैयार करने का डौल डाला जिसका पहला केवल एक खण्ड ही शायी हो सका। तदुपरांत उन्होंने सैयद हुसैन रिसर्च इंस्टीट्यूट के लिए 'दीवान-ए-ग़ालिब' का अंग्रेज़ी अनुवाद किया जो छप नहीं सका।

एक आलोचक के रूप में 'सुरूर' अपने कॉलेज के दिनों से ही एक परिघटना की तरह रहे हैं। चौथे दशक के शुरू में उर्दू आलोचना पुरातनता और भाववाद की लीक में फंसी हुई थी। एक ओर परंपरा में जकड़े हुए रूढ़िवादी-क्लासिकवादी लोग थे, दूसरी ओर अतिशय रूप से पाश्चात्त्यीकृत नौसिखिए थे जो अपने पारंपरिक दाय से विमुख थे। अतिवादों के इस दौर में

‘सुरू’ ने वैचारिक संतुलन कायम करने की चेष्टा की। उन्होंने एक समेकित दृष्टि, वस्तुनिष्ठता और एक गैर भावुक एवं पूर्वग्रहमुक्त साहित्यिक मूल्यांकन पर जोर दिया। उन्होंने स्वयं को आलोचना के किसी संप्रदाय विशेष तक सीमित नहीं रखा।

उनके पास एक उर्वर और गहरी सूझ-बूझ रखने वाला जेहन था जो क्लासिकवादी एवं आधुनिकतावादी, भाववादी एवं मार्क्सवादी, पुराने एवं नये सभी को अपील करता था। नई पीढ़ी के लिए ‘सुरू’ ने कुछ विशिष्ट क्लासिकल रचनाकारों की पुनर्व्याख्या उपलब्ध करायी और कुछ आलोचकीय भूलें दुरुस्त कीं, जहाँ भ्रमित आलोचना-दृष्टि के कारण गलत निष्कर्ष पेश किये गये थे। वे अपनी तीव्र संवेदनशीलता, तीक्ष्ण बुद्धि और पूर्वग्रहमुक्त दृष्टि के रहते हुए स्वयं को अपने सीमित क्षेत्र— अर्थात् साहित्यिक मूल्यों और प्रतिमानों की खोज से विमुख होने से रोके रहे। हालांकि, शायद उन्होंने भाषा में सघनता एवं लालित्य पैदा करने की गरज से सूत्रों और सूचक पदों का अतिशय व्यवहार किया है, तो भी उनके द्वारा स्रष्ट शब्दावली का आज आलोचना-कर्म में उपयोग किया जाता है।

उनके पास भाषा का कौशल था और शैली के प्रति जन्मजात अनुराग। वे अपने ढंग की ऊष्मा, आत्मीय भाव और रचनात्मक स्पर्श के साथ एक सुस्पष्ट और प्रांजल गद्य के सिद्ध हस्त रचनाकारों में से थे। यह गद्य एक आलोचक के रूप में उनकी अध्ययनशीलता और शाइर के रूप में उनकी सामर्थ्य के फलस्वरूप सहजतः संभव हो सका है।

अंजुमन तरक्की-ए-उर्दू के महासचिव के रूप में ‘सुरू’ अंजुमन के दो मुख-पत्रों त्रैमासिक ‘उर्दू अदब’ और साप्ताहिक ‘हमारी ज़बान’ के संपादक रहे। अग्रलिखित गद्यांश जवाहर लाल नेहरू के निधन पर लिखे गये ‘हमारी ज़बान’ (1 जून, 1964) के एक संपादकीय से लिया गया है। इस संपादकीय आलेख का गद्य भावुकता एवं गहन वेदना के भाव से युक्त होते हुए संयमित, सहज और सारगर्भित है।

UNIT XIV

जवाहर लाल नेहरू

(श्रद्धांजलि)

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	(کا) دھڑکا لگना	(का) धड़का लगना	अ.क्रि. डर लगना
	گُل ہونا	गुल होना	अ.क्रि. समाप्त होना, खत्म होना
3	ایشیا : एशिया		
4	جانی رہی / : “समाप्त होना”, किसी प्रिय व्यक्ति के मृत्यु पर		
	محبوب	महबूब	विशे. प्रिय
	آزاد	आज़ाद	विशे. आज़ाद, स्वतंत्र
	غلام	.गुलाम	विशे. .गुलाम, पराधीन

جواہر لال نہرو

آخر وہی ہوا جس کا دھڑکا لگا ہوا تھا۔
 جواہر لال نہرو کی زندگی کا چراغ گل ہو گیا۔
 صرف اُن کی زندگی کا چراغ گل نہیں ہوا ،
 ہندستان میں اندھیرا ہو گیا۔ ایشیا کی روشنی
 جاتی رہی^۴۔ دُنیا پر غم کے بادل چھا گئے۔
 ہندستان کا یہ محبوب رہ نما صرف ہندستان کا
 رہ نما نہیں تھا، وہ ساری دُنیا کا رہ نما تھا۔
 اُس نے ہاتما گاندھی کی رہ نمائی میں صرف
 ہندستان کو آزاد نہیں کرایا ، کتنے ہی عسلا

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	احترام	एहतिराम	पुरुषो. इज्जत, सम्मान
	مشرقی	मशिरकी	विशे. पूरबी, प्राच्य
	مغربی	मगिबी	विशे. पश्चिमी, पाश्चात्य
	عالمی	आलमी	विशे. अन्तर्राष्ट्रीय
	ذہن	जहन	पुरुषो. प्रतिभा, दिमाग, मस्तिष्क
	متضاد	मुतजाद	विशे. विपरीत, विरोधी
	عناصر	अनासिर	पुरुषो. उन्सुर (तत्व) का बहुवचन
	مثالی	मिसाली	विशे. आदर्श
	تصویر	तस्वीर	स्त्रियो. आकृति, चित्र
	عظیم الشان	अजीमुशशान	विशे. महान
	درد	दर्द	पुरुषो. दर्द
	آشنا	आश्ना	विशे. परिचित
16	/جس کے یہاں/ : “जिसके लिए”		
	علاقہ	इलाका	पुरुषो. इलाका, क्षेत्र
	عقیدہ	अकीदा	पुरुषो. आस्था, श्रद्धा
	معنی	मानी	पुरुषो. अर्थ

ملکوں میں آزادی کی تڑپ پیدا کی۔ اُس نے
 ہندستان کی آزادی کی لڑائی اس طرح کامیابی
 سے لڑی کہ دوست دشمن سب کے سر احترام
 میں جھک گئے۔ وہ ہندستانی تھا، وہ مشرقی
 تھا، وہ مغربی تھا، وہ عالمی ذہن رکھتا تھا۔ اُس میں
 متضاد عناصر اس طرح جمع ہو گئے تھے کہ انسان
 کی ایک مثالی تصویر نظر آگئی تھی۔

اس عظیم الشان ملک میں، جہاں پینتالیس
 کروڑ انسان بستے ہیں، ایک جواہر لال ایسا تھا،
 جو سب کی زبان سمجھتا تھا، سب کے درد سے
 آشنا تھا۔ جس کے یہاں مذہب، زبان، علاقے،
 عقیدے کا فرق کوئی معنی نہیں رکھتا تھا، جسے
 ہندستان کی پوری تاریخ سے محبت تھی۔ جو سب
 کا تھا اور سب کے لیے تھا۔ ہندستان میں بڑے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	فاتح	फातेह	विशे. विजयी, विजेता
	مدبر	मुदब्बिर	विशे. रणनीतिज्ञ, बुद्धिजीवी
	دانش ور	दानिशवर	विशे. स्कालर, बुद्धिजीवी
	جامع حیات	जामे-हैसियात	विशे. बहुमुखी प्रतिभा
	سرزمین	सर ज़मीन	स्त्रियो. धरती, देश
	به یک وقت	ब यक वक्त	एक समय में
	سورما	सूरमा	विशे. सूरमा, बहादुर
	معمار اعظم	मेमारे आजम	विशे. महान निर्माता
	مورخ	मुवरिख़	विशे. इतिहासकार
	خواب	ख़्वाब	पुरुषो. ख़्वाब, सपना
	مُجاری	पुजारी	पुरुषो. पुजारी
	عمل	अमल	पुरुषो. कर्म
	مرد میدان	मर्दे मैदान	विशे. नायक, मैदान का मर्द, बहादुर
	جسم خاکی	जिस्मे ख़ाकी	पुरुषो. मिट्टी का शरीर
	شعله	शोला	पुरुषो. शोला
	(کی) نذر ہونا	(की) नज़्र होना	अ.क्रि. अर्जित होना
	مختلف	मुख़्तलिफ़	विशे. अलग, विभिन्न
	سمندر	समुन्दर	पुरुषो. समुद्र
	ہوائی جہاز	हवाई जहाज़	पुरुषो. हवाई जहाज़, विमान
	فضا	फ़ज़ा	स्त्रियो. वातावरण
	بکھیرنا	बखेरना	म.क्रि. बिखेरना, फैलाना
	ذّرہ	ज़र्रा	पुरुषो. कण

بڑے فاتح ، مدبّر ، دانش ور ، ادیب اور شاعر
 گذرے ہیں۔ مگر ایسا جامع حیثیات آدمی ہماری
 سرزمین سے کوئی نہیں اٹھا جو بہ یک وقت
 جنگ آزادی کا سُرما اور آزادی کے بعد
 قوم کا معمارِ اعظم ، ادیب ، مؤرخ ، دانش ور ،
 مدبّر ، خوابوں کا پُجاری اور عمل کا مردِ میدان
 ہو ۔

جواہر لال نہرو تو چلے گئے ۔ اُن کا جسم
 خاکی شعلوں کی نذر ہو گیا ۔ اُن کی راکھ بھی آج
 کچھ سنگم میں بہادی جائے گی ، کچھ ہندستان
 کے مختلف دریاؤں میں بہادی جائے گی اور
 اِس طرح سمندر میں پہنچ جائے گی ۔ کچھ ہوائی
 جہاز سے فضا میں بکھیر دی جائے گی تاکہ
 اُس کے ذرے ہندستان کے کھیتوں پر برسیں

क्र.	اردو	देवनागरी	अर्थ
	فصل	फ़स्ल	स्त्रियो. फसल
	بہار	बहार	स्त्रियो. बहार
	وسیلہ	वसीला	पुरुषो. माध्यम, कारण
4	/ یوں... گا / : “यूँ आंखों में बसा रहेगा, याद रहेगा”		
	شخصیت	शख़्सियत	स्त्रियो. व्यक्तित्व
	عظمت	अज़मत	स्त्रियो. बड़ाई, महानता
	گرمی	गर्मी	स्त्रियो. गर्मी
	مزاج	मिज़ाज	पुरुषो. स्वभाव
	نرمی	नर्मी	स्त्रियो. नर्मी, कोमलता
	یاد آنا	याद आना	अक्रि. याद आना
11	/ مگر... گئے / : “मगर जवाहर लाल नेहरु ने हमें क्या नहीं दिया”		
	(کے) متعلق	(के) मुतअल्लिक	पर. (के) बारे में
	بدلے (کے)	(के) बदले में	(के) बदले में
	میں		
	فیاضی	फय्याज़ी	स्त्रियो. उदारता, खुलापन

اور نئی فصل اور نئی بہار کا وسیلہ بنیں۔ اُن کا وہ ہنستا ہوا چہرہ ، یوں آنکھوں میں بسا رہے گا⁴ ، مگر وہ تو نہ ہوں گے ، شخص تو چلا گیا۔ ہاں ، اُس کی شخصیت کی عظمت ، خوابوں کی گرمی ، مزاج کی نرمی یاد آتی رہے گی۔ مگر جواہر لال نہرو ہمیں کیا کچھ نہیں دے گئے¹¹۔ دیکھیے اُنھوں نے اپنے متعلق کیا کہا تھا :

” یہ وہ آدمی تھا جس نے دل و جان سے ہندستان سے اور ہندستان کے عوام سے محبت کی اور اس کے بدلے میں اُنھوں نے بھی اُس پر بڑی مہربانی کی اور بڑی فیاضی سے اُسے اپنی محبت دی ۔“

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	قوت	.कुव्वत	स्त्रियो. .कुव्वत, शक्ति
	يکجا کرنا	यकजा करना	स.क्रि. जमा करना, इकट्ठा करना
	گرد و پیش	गिर्दो पेश	आस पास
	نظر ڈالنا	नज़र डालना	स.क्रि. देखना
	ماحول	माहौल	पुरुषो. वातावरण
	تنقید	तन्कीद	स्त्रियो. आलोचना
	عمر	उम्र	स्त्रियो. उम्र, अवस्था

ایک اور جگہ کہا تھا :

” اِس وقت کام کرنے کی ضرورت ہے‘
 اِس وقت محنت کرنے کی ضرورت ہے۔
 اُن ساری قوتوں کو یک جا کرنے
 کی ضرورت ہے جو قوم میں ہیں۔ ہم
 کیا کر رہے ہیں؟ ہم آگے بڑھ رہے
 ہیں اور ترقی کر رہے ہیں۔

پھر بھی جب میں اپنے گرد و پیش
 نظر ڈالتا ہوں ، تو کام کا ماحول نہیں
 دیکھتا۔ صرف باتیں ، تنقید ، چھوٹی چھوٹی
 ٹولیاں اور ایسی ہی دوسری باتیں
 ہیں۔ اپنی غمز کا خیال کر کے ، مجھے
 تھوڑی سی بے چینی ہوتی ہے ، کیونکہ
 شاید چند سال ہی اور میں جی سکوں‘

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	تہا	तन्हा	विशे. केवल, अकेले
	آرزو	आरजू	स्त्रियो. ख्वाहिश, इच्छा
	خاتمہ	खातिमा	पुरुषो. समापन /
	رہی	रही	स्त्रियो. रही, कूड़ा
	فکر کرنا	फि़क़र करना	स.क्रि. चिंता करना
	انسانیت	इन्सानियत	स्त्रियो. इंसानियत, मानवता
	ٹھکانے لگانا	ठिकाने लगाना	स.क्रि. समाप्त कर देना, मिटा देना
	واقعی	वाकई	क्रि.वि. सचमुच
	ہرگز نہیں	हर्गिज़ नहीं	कभी नहीं, कदापि नहीं

اور میری تنہا آرزو یہ ہے کہ اپنی
زندگی کے خاتمے تک میں زیادہ سے
زیادہ محنت سے کام کروں اور جب
میں اپنا کام ختم کر چکوں تو مجھے رومی
کے ڈھیر پر ڈال دیا جائے۔ جب میں
اپنا کام ختم کر چکوں، تو پھر میرے متعلق
فکر کرنے کی کوئی ضرورت نہیں۔“

یعنی جواہر لال جاتے جاتے ہمیں زندگی کی
وہ کھلی کتاب دے گئے ہیں، جسے ہر شخص پڑھ سکتا
ہے اور جس سے اپنے لیے بہت کچھ لے سکتا ہے۔
انہوں نے اپنے آپ کو ہندوستان کی اور انسانیت
کی خدمت کے لیے نٹا دیا۔ نٹا دیا اور ٹھکانے
لگا دیا۔

کیا جواہر لال نہرو واقعی مر گئے؟ نہیں، ہرگز نہیں۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	جسمانی طور پر	जिस्मानी तौर पर	शारीरिक रूप से
	درمیان	दर्मियान	विशे. बीच में, मध्य
3	کشمیر	कश्मीर	पुरुषो. कश्मीर
4	کاویری	कावेरी	स्त्रियो. दक्षिण भारत की एक नदी
5	آسام	आसाम	पुरुषो. उत्तरपूर्व भारत का एक प्रदेश
6	کاٹیاواڑ	काठियावाड़	पुरुषो. गुजरात में एक स्थान
	چپہ چپہ	चप्पा चप्पा	पुरुषो. चप्पा चप्पा
	آواز	आवाज़	स्त्रियो. आवाज़
	گوںجنا	गूंजना	अ.क्रि. गूंजना
	تقریباً	तक़रीबन	क्रि.वि. लगभग
	موڑ	मोड़	पुरुषो. मोड़
	شریک	शरीक	विशे. सम्मिलित
	اونچا	ऊंचा	विशे. ऊंचा
	جمہوریت	जम्हूरियत	स्त्रियो. लोकतन्त्र
	غیر مذہبی ریاست	गैर मज़हबी रियासत	स्त्रियो. धर्मनिरपेक्ष राज्य
	استحکام	इस्तिहकाम	पुरुषो. स्थिरता
17	سوشلزم	सोशलिज़्म	पुरुषो. समाजवाद
	للاکار	ललकार	स्त्रियो. ललकार, चुनौती

اُن کا جسمِ خاکی ضرور شعلوں کی نذر ہو گیا۔
 وہ جسمانی طور پر ہمارے درمیان نہیں ہیں، مگر
 کشمیر³ سے کاویری⁴ تک اور آسام⁵ سے کاٹھیاواڑ⁶
 تک اِس زمین کے پچّے پچّے پر اُن کے
 قدموں کے نشان ہیں، اِس کی فضا میں
 اُن کی آواز گونج رہی ہے۔ تقریباً پچاس
 برس تک ہندستان کی زندگی کے ہر موڑ میں
 وہ شریک رہے۔ آج ہم جو کچھ ہیں، انھیں
 کی وجہ سے ہیں۔ وہ زندہ ہیں اور زندہ
 رہیں گے۔ ہندستان کو اور اوٹچالے جانے
 کے اُن کے خواب زندہ رہیں گے۔ جمہوریت
 اور غیر مذہبی ریاست کے استحکام کے لیے
 ہماری ہر کوشش ہمیں اُن کی یاد دلائے گی۔
 سوشلزم¹⁷ کی طرف ہر قدم میں اُن کی للکار

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	مشترک	मुश्तरक	विशं. साझा
	تہذیب	तहज़ीब	स्त्रियों. सभ्यता
3	انٹرویو	इंटरव्यू	पुरुषो. साक्षात्कार
	حال میں	हाल में	क्रि.वि. जल्दी ही
	روپ	रूप	पुरुषो. रूप
	نفرت	नफ़रत	स्त्रियो. घृणा

ہم مُنتے رہیں گے۔ مُشترک تہذیب سے
وفا داری کے لیے ہمیں ہر وقت اُن کی مثال
کو سامنے رکھنا ہوگا۔

جواہر لال نے ایک انٹرویو میں ³ حال میں
کہا تھا :

”سچی بات تو یہ ہے کہ میں کسی انسان
کو ناپسند نہیں کرتا۔“

آئیے ہم بھی عہد کریں کہ ہم انسان سے ہر
حال میں ، ہر رنگ میں ، ہر روپ میں اور ہر صورت
میں محبت کریں گے۔ محبت کرنے والے کو محبت
ملتی ہے اور نفرت کرنے والے کو نفرت۔

(آل احمد سترور)

मिर्जा ग़ालिब

महाकवि 'ग़ालिब' का मूलनाम असदुल्लाह खाँ था। वे उर्दू के आखिरी क्लासिकी और पहले आधुनिक कवि थे। वे दो दुनियाओं के बीच खड़े नज़र आते हैं। क्लासिकल फ़ारसी एवं रहस्यवादी दर्शन में प्रशिक्षित होते हुए, वे पाश्चात्य प्रभावों और भारतीय पुनर्जागरण की मूल आत्मा से भी लाभान्वित हुए। अंग्रेज़ी अधिभौतिकवादियों (English Metaphysicals) की तरह उन्होंने विजातीय भावों को हिंसापूर्वक एक दूसरे में गुम्फित किया। वे उर्दू के अनगिनत कवियों के ऊपर एक 'विजेता' की तरह वर्चस्व कायम किये हुए हैं, जैसाकि उनके कवि-नाम 'ग़ालिब' से प्रकट होता है।

अपनी आरंभिक युवावस्था के संक्षिप्त दौर को छोड़कर ग़ालिब का जीवन सतत विपदा, यातना और दुःख का पर्याय रहा है। उनका संबंध तुर्कों के एक मशहूर शाही खानदान 'सलजूक' से था, और उनके पूर्वज मुग़लों व ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेनाओं में महत्वपूर्ण पदों पर तैनात रहे थे। उनका जन्म 1797 ई. में आगरा में हुआ। जब ग़ालिब की आयु पाँच वर्ष से भी कम थी, उनके पिता अब्दुल्ला बेग़ खाँ एक भिड़ंत में मारे गये। पिता की मृत्यु के बाद उनके चाचा नसरुल्लाह बेग़ खाँ ने उनकी देख-रेख की, लेकिन जब ग़ालिब नौ वर्ष के रहे होंगे, चाचा की भी मृत्यु हो गयी। अतएव ग़ालिब अपनी अति संपन्न ननिहाल में जाकर रहे। ननिहाल वालों के मन में ग़ालिब के प्रति अतिशय अनुराग था। फलतः अपव्ययिता की आदतें और युवावस्था का अतिवादी आचरण आगे चल कर ग़ालिब की बहुत-सी मुसीबतों का कारण बने। उन्होंने व्यवस्थित रूप से कोई शिक्षा प्राप्त नहीं की। उन्होंने मुख्यतः जो कुछ नया सीखा, अपने निजी प्रयासों और अपनी असाधारण समझ से सीखा। तेरह वर्ष की अवस्था में दिल्ली के एक प्रतिष्ठित परिवार में उनका विवाह हुआ, और 1812 ई. में स्थायी रूप से दिल्ली आकर बस गये।

दुर्भाग्य ने यहाँ भी उनका पीछा नहीं छोड़ा। उनके पास आय का कोई नियमित ज़रिया नहीं था और मदद के लिए संरक्षकों व मित्रों का मुँह जोहते थे।

वे उधार के पैसे पर गुज़र-बसर करते थे, जिससे और ज़्यादा दुश्वारियाँ पैदा होती थीं। उनके पास निजी आवास भी नहीं रहा। उनका घरेलू जीवन खुशियों से कोसों दूर था। ग़ालिब और उनकी पत्नी उमराव बेगम के स्वभाव में त्रासद रूप से कोई मेल नहीं था। इस वैवाहिक संबंध से सात बच्चों ने जन्म लिया, लेकिन शैशव में ही उनकी मृत्यु हो गयी। तदुपरांत ग़ालिब ने अपनी पत्नी के भतीजे जैनुल आबिदीन खाँ 'आरिफ़' को गोद ले लिया, वह भी भरी जवानी में चल बसा। कर्ज़ न चुकाने को लेकर एक बार उन्हें अदालत का सामना भी करना पड़ा। उस समय उन्हें कर्ज़दाताओं को कई हजार रुपये देने थे। पराकाष्ठा यह है कि 1847 ई. में जुए के प्रकरण में उन्हें हिरासत में लिया गया और तीन महीने की कैद हुई।

उनकी व्यथा का एक अन्य स्रोत पेंशन का वह हिस्सा था, जिसे अपने मृत चाचा के परिवार के एक सदस्य होने के नाते पाने के वे हक़दार थे। इस यकीन के साथ कि उन्हें अपना उचित हिस्सा नहीं मिल रहा है, वे 1826 ई. में कलकत्ता रवाना हुए, और 1828 ई. में वहाँ पहुँचकर अंग्रेज़ सरकार के सामने अपना दावा पेश किया। यह एक लम्बी क़ानूनी लड़ाई थी जिसका फैसला 1836 ई. में उनके खिलाफ़ हुआ। निर्भीक होकर उन्होंने गवर्नर जनरल, लंदन में कोर्ट ऑफ़ डायरेक्टर्स और मलका विक्टोरिया के सामने अपीलें दायर कीं, लेकिन एक के बाद एक सब खारिज कर दी गयीं। यह क़ानूनी मुक़दमा 1828 से 1844 ई. के बीच चला और इसने ग़ालिब को प्रायः एक बर्बाद आदमी बना दिया।

अपनी विपत्ति में और ज़्यादा कष्ट को आमंत्रित करते हुए, उन्होंने कलकत्ता में फ़ारसी प्रयोगों की जटिलताओं को लेकर मिर्ज़ा क़तील (मृत्यु 1817) के समर्थकों से झगड़ा मोल ले लिया। कई वर्षों बाद यह विवाद फिर उभरा, जब ग़ालिब ने प्रसिद्ध फ़ारसी शब्दकोश 'क़ाते' बुरहान (1861) नाम से अपनी समीक्षा प्रकाशित की। दोनों ओर से मौखिक एवं लिखित रूप में परस्पर प्रहार होते रहे, ग़ालिब ने एक विरोधी के खिलाफ़ मानहानि का मुक़दमा ठोक दिया, लेकिन अंत में जाकर उन्हें सुलह करना पड़ी और अपना दावा वापस लेना पड़ा।

शायद उन्हें दिल्ली और लखनऊ के दरबारों से वह सम्मानजनक स्वीकृति नहीं मिली जिसके कि वे पात्र थे। अवध के शासक नसीरुद्दीन हैदर (1827-1837) ने फिर भी उन्हें पाँच हजार रुपये का इनाम स्वीकृत किया, लेकिन वह राशि उन तक कभी नहीं पहुँची और वे दरबार के कर्मचारियों द्वारा

ठगे गये। बाद में जब 1847 में वाजिद अली शाह लखनऊ के तख्त पर बैठे, उन्होंने ग़ालिब को मासिक वृत्ति का अनुदान दिया, लेकिन यह भी एक अल्पकालिक शुभांश साबित हुई। 1856 ई. में अवध राज्य पर अंग्रेजों का कब्ज़ा हो गया और शासक को अपदस्थ कर दिया गया। दिल्ली दरबार ने ग़ालिब को 1850 ई. में सम्मानित किया, जब उनकी उम्र काफी हो चुकी थी। बहादुर शाह ज़फ़र (1837-1857) ने उन्हें एक उपाधि से सम्मानित किया और उन्हें शाही इतिहास-लेखक के पद पर नियुक्त किया। 1854 ई. में अपने प्रतिद्वंद्वी 'जौक' की मृत्यु के बाद उन्हें राजकवि (मलिकुशुअरा) के रूप में पदोन्नत किया गया। लेकिन मुश्किल से तीन वर्ष ही बीते होंगे, विद्रोह छिड़ गया, और ग़ालिब के तमाम सपने चूर-चूर हो गये। वे 1857 ई. के दुःखद घटना-चक्र और अत्याचारों के प्रत्यक्षदर्शी थे।

दिल्ली के पतन के बाद निष्क्रिय और शक्तिविहीन मुग़ल दरबार से संबंधों के कारण उनकी पेंशन बंद कर दी गयी। उन्होंने हरचंद कोशिश की, यहाँ तक कि 'दस्तंबू', जिसमें उन्होंने उपद्रवी लोगों की मज़म्मत की थी, की मुद्रित प्रतियाँ पेश कीं, लेकिन कुछ हासिल न हुआ। इस दौरान उनके अनेक मित्र और सगे-संबंधी मारे गये, और वे अत्यंत असहाय स्थिति में पहुँच गये। उनके छोटे भाई मिर्ज़ा यूसुफ़ बग़ैर तीमारदारी के मर गये और उनके कफ़न व दफ़न का इंतजाम भी न किया जा सका। ग़ालिब ने ब्रिटिश हुकमरानों और मलका विक्टोरिया की शान में क़सीदों पर क़सीदे लिखे, अपील के बाद अपील की, लेकिन कई वर्षों की पीड़ादायक अवमाननाओं के बाद और नवाब रामपुर की सिफ़ारिश करने पर बड़ी मुश्किल से उनकी पेंशन बहाल हुई। हालाँकि नवाब रामपुर की ओर से उन्हें नियमित वृत्ति मिलती थी लेकिन वह उनकी ज़रूरतों के लिहाज़ से कम थी। ग़ालिब का अंत बहुत कारुणिक था। एक लम्बी बीमारी के बाद 1869 ई. में उनका निधन हुआ।

अपने वंश और स्वभाव से ग़ालिब एक अभिजात थे। वे अपने आत्मसम्मान और स्वातंत्र्य-बोध को एक अतिवाद तक ले गये, जबकि वे एक सहृदय, स्नेही, शालीन, विनम्र, उदार और दूसरों का ध्यान रखने वाले व्यक्ति थे। उनका एक बड़ा मित्र-वर्ग था, जिससे उन्हें सुखद आत्मीयता मिलती थी। फिर भी वे अपने विरोधियों के प्रति बहुत निष्ठुर थे। एक बार नाराज़ हुए तो फिर उन्हें क्षमा नहीं करते थे। वे जड़वाद और असहिष्णुता से एक दम मुक्त थे। धर्म के निषेधों एवं धार्मिक अलगाव की उनके मन पर कोई छाया नहीं थी। अपनी

स्वभावगत उदारता के रहते हुए उनके आचरण में स्पष्टवादिता और निष्कपटता लक्षित होती थी। वे कोई संन्यासी नहीं थे, और जीवन की सभी सुंदर चीज़ों से प्रेम करते थे — जैसे शराब, स्त्री, शतरंज, आम और चुनौदा मित्र-मंडली, आदि। उन्हें अपनी वंश-परंपरा पर उचित ही गर्व था, जिस समय कि कुलीन घराने में जन्म लेने का एक मतलब होता था। लेकिन वे एक सीमित साधनों वाले व्यक्ति थे और पूर्वजों के ठाट-बाट का सा जीवन बिताना चाहते थे। यहीं से उनकी अधिकांश कठिनाइयाँ शुरू होती हैं। वे सौंदर्य, शालीनता और सुरुचि से संपन्न एक रंगारंग दुनिया के लिए लालायित थे, जो कि वहाँ नहीं थी। एक प्रतिभाशाली कवि होने के नाते उन्हें यह अपमानजनक लगता था कि दरबार में उचित शिष्टाचार के साथ उनकी सराहना नहीं की जाती, जहाँ कम प्रतिभा वाले कवि राजकीय संरक्षण का सुख भोगते थे जोकि उनके हिस्से में आना चाहिए था। लेकिन अपने गहरे दुःख के क्षणों में भी उनकी फ़ाक़ामस्ती में कमी नहीं आयी। उनके जीवन का त्रासद अंधकार उनकी मस्ती और हँसी-ठहाकों की धूप से आलोकित हो उठता था। उनके स्वच्छंद स्वभाव के कारण कोई भी उनके ठहाकों से न बच सका। वे अपने दुखों पर खुद हँस सकते थे।

आगे की इकाई में ग़ालिब के कुछ जीवन-संदर्भ हैं, जिनमें उनके व्यक्तित्व की एक निष्पक्ष छवि प्रस्तुत की गयी है। ये अंश अल्लाफ़ हुसैन हाली कृत 'यादगार-ए-ग़ालिब' (1897 ई.) से लिये गये हैं। (हाली (मृत्यु 1914) को ग़ालिब की पहली साहित्यिक जीवनी लिखने का श्रेय जाता है। यह कहा जा सकता है कि इस जीवनी ने ग़ालिब की मृत्यु के लगभग तीन दशक बाद उनके गहरे अध्ययन व प्रशंसा का सिलसिला शुरू किया। ग़ालिब के शागिर्द हाली की गणना पहले क्रम में आने वाले कवि-आलोचक के रूप में होती है।)

ग़ालिब ने उर्दू से ज़्यादा फ़ारसी में लिखा। वे अपने फ़ारसी गद्य एवं काव्य को उर्दू से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण समझते थे, और वास्तव में, उनकी यह कामना थी कि उन्हें फ़ारसी कृतित्व के आधार पर जाँचा-परखा जाये। हालाँकि बजा तौर पर उन्हें भारत के अंतिम क्लासिकी फ़ारसी शाइर के रूप में स्वीकार किया गया, लेकिन उन्हें उर्दू कृतित्व के लिए ज़्यादा याद और पसंद किया जाता है। वे समय से पहले परिपक्व हो चुके थे और महज़ दस वर्ष की अवस्था में ही उन्होंने शेर कहना शुरू कर दिया था। शुरू में कुछ समय तक फ़ारसी शाइरों, विशेषतः 'बेदिल' (मृत्यु 1720) का अतिशय अनुकरण बहुत भाता था, और उन्होंने अत्यंत फ़ारसीनिष्ठ एवं गूढ़ किस्म की शाइरी की। उनके समकालीनों ने इस शाइरी की

आलोचना की और पैरोडियाँ बनायीं। कुछ मित्रों की सलाह पर पच्चीस वर्ष की आयु में उन्होंने अच्छे आस्वाद से रहित अपनी अधिकांश शास्त्रीय कविता को खारिज कर दिया। एक बार अपनी शैली को खोज लेने के बाद उन्होंने बिना किसी आयास के बहुत सरल और परिमार्जित भाषा में शाइरी की। उनके चयन किये 'दीवान' में, जिस पर उनकी ख्याति टिकी हुई है, मुश्किल से 1900 पंक्तियाँ हैं। प्रसिद्ध एशियाई चित्रकार अब्दुर्रहमान चुगताई ने इस दीवान को चित्रित किया है। रचनाकाल-क्रम के अनुसार व्यवस्थित और संपूर्ण दीवान, जिसमें निरस्त की गयी शाइरी भी शामिल है, इम्तियाज़ अली अर्शी (अलीगढ़ 1958 ई.) द्वारा संपादित किया गया है। (बाद में कालीदास गुप्त रज़ा ने बम्बई से ग़ालिब का सम्पूर्ण दीवान शायी किया जो तक़रीबन चार हज़ार अश'अर पर मुश्तमिल है)।

ग़ालिब एक जटिल कवि हैं। उनकी दुनिया इतनी व्यापक और अंतर्विरोधपूर्ण है कि उसे किसी एक श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। उनकी ग़ज़लें केवल भावों की तीव्रता के कारण ही अद्वितीय नहीं हैं बल्कि उनके एकदम सुगठित रूप, उनकी गहरी वेदना, और दुनिया की सुंदरता के प्रति गहरी आसक्ति के कारण भी बेजोड़ हैं। ग़ालिब ने ज़िंदगी के हर रंग को शेरों में ढाला। उनके जैसी भावों की व्यापकता और गहराई किसी अन्य उर्दू शाइर के यहाँ नहीं रही। अपने नज़रिए से आभिजात्य होते हुए, उन्होंने अभिव्यक्ति के अतिसामान्य बहु प्रयुक्त रूपों और धिसे-पिटे विचारों से बचाव किया और मन पर तुरंत प्रभाव छोड़ने वाली मौलिकता एवं सुंदरता के साथ स्वयं को व्यक्त किया। कविता उनके लिए सौंदर्य की लयात्मक सृष्टि थी। उन्होंने अपने ऐंद्रिय सुख को कभी रहस्य नहीं बनाया और प्रायः उन्होंने अपनी 'अतृप्त इच्छाओं और न किये गये गुनाहों' का जिक्र किया है। उनका प्रेम आदर्शवाद और आत्मसमर्पण के भाव से बचता है और ऐंद्रिय प्रेम को पूरा महत्त्व देता है।

ग़ालिब दुनिया के प्रति एकदम ताज़ा दृष्टिकोण को लेकर भी मूल्यवान हैं। उनके मन में अस्तित्व की एकता के प्रति आवेशपूर्ण प्रशंसा का भाव विद्यमान था, तो भी उन्होंने विश्वास और आस्था से संबंधित आधारभूत चीज़ों के आगे प्रश्नचिन्ह लगाया, और हर्ष एवं विषाद तथा जीवन एवं मृत्यु पर गहन चिंतन किया। वे केवल इस अर्थ में रहस्यवादी हैं कि उनके पास जाँच-पड़ताल करने वाला मन था, जो इस धरती पर मनुष्य की नियति से संबंधित परेशान करने वाले प्रश्नों से आपूरित था। जीवनविषयक उनके निष्कर्ष निजी अन्वेषण का

सुपरिणाम हैं, और प्रायः ताज़ा और गंभीर हैं। सामान्यतया वे उदास और विषादग्रस्त मनःस्थिति को उद्घाटित करते हैं, तो भी उसमें 'जीवन के प्रति आसक्ति और अंगूरी शराब व उफनते हुए प्याले के प्रति लगाव' की मौजूदगी रहती है। मानवीय इच्छा की संपूर्ण स्वतंत्रता को लेकर उनका विश्वास डिंग चुका था, लेकिन उन्होंने जीवन के दोनों पार्श्वों को करीब से देखा था। उनका मोहभंग किसी कटुता से नहीं, बल्कि यथार्थवाद से जन्मा था।

ग़ालिब की कविता में लोगों की रुचि बीसवीं शताब्दी में तेज़ी के साथ अनवरत बढ़ती गयी है। मौजूदा पीढ़ी के रचनाकारों पर उनका व्यापक और गहरा प्रभाव रहा है। वे ग़ालिब की भावनात्मक उद्दिग्नता, प्रश्नाकुलता, मनोवैज्ञानिक जाँच-पड़ताल, गूढ़ सामासिकता, अनूठी बिम्बसृष्टि और शायद पारंपरिक काव्य-भाषा का मज़ाक़ उड़ाने की चेष्टा के कारण उनके प्रति आकृष्ट हैं। आज के लेखक ग़ालिब में एक ऐसे व्यक्ति को पाते हैं, जो उनकी ही तरह, आध्यात्मिक केंद्र की ज़रूरत महसूस करते हुए बुद्धि को पोसता है।

ग़ालिब उर्दू में अपने पत्रों के लिए भी जाने जाते हैं, जो 1849 ई. या इससे कुछ पहले लिखने शुरू किये थे। उनके चार पत्र-संग्रह उपलब्ध हैं और विद्वान् लोगों की खोज जारी है, और पत्रों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। ग़ालिब के पत्रों को उर्दू ज़बान के गौरव के रूप में मान्यता प्राप्त है, और ये पत्र पश्चात्तुर्वर्ती उर्दू गद्य के लिए एक मानक की हैसियत रखते हैं। ग़ालिब से पूर्व उर्दू में पत्रलेखन फ़ारसी मॉडल पर किया जाता था। ग़ालिब ने सामंती विनम्रता से युक्त कृत्रिम भाषा से पीछा छुड़ाया और संप्रेषण के आनंद को बनाये रखने के लिए विस्मित कर देने वाली सरल, आत्मीय एवं अनौपचारिक शैली में पत्र लिखे। किसी और ने ऐसी शानदार उर्दू नहीं लिखी। ग़ालिब की प्रतिभा के विनोदशील रुजूहान के कारण उनके पत्रों का हर पृष्ठ कभी न रोक पाने वाली कशिश और दिलचस्पी से लबरेज़ है।

आगे आने वाली इकाई में 'उर्दू-ए-मुअल्ला' (1869 ई.) संग्रह से लिये गये ग़ालिब के दो पत्र प्रस्तुत हैं। पहला पत्र एक मित्र को उनकी पत्नी के निधन पर 1860 ई. में लिखा गया था। दूसरा पत्र ग़ालिब के मानवतावाद और सद्भाव को प्रदर्शित करता है। यह पत्र 1865 ई. में, जबकि महज़ चार वर्ष बाद अंतहीन वेदना और दरिद्रता की निष्ठुर छाया में वह इस दुनिया से गुज़र जाने वाले थे।

UNIT XV

मिर्जा ग़ालिब

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	غدر	ग़दर	पुरुषो.
2	कर्नल बर्न / کرنل برن :	“कर्नल बर्न, (हेनरी पेल्लहम), तत्कालीन दिल्ली के सैनिक गवर्नर।	
	کلاه پناخ	कुलाहे पपाख	स्त्रियों. एक प्रकार की लम्बे झब्बे वाली तुर्की टोपी
	وضع	वज़अ	स्त्रियों.
5	دل	वेल	
	مسلمان	मुसलमान	पुरुषो.
	سور	सुअर	पुरुषो.

مرزا غالب

سنا ہے کہ غدر کے بعد جب مرزا غالب
 کرنل برن^۲ کے سامنے گئے تو اُس وقت کلاہ
 پیاخ اُن کے سر پر تھی۔ اُنھوں نے مرزا کی
 وضع دیکھ کر پوچھا کہ ول^۳ تم مسلمان؟
 مرزا نے کہا: ”آدھا“

کرنل نے کہا: ”اس کا کیا مطلب؟“
 مرزا نے کہا: ”شراب پیتا ہوں، سوہ نہیں
 کھاتا۔“

کرنل یہ سن کر ہنسنے لگا۔ پھر مرزا نے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	وزیر ہند چیفی ملکہ معظمہ	वज़ीरे हिन्द चिट्ठी मल्कए मुअज़्ज़मा	पुरुषो. हिन्दुस्तान के मंत्री स्त्रियो. पत्र स्त्रियो. महारानी विक्टोरिया (1819-1901)
	قصیدہ سرکار	क़सीदा सरकार	पुरुषो. यशगान स्त्रियो. सरकार
6	/پہاڑی/ पहाड़ी : यहां दिल्ली के बाहर रिज़ का वह स्थान जहां अंग्रेज़ी सेना डेरा डाले थी जब तक कि शहर पर कब्ज़ा नहीं कर लिया		
	کہار	कहार	पुरुषो. डोली उठाने वाला
	افسر	अफ़सर	पुरुषो. अफ़सर, अधिकारी
	عمدہ	उम्दा	विशे. सर्वश्रेष्ठ
	تقاضا کرنا	तक़ाज़ा करना	स.क्रि. मांगना

وزیر ہند کی چٹھی دکھائی جو کہ ملکہ معظمہ کے
 قصیدے کے جواب میں آئی تھی۔ کرنل نے
 کہا: ”تم سرکار کی فتح کے بعد پہاڑی⁶ پر کیوں
 نہ حاضر ہوئے؟“

مرزا نے کہا: ”میں چار کہاڑوں کا افسر تھا‘
 وہ چاروں مجھے چھوڑ کر بھاگ گئے، میں کیوں کر
 حاضر ہوتا؟“

کرنل نے نہایت مہربانی سے مرزا اور اُن
 کے تمام ساتھیوں کو رخصت کر دیا۔

آم مرزا غالب کو نہایت پسند تھا۔ آموں
 کی فصل میں اُن کے دوست دُور دُور سے اُن
 کے لیے عمدہ عمدہ آم بھیجتے تھے اور وہ خود
 اپنے بعض دوستوں نے تقاضا کر کے آم

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	مڱوانا	मंगवाना	स.क्रि. मंगवाना
2	حکیم رضی الدین خاں		हकीम रज़ीउद्दीन ख़ान
	برآمدہ	बरआमदा	पुरुषो. बरामदा
	(کی) بُرائی کرنا	(की) बुराई करना	स.क्रि. बुराई करना
	شراب خور	शराबख़ोर	विशे. शराबी, शराब पीने वाला
	دُعا	दुआ	स्त्रियो. प्रार्थना
	قبول ہونا	कबूल होना	अ.क्रि. स्वीकार होना

منگواتے تھے۔

حکیم رضی الدین خاں² جو مرزا کے گہرے دوست تھے، اُن کو آم نہیں بھاتے تھے۔ ایک دن وہ مرزا کے مکان پر برآمدے میں بیٹھے تھے اور مرزا بھی وہیں موجود تھے۔ ایک گدھے والا اپنے گدھے لیے ہوئے گلی سے گذرا۔ آم کے پھلکے پڑے تھے۔ گدھے نے سونگھ کر چھوڑ دیا۔ حکیم صاحب نے کہا: "دیکھیے آم ایسی چیز ہے جسے گدھا بھی نہیں کھاتا۔"

مرزا نے کہا: "بے شک، گدھا نہیں کھاتا۔"

شراب کے متعلق مرزا غالب کی باتیں مشہور ہیں۔ ایک شخص نے اُن کے سامنے شراب کی بُرائی کی اور کہا کہ شراب خور کی دُعا قبول نہیں

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
1	پنشن	पेंशन	स्त्रियो.
	شریک ہونا	शरीक होना	अ.क्रि. सम्मिलित होना
	ذکر چلنا	ज़िक्र चलना	अ.क्रि. बात करना, वर्णन करना
	کافر	काफिर	विशे. नास्तिक
5	/ تمام عمر میں ... کافر / : “अगर मैंने सारी उम्र में एक दिन शराब न पी हो तो नास्तिक”		
	نماز پڑھنا	नमाज़ पढ़ना	स.क्रि. नमाज़ पढ़ना
	باغی	बागी	विशं. बगावत करने वाला, विद्रोही
	شمار کرنا	शुमार करना	स.क्रि. गिनना

ہوتی۔ مرزا نے کہا: ”بھائی جس کو شراب میسر ہے، اُس کو اور کیا چاہیے، جس کے لیے دُعا مانگے۔“

غدر کے بعد جب کہ پنشن¹ بند تھی اور دربار میں شریک ہونے کی اجازت نہ ہوئی تھی، پنڈت موتی لال مرزا صاحب سے ملنے آئے۔ کچھ پنشن کا ذکر چلا۔ مرزا صاحب نے کہا: ”تمام عُمُر میں ایک دن شراب نہ پی ہو تو کافر اور ایک دفعہ نماز پڑھی ہو تو گنہ گار۔ پھر نہیں جانتا کہ سرکار نے کس طرح مجھے باغی مسلمانوں میں شمار کیا۔“

ایک دفعہ مرزا مکان بدلنا چاہتے تھے۔ ایک مکان آپ خود دیکھ کر آئے۔ اُس کا

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	دایوان خانہ	दीवान खाना	पुरुषो. बैठक, घर का वह स्थान जहां मर्दों की बैठक होती है
	محل سرا	महल सरा	स्त्रियो. घर में वह जगह जहां केवल औरतें और घर के लोग बैठ सकें
	بی بی	बीबी	स्त्रियो. पत्नी
	بلا	बला	स्त्रियो. भूत-प्रेत
5	/ اس میں ... بتاتے ہیں / : “लोग बताते हैं कि वह घर भूतहा है”		
6	/ آپ سے بڑھ کر / : “आपसे बढ़कर, आपसे ज़्यादा”		
	مذکر	मुज़क्कर	विशे. पुलिंग
	مونث	मुअन्नस	विशे. स्त्रिलिंग
	حضرت	हज़रत	विशे. हज़रत, जनाब, मान्यवर
	مرد	मर्द	पुरुषो. मर्द

دیوان خانہ تو پسند آگیا ، مگر محل سرا خود نہ دیکھ سکے۔ گھر پر آکر اُس کے دیکھنے کے لیے بی بی کو بھیجا۔ وہ دیکھ کر آئیں تو اُن سے پسند اور ناپسند کا حال پوچھا۔ اُنھوں نے کہا : ”اُس میں تو لوگ بلا بتلاتے ہیں۔“⁵

مرزا نے کہا : ”کیا دُنیا میں آپ سے بھی بڑھ کر کوئی بلا ہے ؟“

دہلی میں رتھ کو بعض مُذکر اور بعض مُؤنث بولتے ہیں۔ کسی نے مرزا صاحب سے پوچھا : ”حضرت ! رتھ مُؤنث ہے یا مُذکر ؟“

آپ نے کہا : ”بھئی ! جب رتھ میں عورتیں بیٹھی ہوں تو مُؤنث کہو اور جب مزد بیٹھیں تو مُذکر سمجھو۔“

- | क्र. | उर्दू | देवनागरी | अर्थ |
|------|--|--|---|
| | وبا | वबा | स्त्रियो. बिमारी का प्रकोप, जैसे प्लेग, हैजा |
| | بھئی | भई | पुरुषो. भाई, भाई का संक्षेप
एवं
स्त्रियो. |
| | بڑھیا | बुढ़िया | स्त्रियो. बुढ़िया, बूढ़ी औरत |
| 4 | تف براس وبا | एक फ़ारसी मुहावरा / “ऐसे प्रकोप पर शर्म” | |
| 5 | 1277 हि. (हि. पैगम्बर मुहम्मद के मक्का से मदीना प्रस्थान की तारीख़ से हिज्री कैलेंडर का आरम्भ होता है) | | |
| 6 | تاریخ کہنا / | “दो मिसरों या लाइनों में उस वर्ष विशेष की या किसी खास घटना की तारीख़ कहना, मिसरे में प्रयुक्त अक्षरों के मूल्यों की गणना अबजद (इस यूनिट का अन्तिम नोट देखें) के हिसाब से की जाती है। तारीख़/इतिहास, दिनांक | |
| 7 | غالب مر د / | “ग़ालिब मर गया” ह शब्दबंध 1277 हिजरी (तदनुसार 1860 ई.) को सूचित करता है जिसे इस प्रकार निकाला जायेगा :- | |

$$\begin{array}{rcl}
 \text{غ} & = & 1000 \\
 \text{ا} & = & 1 \\
 \text{ل} & = & 30 \\
 \text{ب} & = & 2 \\
 \hline
 & & 1033
 \end{array}
 \quad + \quad
 \begin{array}{rcl}
 \text{م} & = & 40 \\
 \text{ر} & = & 200 \\
 \text{و} & = & 4 \\
 \hline
 & & 244
 \end{array}
 = 1277$$

ما دہ	मादा	पुरुषो.	मूल तत्त्व
غلط	ग़लत	विशे.	ग़लत
انشاء اللہ	इन्शाअल्लाह		अल्लाह ने चाहा तो
ثابت ہونا	साबित होना	अ.क्रि.	सिद्ध होना

ایک مرتبہ شہر میں سخت وبا پھیلی۔ میر ہمدی خین
مجرّوح نے لکھا :

”حضرت ! وبا شہر سے گئی یا ابھی تک موجود
ہے ؟“

مرزا نے جواب دیا : ”بھئی کیسی وبا ؛ جب
ایک ستر برس کے بوڑھے اور ایک ستر برس
کی بڑھیا کو نہ مار سکی تو تُو تَف بریں وبا !“

۱۲۷۷ء میں اُنھوں نے اپنے مرنے کی تاریخ⁵
کہی کہ ”غالب مُرد“۔ اس سے پہلے کئی مادے غلط⁶
ہو چکے تھے۔ منشی جواہر سنگھ جوہر سے اُن کے
خاص تعلّقات تھے۔ اُن سے مرزا صاحب نے
اس مادے کا ذکر کیا۔ اُنھوں نے کہا : ”حضرت !
انشاء اللہ یہ مادہ بھی غلط ثابت ہوگا۔“

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	فال	फ़ाल	स्त्रियो. शगुन
2	منہ سے نکالنا /	“कहना”	
	سر پھوڑना	सर फोड़ना	स.क्रि. सिर फोड़ना

मिर्जा ग़ालिब के खूतूत

मिर्जा हातिम अली बेग मेहर के नाम

4	رنگ و بو /	“रंग व गंध की दुनिया”	
	ابتدا	इब्तिदा	स्त्रियो. शुरू, आरम्भ
	شباب	शबाब	पुरुषो. जवानी
	مرشد کامل	मुशिदि कामिल	सिद्ध आध्यात्मिक गुरु; यहाँ पर /ए/ (इज़ाफ़त) विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है।
	نصیحت	नसीहत	स्त्रियो. उपदेश
	زهد و ورع	ज़ह्द व वरा	पवित्रता व परहेज़गारी
	مزے اڑانا	मज़े उड़ाना	स.क्रि. आनन्द उठाना
	مصری	मिस्री	स्त्रियो. मिस्री

مرزا نے کہا: ”دیکھو صاحب! تم ایسی فال
منہ سے نہ نکالو۔ اگر یہ مادہ ٹھیک نہ نکلا تو میں
سر پھوڑ کر مر جاؤں گا۔“

(حالی: یادگار غالب)

مرزا غالب کے خطوط

مرزا حاتم علی بیگ قہر کے نام

مرزا صاحب! ہم کو یہ باتیں پسند نہیں۔ پینسٹ^(۶۵)
برس کی عمر ہے۔ پچاس^۴ برس عالم رنگ و بو کی
سیر کی۔ ابتدائے شباب میں ایک مرشدِ کابل نے
یہ نصیحت کی تھی کہ ہم کو زہد و ورع منظور نہیں۔
پیو، کھاؤ، مزے اڑاؤ۔ مگر یہ یاد رہے کہ مصری

- क्र. उर्दू देवनागरी अर्थ
- 1 /مگر یہ بات ... نہ بنو/ : “मगर याद रहे मिस्री के ... बनो शहद की मक्खी न बनो”, (शहद की मक्खी डंक मारती है)
- 3 /کسی کے ... نہ مرے/ : “किसी के मरने का वह दुख करे जो स्वयं न मरे।”
- 6 /کیسی ... مرثیہ خوانی/ : “कैसा रोना-धोना, कैसा शोक”।
- 10 /اور اگر ... جان سہی/ : “और अगर अपनी गिरफ्तारी से खुश हो तो चुन्ना जान न सही मुन्ना जान।”
- 21 /ہے ہے/ : “दुख व्यक्त करने का एक ढंग”
- | | | | |
|-----------------|-------------------|------------|-------------------------|
| بہشت | बहिश्त | स्त्रियों. | स्वर्ग |
| تصور کرنا | तसव्वुर करना | स.क्रि. | कल्पना करना, सोचना |
| مغفرت ہونا | मग़िफ़रत होना | अ.क्रि. | क्षमादान (ईश्वर द्वारा) |
| قصر | क़स्र | पुरुषो. | महल |
| حور | हूर | स्त्रियों. | परी |
| اقامت جاودانی | अक़ामते जाविदानी | | स्थायी निवास |
| نیک بخت | नेकबख़्त | विशे. | सौभाग्यशाली |
| زندگانی | ज़िन्दगानी | स्त्रियों. | जीवन, ज़िंदगी |
| جی گھبرانا | जी घबराना | अ.क्रि. | जी घबराना |
| کایہ منہ کو آنا | कलेजा मुंह को आना | | दम घुटना |
| اجیران ہونا | अजीरान होना | अ.क्रि. | परेशान होना |
| طبیعت گھبرانا | तबियत घबराना | अ.क्रि. | तबियत घबराना |
| زمر دیں | जुमुरूदीं | विशे. | पन्ना, हरा रंग |
| کاغ | काख़ | पुरुषो. | महल |

کی مٹھی بنو ، شہد کی مٹھی نہ بنو¹۔ سو میرا اس
 نصیحت پر عمل رہا ہے۔ کسی کے مرنے کا وہ
 غم کرے جو آپ نہ مرے³۔ کیسی اشک فشانی
 کہاں کی مرثیہ خوانی⁶؟ آزادی کا شکر بجا لاؤ ،
 غم نہ کھاؤ۔ اور اگر ایسے ہی اپنی گرفتاری
 سے خوش ہو تو پُچھا جان نہ سہی¹⁰ مٹا جان سہی۔
 میں جب بہشت کا تصور کرتا ہوں اور
 سوچتا ہوں کہ اگر مغفرت ہوگئی اور ایک
 قضر ملا اور ایک حور ملی ، اقامتِ جاودانی
 ہے اور اُسی ایک نیک بخت کے ساتھ
 زندگانی ہے۔ اس تصور سے جی گھبراتا
 ہے اور کلیجہ منہ کو آتا ہے۔ ہے ہے²¹
 وہ حور اجپرن ہو جائے گی ! طبیعت
 کیوں نہ گھبرائے گی ؟ وہی زمردیں کا خ

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	طوبی	तूबा	पुरुषो. स्वर्ग का वृक्ष
	شاخ	शाख	स्त्रियो. शाखा
3	/وہی طوبی کی ایک شاخ/ : “वही जन्नत के पेड़ की एक शाखा”		
	چشم بد دور	चश्मे बददूर	बुरी नज़र से दूर रह (एक फ़ारसी कहावत)
	ہوش میں آنا	होश में आना	होश में आना
	دل لگانا	दिल लगाना	स.कि. मुहब्बत करना

भिर्जा अलाउद्दीन अहमद खां के नाम

ایمان	ईमान	पुरुषो.	आस्था, धर्म
(کی) قسم	(की) कसम	स्त्रियो.	(की) कसम
نظم	नज़्म	स्त्रियो.	कविता
داد	दाद	स्त्रियो.	प्रशंसा
باندازہ بایست	बा अंदाजे बाईस्त		जैसा कि इसे होना चाहिए (फ़ारसी कहावत)
قلندری	कलन्दरी	स्त्रियो.	बेपरवाई
آزادگی	आज़ादगी	स्त्रियो.	आज़ादी, स्वतंत्रता
ایثار	ईसार	पुरुषो.	त्याग
کرم	करम	पुरुषो.	दया
دوای	दवाई	पुरुषो.	इच्छाएं
		बहु.	
خالق	ख़ालिक	पुरुषो.	निर्माता, ईश्वर
18	/بہ قدر ہزار ایک/ : “हज़ार में एक”		
19	/ظہور میں آنا/ : “प्रगट होना”		
طاقت جسمانی	ताक़ते जिस्मानी		शारीरिक शक्ति
عطر نجی	शतरंजी	स्त्रियो.	शतरंजी
ٹین	टीन	पुरुषो.	टिन

اور وہی طوبیٰ کی ایک شاخ³ ! چشم بد
 دُور ! وہی ایک حور ! بھائی ہوش میں
 آؤ ، کہیں اور دل لگاؤ !

مرزا علاء الدین احمد خاں کے نام

مجھے اپنے ایمان کی قسم ، میں نے اپنی
 نظم و نشر کی داد باندازہ بایست پائی نہیں۔
 آپ ہی کہا اور آپ ہی سمجھا ۔ قلندری و
 آزادگی و اپتار و کرم کے جو دواعی میرے
 خالق نے مجھ میں بھر دیے ہیں ، بہ قدر ہزار
 ایک ٹھہور¹⁸ میں نہ آئے¹⁹ ۔ نہ وہ طاقت جسمانی
 کہ ایک لاٹھی ہاتھ میں لوں اور اُس میں
 شطرنجی اور ایک ٹین کا لوٹا مع سوت کی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	رستی	रस्ती	स्त्रियो. रस्ती
	پیادہ پا	प्यादा पा	पैदल
3	شیراز	शीराज़, ईरान का एक शहर	
4	مصر	मिस्र	
5	نجف	नजफ़, ईराक़ का एक शहर	
	دستگاه	दस्तगाह	स्त्रियो. शक्ति
	بھوکا ننگا	भूका नंगा	विशे. भूखा नंगा, गरीब
	در بدر	दर बदर	दरवाज़-दरवाज़े

‘अबजद’ अरबी अक्षरों की उस व्यवस्था का नाम है, जब 28 अक्षर आठ सांकेतिक शब्दों के क्रम में प्रयोग में लाये जाते हैं। इस व्यवस्था में प्रत्येक अक्षर का एक संख्या-मान है और इस मान के जोड़ का उपयोग ‘तारीख़’ के लिए किया जाता है। आठ शब्दों का क्रम और उनका संख्या-मान नीचे दर्शाये गये हैं :

ا ب ج د	ه ز	ح ط ی	ک ل م ن
ا = 1	ه = 5	ح = 8	ک = 20
ب = 2	و = 6	ط = 9	ل = 30
ج = 3	ز = 7	ی = 10	م = 40
د = 4			ن = 50
س ق ر ش	ص ض ط ظ	ع ف ی	ک گ خ
س = 60	ق = 100	ع = 500	ک = 800
ع = 70	ر = 200	غ = 600	ط = 900
ف = 80	ش = 300	ز = 700	خ = 1000
ص = 90	ت = 400		

رسی کے لٹکاؤں اور پیادہ پا چل دوں ۔
 کبھی شہراز³ جا نکلا ۔ کبھی مضر⁴ میں جا ٹھہرا ۔ کبھی
 نجف⁵ جا پہنچا ۔ نہ وہ دستگاہ کہ ایک عالم
 کا میزبان بن جاؤں ۔ اگر تمام عالم میں نہ
 ہو سکے نہ سہی ، جس شہر میں رہوں ، اُس شہر
 میں تو بھوکا ننگا نظر نہ آئے ۔ وہ جو کسی کو
 بھپک مانگتے نہ دیکھ سکے اور خود در بدر بھپک
 مانگے ، وہ میں ہوں ۔

(مرزا غالب)

मीर अम्मन : बागो-बहार

‘बागो-बहार’ बादशाह आज़ाद बख्त और चार दरवेशों के चमत्कारों की दास्तान है। मीर अम्मन विरचित ‘बागो-बहार’ हर व्यक्ति के मन को छू लेने वाली सरल, सुबोध एवं सुरुचिपूर्ण कृति है और सही अर्थों में यह उर्दू गद्य के इतिहास में क्लासिक की श्रेणी में आती है।

मीर अम्मन के आरंभिक जीवन के बारे में, इस तथ्य के अलावा बहुत कम जानकारी है कि वे दिल्ली के मूल निवासी थे और उनके पूर्वज मुगल दरबारों में सम्मानित पदों पर काम करते थे। मुगल साम्राज्य के पतन के बाद उनके घर-द्वार और संपत्ति आक्रमणकारियों द्वारा ज़ब्त कर लिये गये। तदुपरांत वे पटना चले गये और फिर वहाँ से कलकत्ता रवाना हुए। वहाँ कई वर्ष ट्यूटर के रूप में काम करने के बाद डॉ. जॉन गिलक्रिस्ट से उनका परिचय हुआ, जिन्होंने फोर्ट विलियम कॉलेज के लिए पाठ्य पुस्तकें तैयार करने के लिए उन्हें अनुबंधित किया। इस कॉलेज की स्थापना ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से 1800 ई. में हुई थी। यहीं रह कर मीर अम्मन ने ‘बागो-बहार’ और ‘गंज-ए-खूबी’ की रचना की। ‘गंज-ए-खूबी’ मुल्ला वाइज़ काशिफ़ी की नैतिकता के विषय पर लिखी गयी फ़ारसी किताब ‘अखलाक़-ए-मुहसिनी’ का रूपांतर है। मीर अम्मन, ‘लुत्फ़’ उपनाम से शाइरी भी करते थे, लेकिन उनका ‘दीवान’ शायद विलुप्त हो गया है।

‘बागो-बहार’ जिस मूल ग्रंथ पर आधारित है, वह ‘किस्सा-ए- चहार दरवेश’ नाम से फ़ारसी में बहुत मशहूर है। इस किताब के लेखक और रचनाकाल का पता नहीं है लेकिन लोक प्रसिद्धि के आधार पर ग़लत रूप से इसे महान् भारतीय फ़ारसी कवि अमीर खुसरो (मृत्यु 1315) की रचना बताया जाता है। जैसी कि रिवायत है, अमीर खुसरो ने यह कहानी अपने मित्र और धार्मिक शिक्षक ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया को एक बीमारी की अवस्था के दौरान मनोरंजन के बतौर सुनायी। ठीक होने के बाद उन्होंने दुआ दी, “जो इस कहानी को सुनेगा, कभी बीमार नहीं पड़ेगा।”

फ़ारसी किताब का सबसे पहला उर्दू अनुवाद (अनुमानतः 1775 से पहले) ईस्ट इंडिया कंपनी के एक मुंशी मीर मुहम्मद हुसैन अता खाँ 'तहसीन' ने 'नौ तर्ज-ए-मुरस्ता' शीर्षक से किया। लेकिन क्योंकि 'तहसीन' का अनुवाद कृत्रिम अरबी व फ़ारसी प्रयोगों से बोझिल था और बड़ी अलंकृत शैली में किया गया था; गिलक्रिस्ट ने मीर अम्मन से आग्रह किया कि वे जनभाषा में इसका दूसरा अनुवाद तैयार करें। यह दूसरा अनुवाद, जोकि प्रायः रूपांतर है, 1802 ई. में पूरा हुआ। अनुवाद पर मूल फ़ारसी शीर्षक ही दिया गया है, लेकिन तिथि-गणना पर आधारित 'बागो-बहार' शीर्षक से यह अनुवाद विख्यात है। 1803 ई. (कलकत्ता) में इस अनुवाद के पहले मुद्रण से लेकर अब तक, भारत और यूरोप में इसके अनगिनत संस्करण छप चुके हैं।

एक ऐसे दौर में, जब फ़ारसी दरबार और संस्कृति की भाषा थी, जब लेखक चमत्कार और कारीगरी में एक दूसरे से होड़ लगाया करते थे और शब्द-चातुरी की बड़ी सराहना की जाती थी, जब गद्य उपेक्षित था और शाइरी को उस पर वरीयता प्राप्त थी, गिलक्रिस्ट तथा फ़ोर्ट विलियम कॉलेज के उनके सहयोगियों को उर्दू में गद्य के नये युग की शुरुआत का श्रेय जाता है। गिलक्रिस्ट के 1804 ई. में भारत छोड़ने के बाद यह मुहिम थम-सी गयी लेकिन इसके मूल में निहित विचार नष्ट नहीं हुआ और उन्नीसवीं शताब्दी के लगभग मध्य में उर्दू साहित्य के अलीगढ़ स्कूल के साथ इसका पुनः उभार हुआ।

फ़ोर्ट विलियम कॉलेज में तैयार की गयी चार प्रमुख किताबों में 'बागो-बहार' सर्वोत्कृष्ट है। यह देश भर में लोकप्रिय है और आज भी उर्दू की एक पाठ्य पुस्तक के रूप में लगातार इसका उपयोग किया जाता है। हालांकि पिछली डेढ़-दो शताब्दियों में भाषा अनेक परिवर्तनों से गुज़री है, लेकिन 'बागो-बहार' (उपवन और वसंत), जैसा कि इसके लेखक ने कहा होगा, "आज भी ताज़ा और सर सबज़ है।"

मीर अम्मन सही अर्थों में उर्दू गद्य के पहले लेखक हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार जो मुक़ाम उर्दू शाइरी में मीर तक़ी 'मीर' (मृत्यु 1810 ई.) का है, वही उर्दू गद्य में मीर अम्मन का। वे एक विलक्षण किस्सागो हैं। उनकी कला बहुत सीधी और सरल है। इसमें जो पेचीदगियाँ आती हैं, वे कथानक (प्लॉट) के कारण हैं, आख्यान (नैरेटिव) के कारण नहीं; आख्यान द्रुत गति से आगे बढ़ता जाता है, चाहे कहानी कहने वाला एक स्थिति विशेष के वर्णन में भावविभोर हो

जाता हो या एक प्रेमी की व्यथा पर शोक व्यक्त करता हो। प्रथाओं और लोकाचारों के वास्तविक ब्योरो के साथ अतिप्राकृतिक तत्त्वों के लगातार मिश्रण और इसके साथ-साथ एक अप्रत्याशित अंत के द्वारा पाठक या श्रोता को कथारस की अनुभूति होती है। हर खास और आम के लिए लिखे गये इस आख्यान का गद्य बहुत साफ-सुथरा और ओजपूर्ण है। हर मनःस्थिति में अच्छा लगता है, और आज भी उतना ही सजीव, उदात्त एवं बोलचाल के नज़दीक है। सामान्यतया मीर अम्मन घरेलू और दैनिक बोलचाल की भाषा के पक्षधर थे, ऐसी भाषा कि 'अगर शब्दों को काटा जाये तो मानो खून बहने लगे।'

'बागो-बहार' के अंग्रेज़ी में कम से कम दस अनुवाद हो चुके हैं, जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण अनुवाद ये हैं—एल.एफ.स्मिथ, कलकत्ता, 1813; ई.बी.ईस्टविक, हर्टफोर्ट, 1852य डंकन फोर्ब्स, लंदन, 1857; और (सार संक्षेप) एडिथ एफ. पेरी, लंदन, 1890 ई.। फ्रेंच भाषा में इसके दो काव्यानुवाद भी हुए हैं जिनमें से एक गार्सा द तासी ने 1878 ई. (पेरिस) से प्रकाशित किया।

यहाँ सम्मिलित अंश का चयन दूसरे दरवेश के चमत्कारों से किया गया है। यह अति प्राकृतिक तत्त्वों से भरपूर है और इसमें एक शाहज़ादे के एक परी से अभागे प्रेम का वर्णन किया गया है।

UNIT XVI

बागो-बहार

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	گنبد	गुम्बद	पुरुषो. गुम्बद
	روشن دان	रौशनदान	पुरुषो. झरोखा
	اچنبھے (کا)	अचम्भे (का)	विशे. अचम्भे (का)
	نظر پڑنا	नज़र पड़ना	अ.क्रि. दिखाई देना
	گردن اٹھانا	गर्दन उठाना	स.क्रि. गर्दन उठाना
8	/عقل و ہوش بجانہ رہنا/ : “बेहोश हो जाना”		

باغ و بہار

ایک روز اُس گنبد کے نیچے روشن دان
 سے ایک اچنبھے کا پھول نظر پڑا کہ دیکھتے دیکھتے
 بڑا ہوتا جاتا تھا۔ میں نے چاہا کہ ہاتھ سے پکڑ لوں۔
 جوں میں ہاتھ لمبا کرتا تھا وہ اڑنچا ہوتا جاتا تھا۔
 میں حیران ہو کر اُسے تک رہا تھا۔ ایک آواز
 قہقہے کی میرے کان میں آئی، میں نے اُس کے
 دیکھنے کو گردن اٹھائی۔ دیکھا تو ایک چاند کا سا مکھڑا
 نکل رہا ہے۔ اُس کے دیکھتے ہی میرے عقل و ہوش
 بجا نہ رہے، پھر خود کو سنبھال کر دیکھا تو ایک

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	تخت	तख्त	पुरुषो. स्टेज, मंच
	پری زاد	परीजाद	स्त्रियो. खूबसूरत लड़की
	پری	परी	स्त्रियो. परी
	جواہر	जवाहिर	पुरुषो. हीरे मोती
			बहु.
	تاج	ताज	पुरुषो. ताज
	یا قوت	याकूत	पुरुषो. याकूत
	پیالہ	प्याला	पुरुषो. प्याला
	بلندی	बलन्दी	स्त्रियो. उंचाई
	بُرج	बुर्ज	पुरुषो. बुर्ज
	جام	जाम	पुरुषो. शराब का प्याला
	بے وفا	बेवफा	विशे. बेवफा

13 / ایک دم میں / : “एक क्षण में, तुरन्त”

تختِ پری زادوں کے کندھے پر کھڑا ہے اور ایک پری جواہر کا تاج پہنے ، ہاتھ میں یاقوت کا پیالہ لیے بیٹھی ہے۔ وہ تختِ بلندی سے آہستہ آہستہ نیچے اتر کر اُس بُرج میں آیا۔ تب پری نے مجھے بلایا اور اپنے نزدیک بٹھایا۔ باتیں کرنے لگی۔ ایک جامِ شراب کا پلایا اور کہا : ” آدمی بے وفا ہوتا ہے ، لیکن ہمارا دل تجھے چاہتا ہے ۔“ ایک دم میں ¹³ ایسی ایسی پیار کی باتیں کیں کہ زندگی کا مزا پایا اور یہ سمجھا ، آج تو دنیا میں آیا ہے ۔

اس مزے میں ہم دونوں بیٹھے تھے کہ چار پروں نے آسمان سے اتر کر اُس کے کان میں کچھ کہا۔ سنتے ہی اُس کا چہرہ بدل گیا اور مجھ سے بولی : ” اے پیارے ! دل تو یہ چاہتا تھا کہ کوئی دم تیرے ساتھ بیٹھ کر دل بہلاؤں اور اسی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
1	/آسمان/	“आकाश”	उर्दू शायरी की परंपरा में आसमान को सारी तबाहियों और कठिनाइयों के कारण के रूप में लिया जाता है।
	حواس	हवास	पुरुषो. हास्सा (इंद्रिय) का बहु. बहुवचन
	ملاقات	मुलाकात	स्त्रियो. मुलाकात
4	/مجھے جیتا پاؤ گی/	“मुझे जीता हुआ पाओगी”	
	پچھتانا	पछताना	अ.क्रि. पछताना, अफ़सोस करना
	ٹھکانا	ठिकाना	पुरुषो. ठिकाना, पता, निवास
	نام و نشان	नामो निशान	पुरुषो. पता, शा. नाम व चिन्ह
8	/دور پار/	“बहुत दूर”	
	کوہ قاف	कोहे काफ़	पुरुषो. काफ़ का पहाड़
	اُداسی	उदासी	स्त्रियो. उदासी
11	/دنیا آنکھوں... ہونا/	“दुनिया अंधेरी हो गयी”	

طرح ہمیشہ آؤں یا تجھے اپنے ساتھ لے جاؤں ،
 پر یہ آسمان¹ دونوں کو ایک جگہ آرام سے رہنے
 نہیں دیتا : ” یہ سن کر میرے حواس جاتے رہے۔ میں
 نے کہا : ” اب پھر کب ملاقات ہوگی۔ اگر جلد آؤ
 گی، تو مجھے جپتا پاؤ گی، ” نہیں تو پچھتاؤ گی۔ یا اپنا
 ٹھکانا اور نام و نشان بتاؤ کہ میں ہی تمہارے
 پاس پہنچوں : ” یہ سن کر بولی : ” دُور پار ! اگر زندگی
 ہے تو پھر ملاقات ہوگی۔ میں جنوں کے بادشاہ کی
 بیٹی ہوں اور کوہِ قاف میں رہتی ہوں : ” یہ کہہ کر
 تخت اٹھایا، وہ جس طرح اُترا تھا، اسی طرح بلند
 ہونے لگا۔

اس کے بعد عجب طرح کی اداسی دل پر
 چھا گئی، عقل و ہوش رخصت ہوئے۔ دُنیا آنکھوں
 میں اندھیر ہو گئی۔¹¹

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	خرابی	खराबी	स्त्रियो. खराबी
	دائی	दाई	स्त्रियो. दाई, नर्स
	(سے) خبردار ہونا	(से) खबरदार होना	अ.क्रि. (से) होशियार होना
4	ڈرتے ڈرتے /	“डरते डरते”	
	بادشاہ زادہ	बादशाह ज़ादा	पुरुषो. राजकुमार
	حالت	हालत	स्त्रियो. दशा
	بے اختیار	बेइख्तियार	क्रि.वि. सहसा, अचानक
	دن بدن	दिन ब दिन	दिन प्रति दिन
	دیوانگی	दीवानगी	स्त्रियो. पागलपन
	بدن	बदन	पुरुषो. शरीर
	کامل	कामिल	विशे. पूर्ण
	غلام	.गुलाम	पुरुषो. नौकर, दास

اس خرابی سے دائی اور اُستاد خبردار ہوئے۔
 ڈرتے ڈرتے بادشاہ کے پاس گئے اور عرض کی کہ
 بادشاہ زادے کا یہ حال ہے۔ میری بے قراری دیکھ
 کر بادشاہ کی حالت بھی خراب ہو گئی۔ بے اختیار گلے
 سے لگایا اور علاج کا حکم کیا۔ مگر کسی کی تدبیر کام
 نہ آئی۔ دن بدن دپوانگی کا زور ہوا اور میرا بدن
 کم زور ہو چلا۔ اس حالت میں تین سال گزرے۔
 پچوتھے برس ایک سوداگر سیر و سفر کرتا ہوا آیا اور
 دربار میں ملازمت حاصل کی۔

بادشاہ نے اُس سے پوچھا: "تم نے بہت
 ملک دیکھے۔ کہیں کوئی حکیم کامل بھی نظر پڑا یا کسی
 سے اُس کا ذکر سنا۔"

اُس نے عرض کیا: "مُحْضَر! غلام نے بہت
 سیر کی۔ لیکن ہندستان میں دریا کے پنج ایک پہاڑی

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	जोगी	जोगी	पुरुषो. जोगी, योगी
	مرض	मर्ज	पुरुषो. बीमारी
	صلاح	सलाह	स्त्रियो. राय, विचार
4	/ ہاتھ راس آنا / : “फायदा होना / लाभ होना”		
	منزل	मंज़िल	स्त्रियो. मंज़िल, गंतव्य
	مریض	मरीज़	विशे. रोगी
	آفتاب	आफ़ताब	पुरुषो. सूरज

ہے، وہاں ایک جوگی رہتا ہے۔ اُس کی دوا پیتے ہی اثر ہوتا ہے اور مرض بالکل جاتا رہتا ہے۔ اگر حکم ہو تو شہزادے کو اُس کے پاس لے جائیں اور اُس کو دکھائیں۔“

بادشاہ کو اُس کی صلاح پسند آئی اور خوش ہو کر فرمایا: ”بہت بہتر۔ شاید اُس کا ہاتھ راس آئے اور میرے بیٹے کا مرض جائے۔“ اُس سوداگر کو میرے ساتھ بھیجا۔

منزل منزل چلتے چلتے اُس ٹھکانے پر جا پہنچے۔ مگر اُس پری کی یاد دل سے نہ بھولتی تھی۔ جب دو تین ہپنے گزرے، اُس پہاڑی پر تقریباً چار ہزار مریض جمع ہوئے۔ آخر وہ دن آیا۔ صبح کو جوگی آفتاب کی طرح نکلا اور دریا میں نہایا۔ اُس کے چہرے سے یہ معلوم ہوتا تھا کہ ساری دنیا

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	قدر	क़दर	स्त्रियो. मूल्य, योग्य, महानता, अहमियत
	نسخہ	नुस्खा	पुरुषो. नुस्खा, प्रति
	نظریں چار ہونا	नज़रें चार होना	एक दूसरे को देखना
	ہمراہ ہونا	हमराह होना	अ.क्रि. साथ होना
	(پر) عمل کرنا	(पर) अमल करना	स.क्रि. (पर) अमल करना
	قوت	.कुव्वत	स्त्रियो. शक्ति
	طاق	ताक़	पुरुषो. आला, ताखा
	علم تسخیر	इल्मे तस्खीर	पुरुषो. जादू, वश में करने की विद्या

اُس کے نزدیک کچھ قدر نہیں رکھتی۔ ایک ایک کی طرف دیکھتا اور نُسخہ دیتا ہوا میرے نزدیک آہنچا۔ جب میری اور اُس کی نظریں چار ہوئیں، کھڑا رہ گیا، غور کرنے لگا اور مجھ سے کہنے لگا: "ہمارے ساتھ آؤ" میں ہمراہ ہو گیا۔ مجھے باغ کے اندر لے گیا۔ فرمایا کہ تم یہاں رہا کرو۔ جب ایک مہینہ گزرا، تو میرے پاس آیا، مجھے کچھ خوش پایا، تب مسکرا کر فرمایا کہ اس باغ کی سیر کیا کرو۔ یہ کہہ کر وہ چلا گیا۔ میں نے اُس کے کہنے پر عمل کیا۔ ہر روز بدن میں قوت اور دل کو خوشی معلوم ہونے لگی، لیکن اُس پری کی صورت نظروں کے آگے پھرتی تھی۔ ایک طاق میں ایک کتاب نظر آئی، اُتار کر دیکھا تو سارے علم اُس میں جمع تھے۔ ہر وقت اُس کو پڑھنے لگا۔ علم تسخیر میں کمال حاصل کیا۔

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	عادت	आदत	स्त्रियो. आदत
	جدا کرنا	जुदा करना	स.क्रि. अलग करना
	لٹ	लट	स्त्रियो. बालों का गुच्छा
	پٹی	पेटी	स्त्रियो. बक्स
	اسم اعظم	इस्मे आजम	पुरुषो. महान नाम
	جادو	जादू	पुरुषो. जादू

اس میں برس گزر گیا۔ پھر وہی خوشی کا دن آیا۔ جوگی باہر نکلا۔ میں نے سلام کیا۔ اُس نے کہا: ”ساتھ چلو۔“ میں بھی ساتھ ہو گیا۔ وہ اپنی عادت کے مطابق دریا تک گیا اور اُشان پوہا کی۔

پھر چچکا اُٹھ باغ کے کونے میں آیا۔ ایک درخت سے گردن میں پھانسی لگا کر رہ گیا۔ میں نے پاس جا کر دیکھا تو مر گیا تھا۔ یہ اچنبھا دیکھ کر نہایت افسوس ہوا۔ سوچا، اُسے گاڑ دوں، جوں درخت سے جدا کرنے لگا، دو کنبیاں اُس کی لٹوں میں سے گر پڑیں۔ میں نے اُن کو اُٹھایا۔ دو کمرؤں کے تالے اُن کنبیوں سے کھلے۔ دیکھا تو زمین سے چھت تک جواہر بھرا ہے اور ایک سونے کی پیٹی ایک طرف رکھی ہے۔ اُس کو جو کھولا تو ایک کتاب دیکھی کہ اُس میں اسم اعظم اور جن و پرسی کے جادو لکھے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	دولت	दौलत	स्त्रियो. धन
	ہاتھ لگنا	हाथ लगना	अ.क्रि. पाना
3	/ چلے بیٹھنا/ : “चालीस दिनों तक बैठना”; /चिल्ला/, (बुरी आत्माओं को भगाने के लिए)		
	لشکر	लश्कर	पुरुषो. लश्कर, फौज
	نمودار ہونا	नमूदार होना	अ.क्रि. प्रकट होना
	عزیز	अजीज़	विशे. प्रिय
	ناحق	नाहक	क्रि.वि. अनावश्यक
	دھوم مچانا	धूम मचाना	स.क्रि. धूम मचाना
	عاجز	आजिज़	विशे. बेवसी में, कमजोर
	مدت	मुद्दत	स्त्रियो. समय
	مشاق	मुश्ताक	विशे. इच्छुक, जिज्ञासु

ہوئے تھے۔

ایسی دولت کے ہاتھ لگنے سے نہایت خوشی حاصل ہوئی اور ان پر عمل کرنا شروع کیا۔

میں نے باغ کو پھر سے بنوایا اور جنوں کی تسنیر کے لیے چلتے بیٹھا³۔ جب چالیس روز پہلورے ہوئے، تب آدھی رات کو ایسی آندھی آئی کہ بڑی بڑی عمارتیں گر پڑیں اور درخت اکھڑ کر کہیں جا پڑے اور پری زادوں کا لشکر نمودار ہوا۔ ایک تخت ہوا سے اُترا۔ اُس پر ایک شخص جواہر کا تاج پہنے ہوئے بیٹھا تھا۔ میں نے دیکھتے ہی سلام کیا۔ کہا: "اے عزیز! یہ تو نے ناحق کیا دھوم مچائی ہے؟" میں نے عرض کیا: "یہ عاجز بہت مدت سے تمہاری بیٹی کے دیکھنے کا مُشتاق ہے اور اسی لیے کیا کیا دکھ اٹھائے ہیں۔ اب زندگی سے تنگ آیا

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	امیدوار	उम्मीदवार	विशे. उम्मीदवार, आशावान
	دیدار	दीदार	पुरुषो. दर्शन
	بخشنا	बख्शना	स.क्रि. क्षमा करना
	خاکی	खाकी	विशे. मिट्टी से बना
	آتش	आतिशी	विशे. आग से बना
	موافقت	मुवाफ़क़त	स्त्रियो. मेल, दोस्ती, बराबरी
	بے ادبی	बेअदबी	स्त्रियो. अभद्रता
	سنگھار	सिंघार	पुरुषो. श्रृंगार
	عالم	आलम	पुरुषो. दशा, संसार
	قول نباہنا	कौल निबाहना	स.क्रि. वचन पूरा करना

ہوں۔ اس لیے یہ کام کیا ہے۔ اُمیدوار ہوں کہ مجھ پر مہربانی کرو اور اُس کے دہار سے زندگی اور آرام بخشو۔“

میری بات سن کر بولا کہ آدمی خاکی اور ہم آتش، ان دونوں میں موافقت مشکل ہے۔ میں نے قسم کھائی کہ میں اُس کے دیکھنے کا مشتاق ہوں اور کچھ مطلب نہیں۔ پھر اُس نے کہا: ”اگر تو نے بے ادبی کی تو خوف جان کا ہے۔ میں نے پھر قسم کھائی کہ جس میں بُرائی ہو، ویسا کام ہرگز نہ کروں گا۔ یہ باتیں ہو رہی تھیں کہ وہ پری سنگھار کیے آ پہنچی اور بادشاہ کا تخت وہاں سے چلا گیا۔

خوشی کے عالم میں ہم اس باغ میں رہنے لگے۔ مارے خوف کے بے ادبی نہ کرتا۔ صرف دیکھا کرتا۔ وہ پری میرے قول کے نباہنے پر

क्र.	اردو	देवनागरी	अर्थ
1	بات کا سچا / : “सच्चा, ईमानदार” (سے) خبردار رہنا	(से) खबरदार रहना	अ.क्रि. (से) होशियार रहना
	غافل	गाफिल	विशे. लापरवाह, बेपरवाह
	شیطان	शैतान	पुरुषो. शैतान
	ورغلا تا	वर्गलाना	स.क्रि. गुमराह करना
	بغل	बगल	स्त्रियो. बगल
8	ہے / : संबोधन सूचक ظالم	जालिम	विशे. निर्दयी

خیران رہتی اور کہتی: ”تم بھی اپنی بات کے بڑے
 پتے¹ ہو۔ لیکن ایک نصیحت میں بھی دوستی کی راہ
 سے کرتی ہوں۔ اپنی کتاب سے خبردار رہو کہ
 جن کسی نہ کسی دن تمہیں غافل پا کر پچرالے جائیں
 گے۔ میں نے کہا: ”اسے میں اپنی جان کے برابر
 رکھتا ہوں۔“

اتفاقاً ایک روز رات کو شیطان نے ورغلايا۔
 اُسے پچھاتی سے لگایا۔ اتنے میں یہ آواز آئی: ”یہ
 کتاب مجھ کو دے کہ اس میں انیم اعظم ہے۔
 بے ادبی نہ کر۔“ کچھ ہوش نہ رہا۔ کتاب بغل
 سے نکال کر بغیر جانے پہچانے دے دی۔ یہ دیکھ
 کر وہ پرسی بولی: ”ہے ظالم! آخر چوکا! اور نصیحت
 بھولا۔“ یہ کہہ کر بے ہوش ہو گئی اور میں نے
 اُس کے سر ہانے ایک دیو دیکھا کہ کتاب لیے

क्र.	उर्दू	देवनागरी	अर्थ
	چھیننا	छीनना	स.क्रि. छीनना, ज़बरदस्ती लेना
	عیش	ऐश	पुरुषो. आनंद

کھڑا ہے۔ چاہا کہ پکڑ کر خوب ماروں اور کتاب
 پھین لوں۔ اتنے میں اُس کے ہاتھ سے کتاب
 دوسرا لے بھاگا۔ میں نے جو جادو یاد کیے تھے،
 پڑھنے شروع کیے۔ وہ جن جو کھڑا تھا، بیل بن
 گیا، لیکن افسوس پری ذرا بھی ہوش میں نہ آئی
 اور وہی حالت بے ہوشی کی رہی۔ تب میرا دل
 گھرایا۔ سارا عیش تلخ ہو گیا۔ اُس روز سے آدمیوں
 سے نفرت ہوئی اور اس باغ کے گوشے میں پڑا
 رہتا ہوں۔

(میرامن دہلوی)

उर्दू: 'रीडिंग्ज़ इन लिट्रैरी उर्दू प्रोज़' पर सम्मतियाँ

“..... एक बहुत अच्छा और बहुत उपयोगी कार्य।”

— डॉ. जाकिर हुसैन, भारत के पूर्व राष्ट्रपति

“यह उर्दू रचनात्मक गद्य के संचयन में एक खूबसूरत इज़ाफ़ा है।”

— प्रो. आले अहमद सुरूर
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय

“यह किताब उर्दू शिक्षण सामग्री की हमारी व्यवस्था में एक बड़ी ज़रूरत को पूरा करती है। सामग्री का संचयन वाकई बहुत उत्तम, उचित रूप से श्रेणीबद्ध और सुव्याख्यायित है।

— प्रो. एम.ए.आर. वार्कर, मॅकगिल विश्वविद्यालय

“मैं स्वच्छ, सुविचारित प्रारूप और स्पष्ट, खुली-खुली स्क्रिप्ट से प्रसन्न हूँ, जिसे बग़ैर किसी कठिनाई के छात्रगण सुविधापूर्वक पढ़ सकते हैं।”

— प्रो. पॉल स्टेन स्लो, मिनीसोटा विश्वविद्यालय

“उर्दू पढ़ने और पढ़ाने के लिए यह खूबसूरत संस्करण बहुत महत्वपूर्ण और स्वागत योग्य है। उर्दू छपाई की स्वच्छता और सुंदरता को विद्यार्थियों द्वारा सराहा जायेगा।”

— प्रो. ब्रूस आर. प्रे, केलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय

